भूतनाथ

तीसरा भाग

बाबू देवकीनन्दन खत्री

भूतनाथ

तीसरा भाग

बाबू देवकीनन्दन खत्री

bpb
भारत पुस्तक भण्डार

www.bharatpustak.com
bharatpustak.bhandar@gmail.com

तीसरा भाग

1

काशी शहर के बाहर उत्तर तरफ लाट भैरव का एक प्रसिद्ध स्थान है, पास ही में एक पक्का तालाब है और स्थान के इर्द-गिर्द कई पक्के कुएँ भी हैं। वही पक्का तालाब कपालमोचन तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। काशी खंड में वहाँ स्नान करने का बड़ा ही महात्म्य लिखा है। इस तालाब के कोने पर **(कुछ हट के)** एक कुआँ है जिससकी जगत बहुत ऊँची है और ऊपर बैठने का स्थान भी बहुत प्रशस्त है तथा सीढ़ी के दोनों तरफ छोटे-छोटे दो दालान भी बने हैं जिनसे मुसाफिरों और यात्रियों का बहुत उपकार होता है तथा काशी के मनचले और आशिक-मिजाज लोगों को सैर-सपाटे के समय **(यदि बरसात का मौसम हो तो)** रोटी-बाटी बनाने में भी अच्छी सहायता मिलती है।

इस तालाब या कुएँ के पास में सिवाय जंगल-मैदान के किसी गृहस्थ का कोई कच्चा या पक्का मकान नहीं। अगर यहाँ दस-पाँच आदमी आपस में लड़-भिड़ जाएँ तो पास के किसी अड़ोसी-पड़ोसी की सहायता भी नहीं मिल सकती।

इसी कुएँ पर संध्या होने से कुछ पहिले हम काशी के पाँच-सात खुशमिजाज आदमियों को बैठे हँसी-दिल्लगी करते तथा भंग-बूटी के इंतजाम में व्यस्त देख रहे हैं। कोई भंग धो रहा है, कोई पसीने का चिकना पत्थर धोकर जगह साफ करने की धुन में है, कोई टिकिया सुलगा रहा है और कोई गौरैया **(मिट्टी के हुक्के)** में पानी भर रहा है, इत्यादि तरह-तरह के काम में सब लगे हुए हैं और साथ-ही-साथ अपनी बनारसी अधकचरी तथा अक्खड़ भाषा में हँसी-दिल्लगी भी करते जाते हैं। उनकी बातें भी सुनने के ही लायक हैं। यद्यपि इससे किसी तरह का उपकार तो नहीं हो सकता परन्तु मन-बहलाव जरूर है और इस प्रकार की जानकारी भी हो सकती है अस्तु सुनिए तो सही।

एक : **(जो भंग धो रहा था)** यार, देखो सारे दुकानदार ने मुफ्त ही चार पैसे ले लिए, हमें तो यह भंग दो पैसे की भी जमा नहीं दिखाई देती। यह देखो निचोड़ने पर मुट्ठी-भर के भी नहीं होती!

दूसरा : **(उचक के देख के)** हाँ यार, यह तो कुछ भी नहीं है। तू हूँ निरे गौखे ही रह्यो, पहिले काहे नहीं कहा, सारे की टोपी उतार लेते और ऐसे गड्डो देते कि जनम-भर याद रखता।

तीसरा : ऐसे ही तो जमा मार के सरवा मुटा गया है। तोंद कैसी निकली हुई है सारे की!

चौथा : अच्छा अब कल समझेंगे चोंधर से।

पाँचवाँ : कल आती दफे धीरे-से उसकी दौरी ही उलट देंगे, ज्यादे बोलेगा तो लड़ जाएँगे और गुल करेंगे कि चार आना पैसा तो ले लिहिस है मगर भाँग देता ही नहीं।

छठा : **(जो भला आदमी और कुछ पैसे वाला ही मालूम होता है क्योंकि उसके गले में सोने की सिकरी पड़ी हुई थी)** नहीं-नहीं ऐसा न करना, कोई जान-पहिचान का देख लेगा और जाकर कह देगा तो मुफ्त की झाड़। सुननी पड़ेगी।

दूसरा : अरे रहो बाबू साहब, हम लोगन के साथ आया करो तो ऐसी भलमानसी घर छोड़ आया करो, हम लोग ऐसे दबा करें तो दिन-दुपहरिया लुट जाएँ!

(लेखक : कंगाल बाँकड़े भी खूब ही लुटा करते होंगे!)

सातवाँ : **(सुलग गई हुई टिकिया हाथ में हिलाते हुए)** अरे यारो, ये बाबू साहब ठहरे महाजन आदमी, भला ई लोग लड़ना-भिड़ना का **(क्या)** जानें, चाहे कोई धोती उतार के ले जाय। ई **(यह)** हम ही लोगन **(लोगों)** के काम हो कि कोई

आँख दिखावे तो कान उपार **(उखाड़)** लेई। हमी लोगन की बदौलत बाबू साहब बचत भी जात हैं, नहीं तो गूदड़ सफरदा सरवा ऐसा रंग बाँधे लगा था कि बस कुछ पूछा ही नहीं, ओ रोज **(उस दिन)** चिथड़ू न होते तो गले की सिकरिए उतार लिए होता।

छठा : **(अर्थात् बाबू साहब)** हाँ यह बात तो ठीक है और जी में तो उसी रोज आ गया था कि अब आज से इस रास्ते को छोड़ दें और रंडी-मुंडी का नाम भी न लें बल्कि कसम खाने लिए भी तैयार हो गया था मगर क्या करें, 'नागर' की मुहब्बत ने ऐसा करने नहीं दिया, वह बेशक् मुझे प्यार करती है और मुझ पर आशिक है।

सातवाँ : **(मुसकुराते हुए)** बल्कि तुम पर मरती है! एक दिन हमसे कहती थी कि बाबू साहब हमें छोड़ देंगे तो हम जहर खा लेंगे!!

इसी तरह ये लोग बेतुकी और अक्खड़पन लिए हुए मिश्रित भाषा में बातचीत कर रहे थे कि यकायक विचित्र ढंग का एक नया मुसाफिर यहाँ आ पहुँचा और उसने कुएँ के ऊपर चढ़ते हुए इस सातवें आदमी की आखिरी बात बखूबी सुन ली। इस आदमी की उम्र का पता लगाना जरा कठिन है, तथापि बाबू साहब की निगाह में वह पैंतीस वर्ष का मालूम पड़ता था। कद जरा लंबा और चेहरा रोआबदार था, कपड़े की तरफ ध्यान देकर कोई नहीं कह सकता था कि यह किस देश का रहने वाला है। भीतर चाहे जैसी पोशाक् हो मगर ऊपर एक स्याह अबा डाले हुए था और एक छोटी-सी गठरी हाथ में थी।

पहिले से जो लोग उस कुएँ पर बैठे हँसी-दिल्लगी कर रहे थे उनके दिल में आया कि इस नये मुसाफिर से कुछ छेड़छाड़ करें और यहाँ से भगा दें क्योंकि वास्तव में काशी के रहने वाले अक्खड़ मिजाज लोगों की आदत ही ऐसी होती है, जहाँ इस मिजाज के चार-पाँच आदमी इकट्ठे होते हैं वहाँ वे लोग अपने आगे किसी को कुछ समझते ही नहीं और दूसरे लोगों से बिना दिल्लगी किये नहीं रहते।

एक : **(नये मुसाफिर से)** कहाँ रहते हो साहब?

मुसाफिर : गयाजी।

दूसरा : यहाँ कब आये?

मुसाफिर : आज ही तो आये हैं।

दूसरा : तभी आप इस कुएँ पर आए हैं, अगर कोई जानकार होता तो यहाँ कभी न आता।

मुसाफिर : सो क्यों?

चौथा : यहाँ शैतान और जिन्न लोग रहते हैं, जो कोई नया मुसाफिर आता है उसे चपत लगाए बिना नहीं रहते।

मुसाफिर : ठीक है, तो तुम लोगों को भी उन्होंने चपत लगाया होगा?

दूसरा : **(चिढ़कर, जोर से)** हम लोगों से वे लोग नहीं बोल सकते क्योंकि हम लोग यहाँ के रहने वाले हैं और उन सभों के दोस्त हैं!

मुसाफिर : बेशक् शैतान के दोस्त शैतान ही होते हैं!

चौथा : क्यों बे, मुँह सम्हाल के नहीं बोलता!

मुसाफिर : अबे-तबे करोगे बच्चा तो ठीक करके रख देंगे! हमें कोई मामूली मुसाफिर न समझना!!

पाँचवाँ : **(ललकार कर)** मार सारे के, बे अढ़ैया चपत।

इतना कहकर पाँचवाँ आदमी उठा और मुक्का तान कर उस मुसाफिर की तरफ झपटा। मारना ही चाहता था कि मुसाफिर ने हाथ पकड़ लिया और ऐसा झटका दिया कि वह कुएँ के नीचे जा गिरा और बहुत चुटीला हो गया। यह कैफियत देखते ही बाबू साहब तो डर के मारे कुएँ के नीचे उतर गए और किसी झाड़ी में जा जाकर छिप रहे मगर बाकी के सब आदमी उस मुसाफिर पर जा टूटे और एक ने अपनी कमर से एक छुरी भी निकाल ली। मगर मुसाफिर ने उन सभों की कुछ भी परवाह न की। बात-की-बात में उसने और तीन आदमियों को कुएँ के नीचे ढकेल दिया और उसके बाद कमर से खंजर निकालकर मुकाबिले को तैयार हो गया। खंजर की चमक देखते ही सभों का मिजाज ठंडा हो गया और मेल-माकफत के ढंग की बातचीत करने लगे, मगर मुसाफिर का गुस्सा कम न हुआ और उसने लात तथा मुक्कों में खूब सभी की मरम्मत की, इसके बाद एक किनारे हटकर खड़ा हो गया और बोला, "कहो अब क्या इरादा है?"

मुसाफिर की हिम्मत और मर्दानगी देखकर सभों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उनको इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि यह अकेला आदमी हम लोगों को इस तरह नीचा दिखा देगा। सभों ने समझा कि यह जरूरी कोई राक्षस या जिन्न है जो आदमी का रूप धर के हम लोगों को छकाने के लिए आया है, अस्तु किसी ने भी उसकी बातों का जवाब नहीं दिया बल्कि डरते हुए अपना सामान और कपड़ा-लत्ता उठा कर भागने के लिए तैयार हो गये मगर मुसाफिर ने उन्हें ऐसा करने से रोका और कहा, "देखो तुम लोगों ने जान-बूझकर मुझसे छेड़खानी की और तकलीफ उठायी अस्तु अब शान्त होकर बैठो और अपना-अपना काम करो। तुम्हारे कई साथियों को सख्त चोट आ गई है सो उसे धोकर पट्टी बाँधो और कुछ देर आराम लेने दो, और हाँ यह तो बताओ कि तुम्हारे वह सुन्दर-सलोने बाबू साहब कहाँ चले गये जिन पर बीबी नागर आशिक हो गई हैं?"

एक : न-मालूम कहाँ चला गया, ऐसा भग्गू आदमी..

दूसरा : जाने दो, अगर भाग गया तो जहन्नुम में जाय, उसी के सबब से तो हम लोग तकलीफ उठाते हैं।

मुसाफिर : नहीं-नहीं, भागो मत, अपने साथी को आने दो बल्कि खोजो कि वह कहाँ चला गया है। यह कोई भलमनसी की बात नहीं है कि उसे इस तरह छोड़कर सब कोई चले जाओ, हम तुम लोगों को भी कभी न जाने देंगे और खास करके तुम्हारे सुन्दर सलोने से तो जरूर ही बातचीत करेंगे।

मुसाफिर की बातों ने उन लोगों को और भी परेशान कर दिया। उसका रोब इन सभों पर ऐसा छा गया था कि उसकी तरफ आँख उठाकर देख नहीं सकते थे और उसे आदमी नहीं बल्कि देवता या राक्षस समझने लग गये थे, अस्तु उसका रोकना इन लोगों को और भी बुरा मालूम हुआ और सभों ने डरते हुए हाथ जोड़ कर कहा, "बस अब कृपा कीजिए और हम लोगों को जाने दीजिए।"

मुसाफिर :नहीं-नहीं, यह कभी न होगा, पहले तुम अपने साथी को तो खोजो..

एक : अब हम उसे कहाँ खोजें?

मुसाफिर : चलो हम भी तुम लोगों के साथ मिलकर उसे खोजें। वह कहीं दूर न गया होगा, इसी जगह किसी झाड़ी में छिपा होगा। तुम लोग डरो मत, अब हमारी तरफ से तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न पहुँचेगी।

यद्यपि मुसाफिर ने उन लोगों को बहुत दिलासा दिया और समझाया मगर उन लोगों का जी ठिकाने न हुआ और डर उनके दिल से न गया बल्कि इस बात का खयाल हुआ कि यह मुसाफिर बाबू साहब को खोजने के बाद जिद्द करता है तो इसमें कोई भेद जरूर है, बेशक् बाबू साहब को खोज कर उन्हें तकलीफ देगा। मगर जो हो उन सभों को खोजना ही

पड़ा।

उधर बाबू साहब उस कुएँ के पास ही एक झाड़ी में छिपे हुए सब देख-सुन रहे थे और डर के मारे उनका तमाम बदन काँप रहा था। जब उन्होंने देखा कि वह राक्षस सभों के लिए हुए उनकी खोज में कुएँ के नीचे नीचे उतरा है तब तो वह एकदम घबड़ा उठे और उनके मुँह से हजार कोशिश करके रोकने पर भी एक चीख की आवाज निकल ही पड़ी। आवाज सुनते ही वह मुसाफिर समझ गया कि इसी झाड़ी के अन्दर बाबू साहब छिपे हुए हैं, झपटकर वहाँ जा पहुँचा और झाड़ी के अन्दर से हाथ पकड़ के बाबू साहब को बाहर निकाला। मालूम होता था कि बाबू साहब को इस समय जड़ैया बुखार चढ़ आया है। उनका तमाम बदन तेजी के साथ काँप रहा था। बाबू साहब जल्दी से मुसाफिर के पैरों पर गिर पड़े और आँसू बहाते हुए बोले, "ईश्वर के लिए मुझे माफ करो, मैं बड़ा ही गरीब हूँ किसी के भले-बुरे से मुझे कुछ सरोकार नही, मैंने आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ा है!"

मुसाफिर : डरो मत, मैंने तुम्हें किसी बुरी नीयत से नहीं ढूँढ़ा है, ये लोग तुम्हें वहाँ जंगल में छोड़कर भागे जाते थे, इसीलिए मैंने सभी को रोक लिया और कहा कि अपने साथी को खोज कर अपने साथ लिए जाओ। अब तुम बेखौफ होकर अपने दोस्तों के साथ अपनी प्यारी नागर के पास चले जाओ, मुझसे बिलकुल मत डरो।

मुसाफिर की बातों से बाबू साहब को कुछ ढाँढस हुई, वे सम्हल कर उठ खड़े हुए और मुसाफिर से कुछ कहा ही चाहते थे कि पास की दूसरी झाड़ी में से एक दूसरा आदमी निकलकर झपटता हुआ उन सभों के पास आ पहुँचा और मुसाफिर की तरफ देख के बोला, "तुम क्यों इस बेचारे सीधे और डरपोक आदमी को तंग कर रहे हो, नहीं जानते कि तुम्हारा गुरु चन्द्रशेखर इसी जगह छिपा हुआ तुम्हारी शैतानी का तमाशा देख रहा है!"

उस आदमी की सूरत-शक्ल का अंदाजा नहीं मिल सकता था क्योंकि उसका तमाम बदन स्याह कपड़े से छिपा हुआ था और चेहरे पर भी स्याह नकाब पड़ी हुई थी, मगर वह मुसाफिर उसकी बात सुन कर बड़े गौर में पड़ गया और आश्चर्य के साथ उसकी तरफ देखने लगा।

मुसाफिर : तुम कौन हो, पहिले अपना परिचय दो तब मैं तुमसे कुछ बात करूँ।

नया आदमी :तुम्हारा मुँह इस योग्य नहीं है कि मुझ से बात करो और परिचय के लिए यही काफी है कि मेरा नाम चन्द्रशेखर है। लेकिन अगर इससे भी विशेष कुछ जानने की इच्छा हो तो मैं और भी कुछ कहने के लिए तैयार हूँ! आह, वह धोखा देने वाली चाँदनी रात! बात की बात में चन्द्रमा बादलों में छिप गया और अँधकार हो जाने के कारण तरह-तरह की भयानक सूरतें दिखाई देने लगीं। उसी समय पहिले एक स्याह रंग का ऊँट दिखाई दिया जिसके सिर पर लंबे-लंबे सींघ बिजली की तरह चमक रहे थे।

मुसाफिर : **(डर के मारे काँपता और पीछे की तरफ हटता हुआ)** बस! बस! मैं समझ गया कि तुम कौन हो!!

चन्द्रशेखर : उसके बाद एक सफेद रंग का हाथी दिखाई दिया जिसके ऊपर नागर और मनोरमा मशाल लिए हुई थीं और जोर-जोर से श्यामलाल को पुकार रही थीं क्योंकि वे चाहती थीं कि किसी तरह खून से लिखी हुई किताब उनके हाथ लगे।

मुसाफिर : **(हाथ जोड़ कर)** मैं कह चुका और फिर भी कहता हूँ कि बस करो, माफ करो, दया करो, मैं तुम्हें पहिचान गया, अगर तुम्हें कुछ कहना ही हो तो किनारे चलकर कहो जिसमें कोई तीसरा न सुनने पावे।

चन्द्रशेखर : नहीं-नहीं, मैं इसी जगह सबके सामने ही कहूँगा क्योंकि इन बाबू साब का इस मामले से बहुत ही घना संबंध है तथा इसके साथी लोग भी इसी जगह आकर इकट्ठे हो गये हैं और आश्चर्य भरी निगाहों से हम दोनों का तमाशा देख रहे हैं। हाँ तो मैं क्या कह रहा था? अच्छा, अब याद आया, उसी अँधेरी रात में एक बिल्ली भी आ पहुँची जो अपने मुँह से लंबी गर्दन वाला स्याह रंग का ऊँट दबाए हुए थी और ऊँट के माथे पर लिखा हुआ था

"सर्वगुण सम्पन्न चांचला सेठ"

"बस बस बस!" कहता हुआ मुसाफिर पीछे की तरफ हटा और काँपता हुआ जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गया।

इस नए आए हुए व्यक्ति तथा इस मुसाफिर की बातचीत से सभी को आश्चर्य तो हुआ ही था परन्तु मुसाफिर की अन्तिम अवस्था देखकर सभों को बड़ा विस्मय और आनन्द भी हुआ। इसके बाद जब मुसाफिर खौफ से बेहोश हो गया और नये आदमी अर्थात् चन्द्रशेखर ने बाबू साहब तथा उनके साथियों को बहुत जल्द वहाँ से चले जाने के लिए कहा तब वे लोग इस तरह वहाँ से भागे जैसे बाज के झपट्टे से बची हुई चिड़ियाएँ भागती हैं, जब वे लोग तेजी के साथ चलकर घने मुहल्ले में पहुँचे तब उन लोगों का जी ठिकाने हुआ और उन्होंने समझा कि जान बची।

2

पाठक महाशय, अब हम कुछ हाल जमानिया का लिखना मुनासिब समझते हैं और उस समय का हाल लिखते हैं जब राजा गोपालसिंह की कम्बख्ती का जमाना शुरू हो चुका था और जमानिया में तरह-तरह की घटनाएं होने लग गई थीं।

जमानिया तथा दारोगा और जैपाल वगैरह के संबंध की बातें जो चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखी जा चुकी हैं उन्हें हम इस ग्रंथ में बिना कारण लिखना उचित नहीं समझते, उनके अतिरिक्त और जो बातें हुई हैं उन्हें लिखने की इच्छा है, हाँ यदि मजबूरी से कोई जरूरत आ ही पड़ेगी तो बेशक पिछली बातें संक्षेप के साथ दोहराई जाएँगी और राजा गोपालसिंह की शादी के पहिले का कुछ हाल लिखा जाएगा। इसका कारण यही है कि यह भूतनाथ चन्द्रकान्ता सन्तति का परिशिष्ट भाग समझा जाता है।

अपने संगी-साथियों को साथ लिए हुए बाबू साहब जो भागे तो सीधे अपने घर की तरफ नहीं गये बल्कि नागर रंडी के मकान पर चले गये क्योंकि बनिस्बत अपने घर के उन्हें उसी का घर प्यारा था और उसी को वे अपना हमदर्द और दोस्त समझते थे, जिस समय वे उस जगह पहुँचे तो सुना कि नागर अभी तक बैठी हुई उनका इंतजार कर रही है। बाबू साहब को देखते ही नागर उठ खड़ी हुई और बड़ी खातिरदारी के साथ उनका हाथ पकड़कर अपने पास एक ऊँची गद्दी पर बैठाया और मामूल के खिलाफ आज देर हो जाने का सबब पूछा, मगर बाबू साहब ऐसे बदहवास हो रहे थे कि उनके मुँह से कोई बात न निकलती थी। उनकी ऐसी अवस्था देख नागर को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और उसने लाचार होकर उनके साथियों से उनकी परेशानी और बदहवासी का कारण पूछा।

बाबू साहब कौन हैं और उनका नाम क्या है इसका पता अभी तक नहीं मालूम हुआ। खैर इसके जानने की विशेष आवश्यकता भी नहीं जान पड़ती इसलिए अभी उन्हें बाबू साहब के नाम ही से संबोधित करने दीजिए, आगे चल कर देखा जाएगा।

बाबू साहब ने अपनी जुबान से अपनी परेशानी का हाल यद्यपि नागर से कुछ भी नहीं कहा मगर उनके साथियों की जुबानी उनका कुछ हाल नागर को मालूम हो गया और तब नागर ने दिलासा देते हुए बाबू साहब से कहा, "यह तो मामूली घटना थी।"

बाबू साहब : जी हाँ, मामूली घटना थी! अगर उस समय आप वहाँ होतीं तो मालूम हो जाता कि मामूली घटना कैसी होती है!

नागर : **(मुसकुराती हुई)** खैर किसी तरह मुँह से बोले तो सही!

बाबू साहब : पहिले यह तो बताओ कि नीचे का दरवाजा तो बंद है? कहीं कोई आ न जाय और हम लोगों की बातें न सुन लें।

नागर : आप जानते हैं कि आपके आने के साथ ही लौंडियाँ फाटक बंद कर दिया करती हैं। हमारे यहाँ सिवाय आपके दूसरे किसी ऐसे सरदार का आना-जाना तो है ही नहीं कि जिससे मुझे किसी तरह का लगाव या मुहब्बत हो, हाँ बाजार में बैठा करती हूँ इसलिए कभी-कभी कोई मारा पीटा आ ही जाया करता है, सो भी जब आप आते हैं तो उसी वक्त फाटक बंद कर दिया जाता है।

बाबू साहब इसका कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि एक आदमी यह कहता हुआ कमरे के अन्दर दाखिल हुआ, "झूठ भी बोलना तो मुँह पर!"

इस आदमी की सूरत देखते ही बाबू साहब चौंक पड़े और घबराहट के साथ बोल उठे, "यही तो है!"

यह वही आदमी था जिसे बाबू साहब और उनके संगी-साथियों ने कपालमोचन के कुएँ पर देखा था और जिसके डर से अभी तक बाबू साहब की जान पर सदमा हो रहा था।

बाबू साहब की ऐसी हालत देखकर उस आदमी ने जो अभी-अभी आया था कहा, "डरो मत, मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ बल्कि दोस्त हूँ!" इतना कह उस आदमी ने अपने हाथ की गठरी एक किनारे रख दी और मामूली कपड़े उतार कर इस तरह खूँटियों पर सजा दिये कि जैसे यह उसी का घर हो या इस घर पर उसका बहुत बड़ा अधिकार हो और नित्य ही वह यहाँ आता-जाता हो।

यह आदमी असल में भूतनाथ **(गदाधरसिंह)** था जिससे नागर की गहरी दोस्ती थी मगर बाबू साहब को इसकी कुछ भी खबर न थी और न कभी ऐसा ही इत्तिफाक हुआ था कि इस जगह पर इन दोनों का सामना हुआ हो। हाँ बाबू साहब ने गदाधरसिंह का नाम जरूर सुना था और यह भी सुना था कि वह मामूली आदमी नहीं है।

नागर ने जिस खातिरदारी और आवाभगत के साथ भूतनाथ का सम्मान किया और प्रेम दिखाया उसने बाबू साहब को मालूम हो गया कि नागर बनिस्बत मेरे इस आदमी को बहुत प्यार करती है।

खूँटियों पर कपड़े रखकर भूतनाथ बाबू साहब के पास बैठ गया और बोला, "भला मैंने आपको क्या तकलीफ दी है जो आप मुझसे इतना डरते हैं? एक ऐयाश और खुशदिल आदमी को इतना डरपोक न होना चाहिए। आप मुझे शायद पहिचानते नहीं, मेरा नाम गदाधरसिंह है, आपने अगर मुझे देखा नहीं तो नाम जरूर ही सुना होगा।"

बाबू साहब : **(आश्चर्य और डर के साथ)** हाँ, मैंने आपका नाम सुना है और अच्छी तरह सुना है।

नागर : **(मुसकुराती हुई, बाबू साहब से)** आपके तो अब ये गहरे रिश्तेदार हो गये हैं फिर भी आप इन्हें न पहिचानेंगे।

बाबू साहब : **(कुछ शरमाते हुए)** हाँ-हाँ, मैं बखूबी जानता हूँ मगर पहिचानता नहीं था, अफसोस की बात है कि इतने दिनों तक इनसे कभी मुलाकात नहीं हुई।

नागर : **(बाबू साहब से)** आपसे इनसे कुछ नातेदारी भी तो है?

बाबू साहब : हाँ, मेरी मौसेरी बहिन रामदेई। इनके साथ ब्याही है। आज अगर मुझे इस बात की खबर होती कि आप ही मेरे बहनोई हैं तो मैं उस कुएँ पर इतना परेशान न होता बल्कि खुशी के साथ मुलाकात होती। **(भूतनाथ से)** हाँ, यह तो बताइए कि वह चन्द्रशेखर कौन था जिसके खौफ से आप परेशान हो गये थे!

गदाधरसिंह :**(कुछ डर और संकोच के साथ)** वह मेरा बहुत पुराना दुश्मन है। मेरे हाथ से कई दफे जक उठा चुका और नीचा देख चुका है, अब वह मुझसे बदला लेने की धुन में लगा हुआ है। आज बड़े बेमौके मिल गया था क्योंकि मैं बेफिक्र था और वह हर तरह का सामान लेकर मेरी खोज में निकला था।

बाबू साहब : आखिर हम लोगों के चले आने के बाबद क्या हुआ? आप से और उससे कैसी निपटी?

गदाधरसिंह :मैं इस मौके को बचा गया और लड़ता हुआ धोखा देकर निकल भाग! खैर फिर कभी देखा जाएगा, अबकी दफे उस साले को ऐसा छकाऊँगा कि वह भी यरद करेगा।

चन्द्रशेखर का नाम सुनकर नागर चौंक पड़ी और उसके चेहरे की रंगत बदल गई। मालूम होता था कि वह भूतनाथ से कुछ पूछने के लिए उतावली हो रही है मगर बाबू साहब के खयाल से चुप है और चाहती है कि किसी तरह बाबू साहब यहाँ से चले जाएँ तो बात करे।

बाबू साहब : **(भूतनाथ से)** ठीक है वह बेशक् आपका दुश्मन है आज आठ-दस दिन हुए होंगे कि मुझसे बरना2 के

किनारे एकान्त में मिला था। उस समय उसके साथ तीन-चार औरतें भी थीं जिनमें से एक का नाम विमला था।

गदाधरसिंह :**(चौंककर)** विमला?

बाबू साहब : हाँ विमला, और एक मर्द भी उसके साथ था जिसे उसने एक दफे प्रभाकर सिंह के नाम से संबोधन किया था।

गदाधरसिंह :**(घबड़ाकर)** क्या तमु उस समय उसके सामने मौजूद थे?

बाबू साहब :जी नहीं, मै उन सभों को वहाँ आते देख एक झाड़ी में छिप गया था।

गदाधरसिंह :तब तो तुमने और भी बहुत-सी बातें सुनी होंगी।

बाबू साहब :नहीं मैं कुछ विशेष बातें न सुन सका, हाँ इतना जरूर मालूम हुआ कि वह मनोरमा से और जमानिया के राजा से मिलने का उद्योग कर रहा है।

गदाधरसिंह :**(कुछ सोच कर और बाबू साहब की तरफ खिसक कर)** बेशक् आपने और भी बहुत-सी बातें सुनी होंगी, और यह भी मालूम किया होगा कि वे औरतें वास्तव में कौन थीं।

बाबू साहब :सो मैं कुछ भी न जान सका कि वे औरतें कौन थीं या वहाँ पहुँचने से उन लोगों का क्या मतलब था।

गदाधरसिंह :खैर मैं थोड़ी देर के लिए आपकी बातें मान लेता हूँ।

नागर : **(बाबू साहब से)** मगर मैंने तो सुना था कि आपका और उन लोगों का सामना हो गया था और आप उसी समय उनके साथ कहीं चले भी गये थे।

बाबू साहब :**(घबड़ाने से होकर)** नहीं-नहीं, मेरा-उनका सामना बिलकुल नहीं हुआ बल्कि मैं उन लोगों को उसी जगह छोड़कर छिपता हुआ किसी तरह निकल भागा और अपने घर चला आया क्योंकि मुझे उन लोगों की बातों से कोई संबंध नहीं था, फिर मुझे जरूरत ही क्या थी कि छिपकर उन लोगों की बात सुनता या उन लोगों के साथ कहीं जाता।

नागर : शायद ऐसा ही हो, मगर जिसने मुझे यह खबर दी थी उसे झूठ बोलने की आदत नहीं है।

बाबू साहब :तो उसने धोखा खाया होगा। अथवा किसी दूसरे को मौके पर देखा होगा।

नागर ने इस मौके पर जो कुछ बाबू साहब से कहा वह केवल धोखा देने की नियत से था और वह चाहती थी कि बातों के हेर-फेर में डालकर बाबू साहब से कुछ और पता लगा ले, अस्तु जो कुछ हो मगर इस खबर ने भूतनाथ को बहुत ही परेशान कर दिया और वह सर नीचा कर तरह-तरह की बातें सोचने लगा। उसे इस बात का निश्चय हो गया कि बाबू साहब ने जो कुछ कहा है वह बहुत कम है अथवा जान-बूझकर वे असल बातों को छिपा रहे हैं।

कुछ देर तक सिर झुकाकर सोचते-सोचते भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया और उसने कुछ तीखी आवाज में बाबू साहब से कहा

गदाधरसिंह :सुनिए रामलाल जी[1], इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप मेरे नातेदार हैं और इस खयाल से मुझे आपका मुलाहिजा करना चाहिए मगर ऐसी अवस्था में जब कि आप मुझसे झूठ बोलने और मुझे धोखा देने की कोशिश करते हैं अथवा यों कह सकते हैं कि आप मेरे दुश्मन से मिलकर उसके मददगार बनते हैं तो मैं आपका मुलाहिजा कुछ भी न करूँगा! हाँ यदि आप मुझसे सब-कुछ साफ-साफ कह दें तो फिर मैं भी..

रामलाल : **(अर्थात् बाबू साहब)** ठीक है अब मुझे मालूम हो गया कि उन औरतों से और प्रभाकर सिंह से आप डरते हैं, यदि यह बात सच है तो डरपोक और कमजोर होने पर भी मैं आपसे डरना पसन्द नहीं करता..

रामलाल ने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि सीढ़ियों पर से जिसका दरवाजा इन लोगों के सामने ही था तेजी के साथ एक नकाबपोश आया और एक लिफाफा भूतनाथ के सामने फेंककर यह कहता हुआ वहाँ से निकल गया "बेशक् डरने की कोई जरूरत नहीं है, और खासकर ऐसे आदमी से जो पूरा नमक हराम और बेईमान है तथा जिसने अपने मालिक और दोस्त दयाराम को अपने हाथ से जख्मी किया था, ईश्वर की कृपा थी कि वह बेचारा बच गया और जमानिया में बैठा हुआ भूतनाथ के इस्तकबाल की कोशिश कर रहा है।"

इस आवाज ने भूतनाथ को एकदम परेशान कर दिया। उसने लिफाफा खोल कर चिट्ठी पढ़ने का इंतजार न किया और खंजर के कब्जे पर हाथ रखता हुआ तेजी के साथ दरवाजे पर और फिर सीढ़ियों पर जा पहुँचा मगर किसी आदमी की सूरत उसे दिखाई न पड़ी। वह धड़धड़ाता हुआ सीढ़ियों के नीचे उतर आया और फाटक के बाहर निकलने पर उस नकाबपोश को कुछ ही दूरी पर जाते हुए देखा। भूतनाथ ने उसका पीछा किया मगर वह गलियों में घूम-फिरकर ऐसा गायब हुआ कि भूतनाथ को उसकी गंध तक न मिली और अंत में वह लाचार होकर नागर के मकान में लौट आया। आने पर उसने देखा कि बाबू साहब नहीं हैं, कहीं चले गये। तब उसने उस लिफाफे की खोज की जो नकाबपोश उसके सामने फेंक गया था और देखना चाहा कि उसमें क्या लिखा हुआ है।

लिफाफा वहाँ मौजूद न देखकर भूतनाथ ने नागर से पूछा, "क्या वह लिफाफा तुम्हारे पास है?"

नागर : हाँ, तुमको उस नकाबपोश के पीछे जाते देख मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे सीढ़ियाँ उतरकर फाटक तक चली गई थी। जब तुम दूर निकल गये तब मैं वापस लौट आई और देखा कि बाबू साहब उस लिफाफे को खोलकर चिट्ठी पढ़ रहे हैं, मुझको उसकी ऐसी नालायकी पर क्रोध चढ़ आया और मैंने उसके हाथ से वह चिट्ठी छीनकर बहुत-कुछ बुरा-भला कर जिस पर वह नाराज होकर यहाँ से चला गया।

भूतनाथ : यह बहुत बुरा हुआ कि यह चिट्ठी उसने पढ़ ली। फिर तुमने उसे जाने क्यों दिया? मैं उसे बिना ठीक किये कभी न रहता और बता देता कि इस तरह की बदमाशी का क्या नतीजा होता है।

नागर : खैर अगर भाग भी गया तो क्या हर्ज है, जब तुम उसे मजा देने पर तैयार ही हो जाओगे तो क्या वह तुम्हारे हाथ न आवेगा?

भूतनाथ : खैर वह चिट्ठी कहाँ है जरा दिखाओ तो सही।

नागर : **(खुला हुआ लिफाफा भूतनाथ के हाथ में देकर)** लो यह चिट्ठी है।

भूतनाथ : **(चिट्ठी पढ़कर)** क्या तुमने यह चिट्ठी पढ़ी है?

नागर : नहीं, मगर यह सुनने की इच्छा है कि इसमें क्या लिखा है?

भूतनाथ : **(पुनः उस चिट्ठी को अच्छी तरह पढ़ के और लिफाफे को गौर से देख कर)** अंदाज से मालूम होता है कि इस लिफाफे में केवल यही एक चिट्ठी नहीं बल्कि और भी कोई कागज था।

नागर : शायद ऐसा ही हो और बाबू साहब ने कोई कागज निकाल लिया हो तो मैं नहीं कह सकता।

भूतनाथ : खैर देखा जाएगा, मेरा द्रोही मुझसे बच के कहाँ जा सकता है। फिर भी आज मैं जिस नियत से तुम्हारे पास आया था वह न हो सका, अच्छा अब मैं जाता हूँ।

नागर : नहीं-नहीं, मैं तुम्हें इस समय जाने न दूँगी, मुझे बहुत-सी बातें तुमसे पूछनी और कहनी हैं, मुझे इस बात का दिन-रात खुटका बना रहता है कि कहीं तुम अपने दुश्मनों के फेर में न पड़ जाओ क्योंकि केवल तुम्हारे ही तक मेरी जिंदगी है, मुझे सिवाय तुम्हारे इस दुनिया में और किसी का भी भरोसा नहीं है, और तुम्हारे दुश्मनों की गिनती दिन पर दिन बढ़ती ही जाती है।

भूतनाथ : हाँ ठीक है। **(कुछ सोच कर)** मगर इस समय मैं यहाँ पर नहीं रह सकता और..

नागर : कल मनोरमा जी भी तो तुमसे मिलने के लिए वहाँ आने वाली है।

भूतनाथ : खैर देखा जाएगा, बन पड़ेगा तो मैं कल फिर आ जाऊँगा।

इतना कहकर भूतनाथ खड़ा हुआ और सीढ़ियों के नीचे उतर कर देखते-देखते नजरों से गायब हो गया।

भूतनाथ के चले जाने के बाद नागर आधे घंटे तक चुपचाप बैठी रही, इसके बाद उसने उठकर अपनी लौंडियों को बुलाया और कुछ बातचीत करने के बाद एक लौंडी के साथ लिए हुए सीढ़ियों के नीचे उतरी।

चन्द्रकान्ता सन्तति में नागर के जिस मकान का हाल हम लिख आये हैं वह मकान इस समय नागर के कब्जे में नहीं है क्योंकि अभी तक जमानिया राज्य की वह हालत नहीं हुई थी और न इस इज्जत को अभी नागर पहुँची थी। इस समय नागर रंडियों की-सी अवस्था में है और उसके कब्जे में एक मामूली छोटा-सा मकान है, फिर भी मकान सुन्दर और मजबूत है तथा उसके सामने एक छोटा-सा नजरबाग भी है। यद्यपि अभी तक कम उम्र नागर की हैसियत बढ़ी नहीं है फिर भी उसकी चालाकियों का जाल अच्छी तरह फैल चुका है जिसका एक सिरा जमानिया राजधानी में जा पहुँचा है क्योंकि उस मनोरमा से इसकी दोस्ती अच्छी तरह हो चुकी है जिसने जमानिया की खराबी में सबसे बड़ा हिस्सा लिया हुआ था।

नागर सीढ़ियों से नीचे उतर कर नजरबाग में होती हुई सदर फाटक पर पहुँची और उसे बंद करके एक मजबूत ताला उसकी कुंडी में लगा दिया। इसके बाद लौटकर मकान की सीढ़ियों पर चढ़ने वाला दरवाजा भी अच्छी तरह बंद करके अपने कमरे में चली आई।

लौंडी को कमरे का फर्श साफ करने की आज्ञा देकर नागर ऊपर छत पर चढ़ गई जहाँ एक बँगला था और इस समय उसके बाहर ताला लगा हुआ था जिसे खोलकर नागर बँगले के अन्दर चली गई।

यह बँगला बहुत खुलासा और मामूली ढंग पर सजा हुआ था। जमीन पर साफ-सुथरा फर्श बिछा हुआ था, एक तरफ सुन्दर मसहरी थी तथा छोटे-बड़े कई तकिए फर्श पर पड़े थे। मगर यह कमरा खाली न था, इसमें इस समय मनोरमा बैठी हुई थी और जमानिया राजधानी का बेईमान दारोगा **(बिजली)** भी उसके साथ था। नागरें भी उन दोनों के पास जाकर बैठ गई।

3

अब हम अपने पाठकों को पुनः उस घाटी में ले चलते हैं जिसमें कला और विमला रहती थीं और जिसमें भूतनाथ ने पहुँचकर बड़ी ही संगदिली का काम किया था अर्थात् कला, बिमला और इंदुमति के साथ-साथ कई लौंडियों को भी कुएँ में ढकेलकर अपनी जिंदगी का आईना गंदला किया था।

भूतनाथ यद्यपि अपने शागिर्द रामदास की मदद से उस घाटी में पहुँच गया था और अपनी इच्छानुसार उसने सब कुछ करके अपने दिल का गुबार निकाल लिया था मगर घाटी के बीच वाले उस बँगले के सिवाय वह वहाँ का और कोई स्थान नहीं देख सका जिसमें कला और विमला रहती थीं जहाँ जख्मी इंदुमति का इलाज किया गया था, और न वहाँ का कोई भेद ही भूतनाथ को मालूम हुआ। वह केवल अपने दुश्मनों को मारकर उस घाटी के बाहर निकल आया और फिर कभी उसके अन्दर नहीं गया। मगर प्रभाकर सिंह को उस घाटी का बहुत ज्यादा हाल मालूम हो गया था। कुछ तो उन्होंने बीच वाले बँगले की तलाशी लेते समय कई तरह के कागजों-पुर्जों और किताबों को देखकर मालूम कर लिया था और कुछ कला, विमला ने बताया था और बाकी का भेद इन्द्रदेव ने बताकर प्रभाकर सिंह को खूब पक्का कर दिया था।

आज प्रातःकाल सूर्योदय के समय हम उस घाटी में प्रभाकर सिंह को एक पत्थर की चट्टान पर बैठे हुए देखते हैं। उनके बगल में ऐयारी का बटुआ लटक रहा है और हाथ में एक छोटी-सी किताब है जिसे वे बड़े गौर से देख रहे हैं। यह किताब हाथ की लिखी हुई है और इसके अक्षर बहुत ही बारीक हैं तथा इसमें कई तरह के नक्शे भी दिखाई दे रहे हैं जिन्हें वे बार-बार उलट कर देखते हैं और फिर कोई दूसरा मजमून पढ़ने लगते हैं।

इस काम में उन्हें कई घंटे बीत गये। जब धूप की तेजी ने उन्हें परेशान कर दिया तब वे वहाँ से उठ खड़े हुए तथा बड़े गौर से दक्षिण और पश्चिम कोण की तरफ देखने लगे और कुछ देर तक देखने के बाद उसी तरफ चल निकले। नीचे उतर कर मैदान खत्म करने के बाद जब दक्षिण और पश्चिम कोण वाली पहाड़ी के नीचे पहुँचे तब इधर-उधर बड़े गौर से देखकर उन्होंने एक पगडंडी का पता लगाया और उसी सीध पर चलते हुए पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। करीब-करीब साठ कदम चले जाने के बाद उन्हें एक छोटी-सी गुफा मिली और वे लापरवाही के साथ उस गुफा के अन्दर चले गये।

यह गुफा बहुत बड़ी न थी और इसमें केवल दो आदमी एक साथ मिलकर चल सकते थे, फिर भी ऊँचाई इसकी ऐसी कम न थी कि इसके अन्दर जाने वाले का सिर छत के साथ टकराए, अस्तु प्रभाकर सिंह धीरे-धीरे टटोलते हुए इसके अन्दर जाने लगे। जब लगभग दो सौ कदम चले गये तब उन्हें एक छोटी-सी कोठरी मिली जिसके अन्दर जाने के लिए दरवाजे की किस्म से किसी तरह की रुकावट न थी सिर्फ एक चौखट लाँघने ही के सबब से कह सकते हैं कि वे उस कोठरी के अन्दर जा पहुँचे। अंधकार के सबब से प्रभाकर सिंह को कुछ दिखाई नहीं देता था इसलिए वे बैठकर वहाँ की जमीन हाथ से इस तरह टटोलने लगे मानो किसी खास चीज को ढूँढ़ रहे हैं।

एक छोटा-सा चबूतरा कोठरी के बीचोंबीच मिला जो हाथ-भर चौड़ा और इसी कदर लंबा था। उसके बीच में किसी तरह का खटका था जिसे प्रभाकर सिंह ने दबाया और साथ ही इसके चबूतरे के ऊपर वाला किवाड़ के पल्ले की तरह खुल गया, मानो वह पत्थर का नहीं बल्कि किसी धातु या लकड़ी का बना हो।

अब प्रभाकर सिंह ने अपने बटुए में से मोमबत्ती निकाली और इसके बाद चकमक पत्थर निकालकर रोशनी की। प्रभाकर सिंह ने देखा कि ऊपर का भाग खुल जाने से उस चबूतरे के अन्दर नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ लगी दिखाई देती हैं। प्रभाकर सिंह ने रोशनी में उस कोठरी को बड़े गौर से देखा। वहाँ चारों तरफ दीवार में चार आले **(ताक)** थे जिनमें से सिर्फ सामने वाले एक आले में गुलाब का बनावटी एक पेड़ बना हुआ था जिसमें बेहिसाब कलियाँ लगी हुई थीं और सिर्फ चार फूल खिले हुए थे। बाकी के तीनों आले खाली थे।

प्रभाकर सिंह ने उस गुलाब के पेड़ और फूलों को बड़े गौर से देखा और यह जानने के लिए वह पेड़ किस चीज का बना

हुआ है उसे हाथ से अच्छी तरह टटोला। मालूम हुआ कि वह पत्थर या किसी और मजबूत चीज का बना हुआ है।

प्रभाकर सिंह उन खिले हुए चार फूलों को देखकर बहुत ही खुश हुए और इस तरह धीरे-धीरे बुदबुदाने लगे जैसे कोई अपने मन से दिल खोलकर बातें करता हो। उन्होंने ताज्जुब के साथ कहा, "हैं यह चार फूल कैसे! खैर मेरा परिश्रम तो सफल हुआ चाहता है। इन्द्रदेव जी का खयाल ठीक निकला कि वे तीनों औरतें **(जमना, सरस्वती और इंदु)** जरूर उस तिलिस्म के अन्दर चली गई होंगी। अब इन खिले फूलों को देखकर मुझे भी विश्वास होता है कि उन तीनों से तिलिस्म में मुलाकात होगी और मैं उन्हें खोज निकालूँगा, मगर इन्द्रदेव जी ने कहा था कि जितने आदमी इस तिलिस्म में जाएँगे इस पेड़ के उतने ही फूल खिले दिखाई देंगे इसके अतिरिक्त उस कागज में भी ऐसा ही लिखा है अस्तु, यह चौथा आदमी इस तिलिस्म में कौन जा पहुँचा? इस बात का मुझे विश्वास नहीं होता कि किसी लौंडी को भी वे तीनों अपने साथ ले गई होंगी? क्योंकि ऐसा करने के लिए इन्द्रदेव जी ने उन्हें सख्त मनाही कर दी थी। यह संभव है कि विशेष कारण से वे किसी लौंडी को अपने साथ ले भी गई हों, खैर जो होगा देखा जाएगा मगर ऐसा किया तो यह काम उन्होंने अच्छा नहीं किया।

इस तरह बहुत-सी बातें वे देर तक सोचते रहे, साथ ही इसके इस बात पर भी गौर करते रहे कि उन तीनों को तिलिस्म के अन्दर जाने की जरूरत ही क्या पड़ी।

प्रभाकर सिंह बेखटके उन सीढ़ियों के नीचे उतर गये। नीचे उतर जाने के बाद उन्हें पुनः एक सुरंग मिली जिसमें तीस या चालीस हाथ से ज्यादे जाना न पड़ा, जब वे उस सुरंग को खत्म कर चुके तब उन्हें रोशनी दिखाई दी तथा सुरंग के बाहर निकलने पर एक छोटा-सा बाग और कुछ इमारतों पर उनकी निगाह पड़ी। आसमान पर निगाह करने से खयाल हुआ कि दोपहर ढल चुकी है और दिन का तीसरा पहर बीत रहा है।

इस बाग में मकान, बारहदरी, कमरे, दालान, चबूतरे या इसी तरह की इमारतों के अतिरिक्त और कुछ भी न था अर्थात् फूल के अच्छे दरख्त दिखाई नहीं देते थे या अगर कुछ थे भी तो केवल जंगली पेड़ जो कि यहाँ बहते हुए चश्मे के सबब से कदाचित् बराबर ही हरे-भरे बने रहते थे, हाँ केले के दरख्त यहाँ बहुतायत से दिखाई दे रहे थे और उनमें फल भी बहुत लगे हुए थे।

प्रभाकर सिंह थक गये थे इसलिए कुछ आराम करने की नीयत से नहर के किनारे एक चबूतरे पर बैठ गये और वहाँ की इमारतों को बड़े गौर से देखने लगे। कुछ देर बद उन्होंने अपने बटुए में से मेवा निकाला और उसे खाकर चश्मे का बिल्लौर की तरह साफ बहता हुआ जल पीकर संतोष किया।

प्रभाकर सिंह सिपाही और बहादुर आदमी थे, कोई ऐयार न थे, मगर आज हम इनके बगल में ऐयरी का बटुआ लटका हुआ देख रहे हैं इससे मालूम होता है कि इन्होंने समयानुकूल चलने के लिए कुछ ऐयारी जरूर सीखी है, मगर इनका उस्ताद कौन है सो अभी मालूम नहीं हुआ।

हम कह चुके हैं कि वह बाग नाममात्र को बाग था मगर इसमें इमारतों का हिस्सा बहुत ज्यादे था। बाग के बीचोंबीच में एक गोल गुंबद था जिसके चारों तरफ छोटी-छोटी पाँच कोठरियाँ थीं और वह गुंबद इस समय प्रभाकर सिंह की आँखों के सामने था जिसे वह बड़े गौर से देख रहे थे। बाग के चारों तरफ चार बड़ी-बड़ी बारहदरियाँ थीं और उनके ऊपर उतने ही खूबसूरत कमरे बने हुए थे जिसके दरवाजे इस समय बंद थे, सिर्फ पूरब तरफ वाले कमरे के दरवाजे में से एक दरवाजा खुला हुआ था और प्रभाकर सिंह को अच्छी तरह दिखाई दे रहा था।

प्रभाकर सिंह और कमरों तथा दालानों को छोड़ कर उसी बीच वाले गुंबद को बड़े गौर से देख रहे थे जिसके चारों तरफ वाली कोठरियों के दरवाजे बंद मालूम होते थे। कुछ देर बाद प्रभाकर सिंह उठे और उस गुंबद के पास चले गये। एक कोठरी के दरवाजे को हाथ से हटाया तो यह खुल गया अस्तु वह कोठरी के अन्दर चले गये। इस कोठरी की जमीन संगमरमर की थी और बीच में स्याह पत्थर का एक सिंहासन था जिस पर हाथ रखते ही प्रभाकर सिंह का शरीर काँपा और वे चक्कर खाकर जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गये तथा उसी समय उस कोठरी का दरवाजा भी बंद हो

गया।

दिन बीत गया। आधी रात का समय था जब प्रभाकर सिंह की आँख खुली। अँधेरी रात होने के कारण वे कुछ स्थिर नहीं कर सकते थे कि वे कहाँ पर हैं, घबराहट में उन्होंने पहिले अपने हर्बों को टटोला और फिर ऐयारी का बटुआ खोला, ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वे सब चीजें उनके पास मौजूद थीं। इसके बाद वे विचारने लगे कि यह स्थान कैसा है तथा हमको अब क्या करना चाहिए। बहुत देर के बाद उन्हें मालूम हुआ कि वे किसी छोटे दालान में हैं और उनके सामने एक घना जंगल है। इस अँधकार के समय में उनकी हिम्मत न पड़ी कि उठकर तिलिस्म में इधर-उधर घूमें या किसी बात का पता लगावें। अस्तु उन्होंने चुपचाप उसी दालान में पड़े रह कर रात बिता दी।

रात बीत गई और सूर्य भगवान का पेशखेमा आसमान पर अच्छी तरह बन गया। प्रभाकर सिंह उठ खड़े हुए और यह जानने के लिए उस दालान में घूमने और दरोदीवार को अच्छी तरह देखने लगे कि वे क्योंकर इस स्थान में पहुँचे तथा उनके यहाँ जाने का जरिया क्या है, परन्तु इस बात को उन्हें कुछ भी पता न लगा। उस दालान के सामने जो जंगल था वह वास्तव में बहुत घना था और सिर्फ देखने से इस बात का पता नहीं लगता था कि वह कितना बड़ा है तथा उसके बाद किसी तरह की इमारत है या कोई पहाड़, साथ ही इसके उन्हें इस बात की फिक्र भी थी कि अगर कोई पानी का चश्मा दिखाई दे तो स्नान इत्यादि का काम चले।

जंगल में घूमकर क्या करें और किसको ढूँढें इस विचार में वे बहुत देर तक सोचते और इधर-उधर घूमते रह गये, यहाँ तक कि सूर्य भगवान ने चौथाई आसमान का सफर ते कर लिया और धूप में कुछ गर्मी मालूम होने लगी। उसी समय प्रभाकर सिंह के कान में यह आवाज आई, "हाय, बहुत ही बुरे फँसे, यह मेरे कर्मों का फल है, ईश्वर न करे किसी..." बस इसके आगे की आवाज इतनी बारीक हो गई थी कि प्रभाकर सिंह उसे अच्छी तरह समझ न सके।

इस आवाज ने प्रभाकर सिंह को परेशान कर दिया और खुटके में डाल दिया। आवाज जंगल के बीच में से आई थी अतएव उसी आवाज की सीध पर चल पड़े और उस घने जंगल में ढूँढ़ने लगे कि वह दुखिया कौन और कहाँ है जिसके मुँह से ऐसी आवाज आई है।

प्रभाकर सिंह को ज्यादा ढूँढ़ना न पड़ा। उस जंगल में थोड़ी ही दूर जाने पर उन्हें पानी का एक सुन्दर चश्मा दिखाई दिया और उसी चश्मे के किनारे उन्होंने एक औरत को देखा जो बदहवास और परेशान जमीन पर पड़ी हुई थी और न-मालूम किस तरह की तकलीफ की करवटें बदल रही थी। प्रभाकर सिंह बड़े गौर से उस औरत को देखने लगे क्योंकि वह कुछ जानी-पहचानी-सी मालूम पड़ी थी। उस औरत ने प्रभाकर सिंह को देख के हाथ जोड़ा और कहा, "मेरी जान बचाइए, मैं बेतरह इस आफत में फँस गई हूँ। मुझे उम्मीद थी कि अब कुछ ही देर में इस दुनिया से कूच कर जाऊँगी, परन्तु आपको देखने से विश्वास हो गया कि अभी थोड़ी जिंदगी बाकी है। आप बड़े गौर से देख रहे हैं, मालूम होता है कि आपने मुझे पहिचाना नहीं। मैं आपकी तावेदार लौंडी हरदेई हूँ, आपकी स्त्री और सालियों की बहुत दिनों तक खिदमत कर चुकी हूँ।"

प्रभाकर सिंह : हाँ, अब मैंने तुझे पहिचाना, कला और बिमला के साथ मैंने तुझे देखा था मगर सामना बहुत कम हुआ इसलिए पहचानने में जरा कठिनाई हुई, अच्छा यह तो बता कि तीनों कहाँ हैं?

हरदेई : मैं उन्हीं की सताई होने पर भी उनकी ही खोज में यहाँ आई थी, एक दफे वे तीनों दिखाई देकर पुनः गायब हो गई आह अब मुझसे बोला नहीं जाता।

प्रभाकर सिंह : तुझे किस बात की तकलीफ है?

हरदेई : मैं भूख से परेशान हो रही हूँ। आज कई दिन से मुझे कुछ भी खाने को नहीं मिला...बस...अब...प्राण निकला ही..

प्रभाकर सिंह : तुझे यहाँ आये कितने दिन हुए?

हरदेई : आज से सात..

बस इससे ज्यादे हरदेई कुछ भी न बोल सकी अस्तु प्रभाकर सिंह ने अपने बटुए में से कुछ मेवा निकाल कर खाने के लिए दिया और हाथ का सहारा देकर उसे बैठाया। मेवा देखकर हरदेई खुश हो गई, भोजन किया और नहर का जल पीकर सम्हल बैठी और बोली, "अब मेरा जी ठिकाने हुआ, अब मैं बखूबी बातचीत कर सकती हूँ।"

प्रभाकर सिंह : **(उसके पास बैठकर)** अच्छा अब बता कि तुझे यहाँ आये कितने दिन हुए और तूने कला, विमला तथा इंदु को कहाँ और किस अवस्था में देखा तथा क्योंकर उनका साथ छूटा। क्या तू भी उन तीनों के साथ ही इस तिलिस्म में आई थी?

हरदेई : नहीं, मैं तो बेसबब और बिना कसूर के मारी गई। मैंने आज तक अपने मालिकों के साथ कोई बुराई नहीं कि मगर न मालूम उन्होंने क्यों मुझे इस तरह की सजा दी! यद्यपि उन्होंने अपना धर्म बिगाड़ दिया था और जिस तरह सती-साध्वियों को चलना चाहिए उस तरह नहीं चलती थीं, अपनी सफेद और साफ चादर में बदनामी के कई धब्बे लगा चुकी थीं, मगर मैंने आपसे भी इस बात की कभी शिकायत नहीं की और उनका भेद किसी तरह प्रकट होने न दिया, फिर भी अंत में मैं ही कसूरवार समझी गई और मुझी को प्राणदंड दिया गया, परन्तु ईश्वर की कृपा से मैं जीती बच गई। अब मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ और जो कुछ कहने को बातें हैं वह आपसे..

प्रभाकर सिंह : **(कुछ घबराकर)** तू क्या कह रही है! क्या कला और विमला के सतीत्व में धब्बा लग चुका है? और क्या उन दोनों ने अपनी चाल-चलन खराब कर डाली है?

हरदेई : बेशक् ऐसी बात है। आज से नहीं बल्कि आपसे मुलाकात होने के पहिले ही से वे दोनों बिगड़ी हुई है और दो आदमियों से अनुचित प्रेम करके अपने धर्म को बिगाड़ चुकी हैं, बड़े अफसोस की बात है कि इंदुमति को भी उन्होंने अपनी पंक्ति में मिला लिया है। ईश्वर ने इसी पाप का फल उन्हें दिया है। मेरी तरह वे भी इस तिलिस्म में कैद कर दी गई हैं और आश्चर्य नहीं कि वे भी इसी तरह की तकलीफें उठा रही हो। बस इससे ज्यादे और कुछ भी नहीं कहूँगी क्योंकि..

प्रभाकर सिंह : नहीं-नहीं, रुक मत। जो कुछ तू जानती है बेशक् कहे जा, मैं खुशी से सुनने के लिए तैयार हूँ।

हरदेई : अगर मैं ऐसा करूँगी तो फिर मेरी क्या दशा होगी, यही मैं सोच रही हूँ।

हरदेई की बातों ने प्रभाकर सिंह के दिल में एक तरह का दर्द पैदा कर दिया। 'कला और विमला बदकार हैं और उन्होंने इंदु को भी खराब कर दिया', यह सुन कर उनका क्या हाल हुआ सो वे ही जानते होंगे। नेक और पतिव्रता इंदु की कोई बदनामी करे यह बात प्रभाकर सिंह के दिल में नहीं जम सकती थी मगर कला और विमला पर उन्हें पहले भी एक दफे शक हो चुका था। जब वे उस घाटी में थे तभी उनकी स्वतंत्रता देख कर उनका मन आशंकित हो गया था मगर जाँच करने पर उनका दिल साफ हो गया था। आज हरदेई ने उन्हें फिर उसी चिंता में डाल दिया, और साथ ही इसके इंदु का भी आँचल गंदला सुनकर उनका कलेजा काँप उठा तथा वे सोचने लगे कि क्या यह बात सच हो सकती है?

केवल इतना ही नहीं, प्रभाकर सिंह के चित्त में चिंता और घृणा के साथ-ही-साथ क्रोध की भी उत्पत्ति हो गई और बहुत विचार करने के बाद उन्होंने सोचा कि यदि वास्तव में हरदेई का कहना सच है तो मुझे फिर उन दुष्टाओं के लिए परिश्रम करने की आवश्यकता ही क्या है, परन्तु सत्य की जाँच तो आवश्यक है इत्यादि सोचते हुए फिर उन्होंने हरदेई से पूछा

प्रभाकर सिंह : हाँ तो जो कुछ असल मामला है तू बेखौफ होकर कहे जा, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तेरी रक्षा करूँगा और

तुझे इस आफत से बचाऊँगा।

हरदेई : यदि आप वास्तव में प्रतिज्ञा करते हैं तो फिर मैं सब बातें साफ-साफ कह दूँगी।

प्रभाकर सिंह : बेशक् मैं प्रतिज्ञा करता हूँ मगर साथ ही इसके यह भी कहता हूँ कि अगर तेरी बात झूठ निकली तो तेरे लिए सबसे बुरी मौत का ढंग तजवीज करूँगा।

हरदेई : बेशक् मैं इसे मंजूर करती हूँ।

प्रभाकर सिंह : अच्छा तो जो कुछ ठीक-ठीक मामला है तू कह जा और बात कि वह सब कहाँ गई और क्या हुई और क्योंकर इस दशा को पहुँची।

हरदेई : अच्छा तो मैं कहती हूँ, सुनिए। कला और विमला की चालचलन अच्छी नहीं है। आप स्वयं सोच सकते हैं कि जिन्हें ऐसी नौजवानी में इस तरह की स्वतंत्रता मिल गई हो और रहने तथा आन्नद करने के लिए ऐसा स्वर्ग-तुल्य स्थान मिल गया हो तथा दौलत की भी किसी तरह कमी न हो तो वे कहाँ तक अपने चित्त को रोक सकती हैं? खैर जो कुछ हो, कला और विमला दोनों ही ने अपने लिए दो प्रेमी खोज निकाले और दोनों को औरतों के भेष में ठीक करके अपने यहाँ रख छोड़ा तथा नित्य नया आनन्द करने लगी, मगर साथ ही इसके भूतनाथ से बदला लेने का भी ध्यान उनके दिल में बना रहा और उन दोनों मर्दों से भी इस काम में बराबर मदद माँगती रहीं। वे दोनों मर्द कुछ दिन तक इस घाटी में रह आनन्द करते और फिर कुछ दिनों के लिए कहीं चले जाया करते थे।

प्रभाकर सिंह : **(बात काट कर)** उन दोनों का नाम क्या था?

हरदेई : सो मैं नहीं कह सकती क्योंकि कला और विमला ने बड़ी कारीगरी से उन दोनों का भेष बदल दिया, कभी-कभी मरदाने भेष में रहने पर भी उसकी सूरत दिखाई नहीं देती थी, इसलिए मैं उनके नाम और ग्राम के विषय में ठीक तौर पर कुछ भी नहीं कह सकती, हाँ इतना जरूर है कि अगर मुझे कुछ मदद मिले तो मैं उन दोनों का पता जरूर लगा सकती हूँ क्योंकि एकांत की अवस्था में छिप-लुक कर इन लोगों की बहुत-सी बातें सुन चुकी हूँ जिसका..

प्रभाकर सिंह : खैर इस बात को जाने दे फिर देखा जाएगा, अच्छा तब क्या हुआ?

हरदेई : बहुत दिनों तक कला और विमला ने दोनों से संबंध रखा मगर जब इंदु इस घाटी में लाई गई और आपका आना भी यहाँ हुआ तब वे दोनों कुछ दिन के लिए गायब कर दिये गये। मैं ठीक नहीं कह सकती कि वे कहाँ चले गये या क्या हुए। मैं इस किस्से को बहुत मुख्तसर में बयान करती हूँ। फिर जब आप विजयगढ़ और चुनार की लड़ाई में चले गये और बहुत दिनों तक आपके जाने की उम्मीद न रही तब पुनः वे दोनों इस घाटी में दिखाई देने लगे। संग और कुसंग का असर मनुष्य के ऊपर अवश्य पड़ा करता है। कुछ ही दिनों के बाद इंदुमति को मैंने उन दोनों में से एक के साथ मुहब्बत करते देखा और इसी कारण से कला, विमला और इंदुमति में अन्दर-अन्दर कुछ खिंचाव भी आ गया था।

मैं समझती हूँ कि भूतनाथ को इस विषय का हाल जरूर मालूम होगा जिसने उन दोनों को रिश्वत देकर अपने साथ मिला लिया और उस घाटी में आने-जाने का रास्ता देख लिया। इसी बीच में मैंने आपको उस घाटी में देखा। पहिले तो मुझे विश्वास हो गया कि वास्तव में प्रभाकर सिंह ही लड़ाई में नामवरी हासिल करके यहाँ आ गये हैं परन्तु कुछ दिन के बाद मेरा खयाल जाता रहा और निश्चय हो गया कि असल में आपकी सूरत बनाकर यहाँ आने वाला कोई दूसरा ही था।

मैं इस विषय में कला और विमला को बार-बार टोका करती थी और कहा करती थी कि तुम लोगों के रहन-सहन का यह ढंग अच्छा नहीं है, एक-न-एक दिन इसका नतीजा बहुत ही बुरा निकलेगा, मगर वे दोनों इस बात का कुछ खयाल नहीं करती थी और मुझे यह कहकर टाल दिया करती थीं कि खैर जो कुछ भी हुआ सो हुआ अब ऐसा न होगा। मगर

मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि मेरे रोक-टोक करने से उसके दिल में रंज बैठता जाता है। मैंने अपने काम में और भी कई लौंडियों को शरीक कर लिया मगर इसका नतीजा मेरे लिए अच्छा न निकला।

एक दिन वह आदमी जो आपकी सूरत बना हुआ था जब उस घाटी में आया तो उसके साथ और भी दस-बारह आदमी आये। जब वे लोग कला, बिमला और इंदुमति से मिले तो उनका रंग-ढंग देखकर मैं डर गई और एक किनारे हट कर उनका तमाशा देखने लगी। थोड़ी देर के बाद जब संध्या हुई तब कला, बिमला और इंदुमति उन सभों को साथ लिए हुए बँगले के अन्दर चली गई अस्तु इसके बाद क्या-क्या हुआ सो मैं कुछ भी न जान सकी, लाचार मैं अपनी हमजोलियों के साथ जा मिली और भोजन इत्यादि को सामग्री जुटाने के काम में लगी।

पहर रात बीत जने के बाद जब भोजन तैयार हुआ तब सभों ने मिल-जुल कर भोजन किया, तत्पश्चात् हम लोगों ने भी खाना खाया मगर भोजन करने के थोड़ी देर बाद हम लोगों का सिर घूमने लगा जिससे निश्चय हो गया कि आज के भोजन में बेहोशी की दवा मिलाई गई है। खैर जो हो, आधी रात जाते-जाते तक हम सब-ही-सब बेहोश होकर दीन-दुनिया को भूल गई। प्रातःकाल जब मेरी आँख खुली तो मैंने अपने-आपको इसी स्थान पर पड़े हुए पाया। घबड़ाकर उठ बैठी और आश्चर्य के साथ चारों तरफ देखने लगी, उस समय मेरे सिर में बेहिसाब दर्द हो रहा था।

तीन दिन और रात मैं घबड़ाई हुई इस जंगल में और **(हाथ का इशारा करके)** इस पास वाली इमारत और दालान में घूमती रही मगर न तो किसी से मुलाकात हुई और न यहाँ से निकल भागने के लिए कोई रास्ता ही दिखाई दिया। चौथे दिन भूख से बेचैन होकर मैं इसी जंगल में घूम रही थी कि यकायक इंदुमति कुछ दूरी पर दिखाई पड़ी जो कि आपके गले में हाथ डाले हुए धीरे-धीरे पूरब की तरफ जा रही थी। मैं नहीं कह सकती कि वह वास्तव में आप ही के गले में हाथ डाले हुए थी या किसी दूसरे ऐयार के गले में जो आपकी सूरत बना हुआ था।

उसी के पीछे मैंने कला और बिमला जी को जाते हुए देखा। मैं खुशी-खुशी लपकती उनकी तरफ बढ़ी मगर नतीजा कुछ भी न निकला। देखते-ही-देखते इसी जंगल और झाड़ियों में घूम-फिर वे सब-की-सब न जाने कहाँ गायब हो गई, तब से आज तक कई दिन हुए मैं उनकी खोज में परेशान हूँ, अंत में भूख के मारे बदहवास होकर इसी जगह गिर पड़ी और कई पहर तक तन-बदन की भी सुध न रही, जब होश में आई तब आपसे मुलाकात हुई। बस यही तो मुख्तसर हाल है।

हरदेई की बात सुनकर प्रभाकर सिंह के तो होश उड़ गये। वे ऐसे बेसुध हो गये कि उन्हें तनोबदन की सुध बिलकुल ही जाती रही। थोड़ी देर तक तो ऐसा मालूम होता रहा कि वे प्रभाकर सिंह नहीं बल्कि कोई पत्थर की मूरत हैं, इसके बाद उन्होंने एक लंबी साँस ली और बड़े गौर से हरदेई के चेहरे की तरफ देखने लगे। कई क्षण बाद उन्होंने सिर नीचा कर लिया और किसी गहरे चिंता-सागर में डुबकियाँ लगाने लगे। हरदेई मन-ही-मन प्रसन्न होकर उनके चेहरे की तरफ देखने लगी जिसका रंग थोड़ी-थोड़ी देर पर गिरगिट के रंग की तरह बराबर बदल रहा था।

प्रभाकर सिंह के चेहरे पर कभी तो क्रोध, कभी दुःख, कभी चिंता, कभी घबराहट और कभी घृणा की निशानी दिखाई देने लगी। आह, प्रभाकर सिंह के जिस हृदय में इंदुमति का अगाध प्रेम भरा हुआ था उसमें इस समय भयानक रस का संचार हो रहा था। जो वीर हृदय सदैव करुण रस से परिपूरित रहता था वह क्षण मात्र के लिए अद्भुत रस का स्वाद लेकर रौद्र और तत्पश्चात् वीभत्स रस की इच्छा कर रहा है! जिस हृदय में इंदुमति पर निगाह पड़ते ही शृंगार रस की लहरें उठने लगती थीं वह अपनी भविष्य जीवनी पर हास्य करता हुआ अब सदैव के लिए शान्त हुआ चाहता है। आह, इंदुमति के विषय में स्वप्न में भी ऐसे शब्दों के सुनने की क्या प्रभाकर सिंह को आशा हो सकती थी? कदापि नहीं। यह प्रभाकर सिंह की भूल है कि हरदेई की जुबान से विष-भरी अघटित घटना को सुन अनुचित चिंता करने लग गये हैं। वह नहीं जानते कि यह हरदेई वास्तव में हरदेई नहीं है बल्कि कोई ऐयार है। परन्तु हमारे प्रेमी पाठक इस बात को जरूर समझ रहे होंगे कि यह भूतनाथ का शागिर्द रामदास है जिसकी मदद से भूतनाथ ने उस घाटी में पहुँचकर बड़ा ही अनुचित और घृणित व्यवहार किया था। निःसन्देह भूतनाथ ने जमना, सरस्वती और इंदुमति के साथ जो कुछ किया वह ऐयारी के नियम के बिलकुल ही बाहर था। ऐयारी का यह मतलब नहीं है कि वह बेकसूरों के खून से अपने जीवन के

पवित्र चादर में धब्बा लगाए। यदि प्रभाकर सिंह उसकी कार्रवाई का हाल सच्चा-सच्चा सुनते तो न-मालूम उनकी क्या अवस्था हो जाती; परन्तु इस समय रामदास ने उन्हें बड़ा ही धोखा दिया और ऐसी बेढंगी बातें सुनाई कि उनका पवित्र हृदय काँप उठा और इंदुमति तथा कला और विमला की तरफ से उन्हें एकदम घृणा उत्पन्न हो गई। तब क्या प्रभाकर सिंह ऐसे बेवकूफ थे कि एक मामूली ऐयार अथवा लौंडी के मुँह से ऐसी अनहोनी बात सुनकर उन्होंने उस पर कुछ विचार न किया और उसे सच्चा मान कर अपने आपे से बाहर हो गये? नहीं, प्रभाकर सिंह तो ऐसे न थे परन्तु प्रेम ने उनका हृदय ऐसा बना दिया था कि इंदु के विषय में ऐसी बातें सुन कर वे अपने चित्त को सम्हाल नहीं सकते थे। प्रेम का अगाध समुद्र थोड़ी ही-सी आँच लगने से सूख सकता है, और प्रेमी का मन-मुकुर जरा ही से ठेस लगने से चकनाचूर हो जाता है। अस्तु जो हो प्रभाकर सिंह के दिल की उस समय क्या अवस्था थी वे ही ठीक जानते होंगे या उनको देखकर रामदास कुछ-कुछ समझता होगा क्योंकि वह उनके सामने बैठा हुआ उनके चेहरे की तरफ बड़े गौर से देख रहा था।

नकली हरदेई अर्थात् रामदास के दिल की अवस्था भी अच्छी न थी। वह कहने के लिए तो सब कुछ कह गया परन्तु इसका परिणाम क्या होगा यह सोचकर उसका दिल डावाँडोल होने लगा। यद्यपि इस तिलिस्म में फँसकर वह बर्बाद हो चुका था बल्कि थोड़ी देर पहिले तो मौत की भयानक सूरत अपनी आँखों के सामने देख रहा था परन्तु प्रभाकर सिंह पर निगाह पड़ते ही उसकी कायापलट हो गई और उसे विश्वास हो गया कि अब किसी-न-किसी तरह उसकी जान बच जाएगी। परन्तु इंदुमति को बदनाम करके उसका चित्त भी शान्त न रहा और थोड़ी ही देर बाद सोचने लगा कि मैंने यह काम अच्छा नहीं किया। यदि मैं कोई दूसरा ढंग निकालता तो कदाचित् यहाँ से छुटकारा मिल जाता परन्तु अब जल्दी छुटकारा मिलना मुश्किल है क्योंकि मेरी बात का निर्णय किये बिना प्रभाकर सिंह मुझे यहाँ से बाहर नहीं जाने देंगे। अफसोस भूतनाथ को मदद पहुँचाने के खयाल से मैंने व्यर्थ ही इंदु को बदनाम किया। इंदुमति निःसन्देह सती और साध्वी है, उस पर कलंक लगाने का नतीजा मुझे अच्छा न मिलेगा। अफसोस, खैर अब क्या करना चाहिए, जबान से जो बात निकल गई वह तो लौट नहीं सकती। तब? मुझे अपने बचाव के लिए शीघ्र ही कोई तरकीब सोचनी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि इंदुमति, कला और विमला घूमती-फिरती इस समय यहाँ आ पहुँचे। यदि ऐसा हुआ तो बहुत ही बुरा होगा, मेरी कलई खुल जाएगी और मैं तुरन्त ही मारा जाऊँगा। यदि मैं उन सभी को बदनाम न किये होता तो इतना डर न था।

इसी तरह की बातें सोचते हुए रामदास का दिल बड़ी तेजी के साथ उछल रहा था। वह बड़ी बेचैनी से प्रभाकर सिंह की सूरत देख रहा था।

बहुत देर तक तरह-तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकर सिंह ने पुनः नकली हरदेई से सवाल किया

प्रभाकर सिंह : अच्छा यह तो बता कि कला और विमला किसी विषय में किसी दिन तुझसे रंज भी हुई थीं?

हरदेई : **(मन में)** इस सवाल का क्या मतलब? **(प्रकट)** नहीं अगर कभी कुछ रंज हुई थीं तो केवल उसी विषय में जो आपसे बयान कर चुकी हूँ।

इस जवाब को सुनकर प्रभाकर सिंह चुप हो गये और फिर कुछ गौर करके बोले, "खैर कोई बात नहीं देखा जाएगा, यह जगत ही कर्म-प्रधान है, जो जैसा करेगा वैसा फल भोगेगा। यदि वे तीनों इस तिलिस्म के अन्दर हैं तो मैं उन्हें जरूर खोज निकालूँगा, तू सब्र कर और मेरे साथ-साथ रह।"

इतना कहकर प्रभाकर सिंह ने फिर वही छोटी किताब निकाली और पढ़ने लगे जिसे इस तिलिस्म के अन्दर घुसने के पहिले एक दफे पढ़ चुके थे।

प्रभाकर सिंह घंटे भर से ज्यादे देर तक वह किताब पढ़ते रहे और तब तक रामदास बराबर उनके चेहरे की तरफ गौर से देखता रहा। जब वे उस किताब में अपने मतलब की बात अच्छी तरह देख चुके तब यह कहते हुए उठ खड़े हुए कि 'कोई चिंता नहीं, यहाँ हमारे लिए खाने-पीने का सामान बहुत कुछ मिल जाएगा और हम उन सभी को जल्द ही खोज

निकालेंगे। **(नकली हरदेई से)** आ तू भी हमारे साथ चली आ'।

रामदास उस किताब के पढ़ने और इन शब्दों के कहने से समझ गया कि उस किताब में जरूर इस तिलिस्म का ही हाल लिखा हुआ है, अगर किसी तरह वह किताब मेरे हाथ लग जाय तो सहज ही में यहाँ से निकल भागूँ बल्कि और भी बहुत-सा काम निकालूँ।

रामदास अर्थात् नकली हरदेई को साथ लिए हुए प्रभाकर सिंह उसी जंगल में घुस गये और दक्षिण झुकते हुए पूरब की तरफ चल निकले। आधे घंटे तक बराबर चले जाने के बाद उन्हें एक बहुत ऊँची दीवार मिली जिसकी लंबाई का वे कुछ अंदाज नहीं कर सकते थे और न इसकी जाँच करने की उन्हें कोई जरूरत ही थी। इस दीवार में बहुत दूर तक ढूँढ़ने के बाद उन्हें एक छोटा-सा दरवाजा दिखाई दिया। वह दरवाजा लोहे का बना हुआ था मगर उसमें ताला या जंजीर वगैरह का कुछ निशान नहीं दिखाई देता था। रामदास का ध्यान किसी दूसरी तरफ था तथापि वह जानना चाहता था कि यह दरवाजा क्योंकर खुलता है, परन्तु प्रभाकर सिंह ने उसे खोलने के लिए जो कुछ कार्रवाई की वह देख न सका। यकायक दरवाजा खुल गया और प्रभाकर सिंह ने उसके अन्दर कदम रखा तो रामदास को भी अपने साथ आने के लिए कहा।

प्रभाकर सिंह और रामदास दरवाजे के अन्दर जाकर कुछ ही दूर आगे बढ़े होंगे कि दरवाजा पुनः ज्यों-का-त्यों बंद हो गया। प्रभाकर सिंह एक ऐसे बाग में पहुँचे जहाँ केले और अनार के पेड़ बहुतायत के साथ लगे हुए थे और पानी का एक सुन्दर चश्मा भी बड़ी खूबसूरती के साथ चारों तरफ बह रहा था। इस बाग के अन्दर एक छोटा-सा बंगला भी बना हुआ था, जिसमें कई कोठरियाँ थीं और इस बँगले के चारों तरफ संगमरमर के चार चबूतरे बने हुए थे। बस इस बाग में इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था। प्रभाकर सिंह ने वहाँ के पके हुए स्वादिष्ट केले और अनार से पेट भरा और चश्मे का जल पीकर कुछ शान्त हुए तथा नकली हरदेई से भी ऐसा ही करने के लिए कहा।

जब आदमी की तबीयत परेशान होती है तो थोड़ी-सी भी मेहनत बुरी मालूम होती है और वह बहुत जल्द थक जाता है। प्रभाकर सिंह का चित्त बहुत ही व्यग्र हो रहा था और चिंता ने उदास और हताश भी कर दिया था अतएव आज थोड़ी ही मेहनत से थककर वे संगमरमर के चबूतरे पर आराम करने का नियत से लेट गये और साथ ही निद्रादेवी ने भी उन पर अपना अधिकार जमा लिया।

यहाँ प्रभाकर सिंह ने बहुत ही बुरा धोखा खाया। नकली हरदेई की बातों ने उन्हें अधमरा कर ही दिया था और इस दुनिया से वे एक तौर पर विरक्त हो चुके थे, कारण यही था कि उन्होंने नकली हरदेई को पहचाना न था, अगर इन बातों के हो जाने के बाद भी वे जाँच कर लेते तो कदाचित् सम्हल जाते परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया और नकली हरदेई को वास्तव में हरदेई मानकर अपने भाग्य का सब दोष समझ लिया, यही सबब था कि यहाँ पर भी वे रामदास की तरफ से बिलकुल ही बेफिक्र बने रहे और चबूतरे पर लेटकर बेफिक्री के साथ खुर्राटे लेने लगे।

प्रभाकर सिंह को निद्रा के वशीभूत देखकर रामदास चौकन्ना हो गया। उसने ऐयारी के बटुए में से जिसे वह बड़ी सावधानी से छिपाए हुए था, बेहोशी की दवा निकाली और होशियारी से प्रभाकर सिंह को सुंघाया। जब उसे विश्वास हो गया कि अब ये बेहोश हो गये तब उनकी जेब में से वह किताब निकाल ली जिसमें इस तिलिस्म का हाल लिखा हुआ था और जिसे प्रभाकर सिंह दो दफे पढ़ चुके थे।

किताब निकालकर उसने बड़े गौर से थोड़ा-सा पढ़ा तब बड़ी प्रसन्नता के साथ सिर हिलाकर उठ खड़ा हुआ और दिल्लगी के ढंग पर बेहोश प्रभाकर सिंह को झुककर सलाम करता हुआ एक तरफ को चला गया।

बेहोशी का असर दूर हो जाने पर जब प्रभाकर सिंह की आँखें खुलीं तो वे घबड़ाकर उठ बैठे और बेचैनी से चारों तरफ देखने लगे। आसमान की तरफ निगाह दौड़ाई तो मालूम हुआ कि सूर्य भगवान का रथ अस्तांचल को प्राप्त कर चुका है परन्तु अभी अँधकार को मुँह दिखाने की हिम्मत नहीं पड़ती, वह केवल दूर ही से ताक-झाँक रहा है। हरदेई को जब देखना चाहा तो निगाहों की दौड़-धूप से उसका कुछ भी पता न लगा। तब वे लाचार होकर उठ बैठे और उसे इधर-उधर ढूँढ़ने लगे, परन्तु बहुत परिश्रम करने पर भी उसका पता न लगा। आखिर वे पुनः उस चबूतरे पर बैठकर तरह-तरह की

बातें सोचने लगे।

"हरदेई कहाँ चली गई। इस बाग में जहाँ तक संभव था अच्छी तरह खोज चुका मगर उसका कुछ भी पता न लगा। तब वह गई कहाँ? इस बाग के बाहर हो जाना तो उसके लिए बिलकुल ही असंभव है, तो क्या उसे किसी तरह की मदद मिल गई? मगर मदद भी मिली होती या कोई उसका दोस्त यहाँ आया होता तो भी बिना मेरी आज्ञा के यहाँ से चले जाना मुनासिब न था **(अपना सर पकड़ के)** ओफ, सर में बेहिसाब दर्द हो रहा है। मालूम होता है कि जैसे किसी ने बेहोशी की दवा का मुझ पर प्रयोग किया हो। ठीक है, बेशक यह सरदर्द उसी ढंग का है। तो यह हरदेई की सूरत में वह कोई ऐयार तो नहीं था जिसने मुझे धोखा दिया हो। **(घबराहट के साथ जेब टटोल के)** आह वह किताब तो जेब में है ही नहीं! क्या कोई ले गया? या हरदेई ले गई? **(पुनः उस किताब को अच्छी तरह खोज कर)** हैं, वह किताब निःसन्देह गायब हो गई और ताज्जुब नहीं कि वही किताब लेने की नियत से उसे ऐयार ने मुझे बेहोशी की दवा दी हो और इसी किताब की मद पाकर यहाँ से चला गया हो। अगर वास्तव में ऐसा हुआ तो बहुत ही बुरा हुआ और मैंने बेढ़ब धोखा खाया। लेकिन अगर वह वास्तव में कोई ऐयार था तो कला, विमला और इंदुमति वाली बात भी उसने झूठ ही कही होगी। ऐसी अवस्था में मैं उसका पता लगाए बिना नहीं रह सकता और इस काम में सुस्ती करना अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मारना है।"

इत्यादि बातों को सोच कर प्रभाकर सिंह पुनः उठ खड़े हुए नकली हरदेई को खोजने लगे। अबकी दफे उनका खोजना बड़ी सावधानी के साथ था यहाँ तक कि एक-एक पेड़ के नीचे और खोज-खोज कर वे उसकी टोह लेने लगे। यकायक केलों के झुरमुट में उन्हें कोई कपड़ा दिखाई दिया, जब उसके पास गये और अच्छी तरह देखा तो मालूम हुआ कि वह हरदेई का कपड़ा है। मुलाकात होने के समय वह यही कपड़ा पहिने हुए थी। और भी अच्छी तरह देखने पर मालूम हुआ कि वह साड़ी का एक भाग है और खून से तर हो रहा है। वहाँ जमीन और पेड़ों के निचले हिस्से पर भी खून के छींटे दिखाई दिये।

अब प्रभाकर सिंह का खयाल बदल गया और वह सोचने लगा कि क्या यहाँ कोई हमारा दुश्मन आ पहुँचा और हरदेई उसके हाथ से मारी गई या जख्मी हुई! ताज्जुब नहीं कि वह हरदेई को गिरफ्तार भी कर ले गया हो। परन्तु यहाँ दूसरे आदमी का आना बिलकुल ही असंभव है? हाँ हो सकता है कि कला, विमला और इंदु यहाँ आ पहुँची हों और उन्होंने हरदेई को दुश्मन समझ के उसका काम तमाम कर दिया हो? ईश्वर ही जाने क्या मामला है, पर वह तिलिस्मी किताब मेरे कब्जे से निकल गई, यह बहुत ही बुरा हुआ।

इत्यादि बातें सोचते हुए प्रभाकर सिंह बहुत ही परेशान हो गये। वे और भी घूम-फिरकर हरदेई के विषय में कुछ पता लगाने का उद्योग करते परन्तु रात की अंधेरी घिर आने के कारण कुछ भी न कर सके। साथ ही इसके सर्दी भी मालूम होने लगी और आराम करने के लिए वे आड़ की जगह तलाश करने लगे।

आज की रात प्रभाकर सिंह ने उसी बाग के बीच वाले बँगले में बिताई और तरह-तरह की चिंता में रात-भर जागते रहे। तिलिस्मी किताब के चले जाने का दुःख तो उन्हें था ही परन्तु इस बात का खयाल उन्हें बहुत ज्यादे था कि अगर वह किताब किसी दुश्मन के हाथ में पड़ गई होगी तो वह इस तिलिस्म में पहुँचकर बहुत कुछ नुकसान पहुँचा सकेगा और यहाँ की बहुत-सी अनमोल चीजें भी ले जाएगा।

यद्यपि वह किताब इस तिलिस्म की चाभी न थी और न उसमें यहाँ का पूरा-पूरा हाल ही लिखा हुआ था तथापि वह यहाँ के मुख्तसर हाल का गुटका जरूर थी और उसमें की बहुत-सी बातें इन्द्रदेव ने जरूरी समझ कर नोट करा दी थीं। प्रभाकर सिंह उसे कई दफे पढ़ चुके थे परन्तु फिर भी उसके पढ़ने की जरूरत थी। इस समय अपनी भूल से वे शर्मिन्दा हो रहे थे और सोचते थे कि इस विषय में इन्द्रदेव के सामने मुझे बेवकूफ बनाना पड़ेगा।

ज्यों-त्यों करके रात बीत गई। सवेरा होते ही प्रभाकर सिंह बँगले के बाहर निकले। मामूली कामों से छुट्टी पाकर चश्मे के जल से स्नान किया और संध्या-पूजा करके पुनः बँगले के अन्दर चले गये। कई कोठरियों में घूमते-फिरते वे एक ऐसी

कोठरी में पहुँचे जिसकी लंबाई-चौड़ाई यहाँ की सब कोठरियों से ज्यादे थी। यहाँ चारों तरफ की दीवारों में बड़ी-बड़ी अलमारियाँ बनी हुई थीं और उन सभी के ऊपर नंबर लगे थे। सात नंबर की अलमारी उन्होंने किसी गुप्त रीति से खोली और उसके अन्दर चले गये। नीचे उतर जाने के लए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं अस्तु उसी राह से प्रभाकर सिंह नीचे उतर गये और एक दालान में पहुँचे। बटुए में से मोमबत्ती निकालकर रोशनी की तो मालूम हुआ कि यह दालान लंबा-चौड़ा है और यहाँ की जमीन में बहुत-सी लोहे की नालियाँ बनी हुई हैं जो सड़क का काम देने वाली हैं तथा उन पर छोटे-छोटे बहुत-सी गाड़ियाँ रखी हुई हैं जिन पर सिर्फ एक आदमी के बैठने की जगह है। दालान के चारों तरफ दीवारों में बहुत-से रास्ते बने हुए हैं जिनमें से होकर वे लोहे की सड़कें न-मालूम कहाँ तक चली गई हैं।

गौर से देखने पर प्रभाकर सिंह को मालूम हुआ कि उन छोटी-छोटी गाड़ियों पर पीठ की तरफ नंबर लगे हुए हैं और उन नंबरों के नीचे कुछ लिखा हुआ भी है। प्रभाकर सिंह बड़ी उत्कंठा से पढ़ने लगे। एक गाड़ी पर लिखा हुआ था 'जमानिया दुर्ग' दूसरी पर लिखा हुआ था 'खास बाग' तीसरी पर लिखा हुआ था 'चुनार विक्रमी केंद्र चौथी पर लिखा हुआ था 'केंद्र' इसी तरह किसी पर 'मुकुट' किसी पर 'सूर्य' और किसी पर 'सभा-मंडप' लिखा हुआ था, मतलब यह है कि सभी गाड़ियों पर कुछ-न-कुछ लिखा हुआ था। सवार होने के साथ ही वह गाड़ी चलने लगी। दालान के बाहर हो जाने पर मालूम हुआ कि वह किसी सुरंग के अन्दर जा रही है। जैसे-जैसे वह गाड़ी आगे बढ़ती जाती थी तैसे-तैसे उसकी चाल भी तेज होती जाती थी और हवा के झपेटे में भी अच्छी तरह लग रहे थे, यहाँ तक कि उनके हाथ की मोमबत्ती बुझ गई और हवा के झपेटों से मजबूर होकर उन्होंने अपनी दोनों आँखें बंद कर लीं।

आधे घंटे तक तेजी के साथ चले जाने के बाद गाड़ी एक ठिकाने पहुँचकर रुक गई। प्रभाकर सिंह ने आँखें खोलकर देखा तो उजाला मालूम हुआ। वे गाड़ी से नीचे उतर पड़े और गौर से चारों तरफ देखने लगे। वह स्थान ठीक उसी तरह का था जैसा कि कला और विमला के रहने का स्थान था और उसे देखते ही प्रभाकर सिंह को शक हो गया कि हम पुनः उसी ठिकाने पहुँच गये जहाँ कला और विमला और इंदु मुलाकात हुई थी परन्तु वहाँ की जमीन पर पहुँचकर उनका खयाल बदल गया और वे पुनः दूसरी निगाह से उस स्थान को देखने लगे।

यहाँ भी ठीक उसी ढंग का बँगला बना हुआ था। जैसा कि कला और विमला के रहने वाली घाटी में था मगर इसके पास मौलसिरी (मालश्री) के पेड़ न थे। दक्षिण तरफ पहाड़ के ऊपर चढ़ जाने के लिए सीढ़ियाँ दिखाई दे रही थीं और जहाँ पर वह सीढ़ियाँ खत्म हुई थीं वहाँ एक सुन्दर मंदिर बना हुआ था जिसके ऊपर का सुनहरा शिखर ध्वजा और त्रिशूल सूर्य की रोशनी पड़ने से बड़ी तेजी के साथ चमक रहा था।

जब प्रभाकर सिंह गाड़ी से नीचे उतर पड़े तो वह गाड़ी पीछे की तरफ से तेजी के साथ चली गई जिस तेजी के साथ यहाँ आई थी। प्रभाकर सिंह चारों तरफ अच्छी तरह देखने के बाद दक्षिण तरफ वाली पहाड़ी के नीचे चले गये और सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। जब तमाम सीढ़ियाँ खतम कर चुके तब उस मंदिर के अन्दर जाने वाला फाटक मिला अस्तु प्रभाकर सिंह उस फाटक के अन्दर चले गये।

इस पहाड़ी के ऊपर चढ़ने वाला इस मंदिर के अन्दर जाने के सिवाय और कहीं भी नहीं जा सकता था क्योंकि मंदिर के चारों तरफ बहुत दूर तक फैली हुई ऊँची-ऊँची जालीदार चारदीवारी थी जिसके उत्तर तरफ सिर्फ एक फाटक था जो इन सीढ़ियों के साथ मिला हुआ था अर्थात् इस सिलसिले की कई सीढ़ियाँ फाटक के अन्दर तक चली गई थी। सीढ़ियों के अगल-बगल से भी कोई रास्ता या मौका ऐसा न था जिसे लाँघ या कूदकर आदमी दूसरी तरफ निकल जा सके। यह पहाड़ बहुत बड़ा और ऊपर से प्रशस्त था बल्कि यह कह सकते हैं कि ऊपर से कोसों तक चौड़ा था परन्तु इस मंदिर में से न तो कोई उस तरफ जा सकता था और न उस तरफ से कोई इस मंदिर के अन्दर आ सकता था।

प्रभाकर सिंह ने उस मंदिर और चारदीवारी को बड़े गौर से देखा। मंदिर के अन्दर किसी देवता की मूर्ति न थी, केवल एक फव्वारा बीचोंबीच बना हुआ था और दीवारों पर तरह-तरह की सुन्दर तस्वीरें लिखी हुई थीं। मंदिर के आगे सभामंडल में लोहे के बड़े-बड़े सन्दूक रखे हुए थे मगर उनमें ताले का स्थान बिलकुल खाली था अर्थात् यह नहीं जाना जाता था कि इसमें ताला लगाने की भी कोई जगह है या नहीं।

उन लोहे के सन्दूकों को भी अच्छी तरह देखते प्रभाकर सिंह मंदिर के बाहर निकले और खड़े होकर कुछ सोच ही रहे थे कि उस जालीदार चारदीवारी के बाहर मैदान में मंदिर की तरफ आती हुई कई औरतों पर निगाह पड़ी। प्रभाकर सिंह घबरा कर दीवार के पास चले गए और इसके सूराखों में से उन औरतों को देखने लगे। इस दीवार के सूराख बहुत बड़े-बड़े थे, यहाँ तक कि आदमी का हाथ बखूबी उन सूराखों के अन्दर जा सकता था।

प्रभाकर सिंह ने देखा कि कला, विमला और इंदुमति धीरे-धीरे इसी मंदिर की तरफ चली आ रही हैं और उन तीनों के चेहरे से हद दरजे की उदासी और परेशानी टपक रही है। उस समय प्रभाकर सिंह को हरदेई वाली बात भी याद आ गई मगर क्रोध आ जाने पर भी उनका दिल उन तीनों के पास गये बिना बहुत बेचैन होने लगा। तथा वे दीवार के पार जाकर उन सभों से मिल नहीं सकते थे तथापि सोचने लगे कि अब इन लोगों के साथ कैसा बर्त्ताव करना चाहिए? हरदेई की जुबानी जो कुछ सुना है उसे साफ-साफ कह देना चाहिए या धीरे-धीरे सवाल करके उन बातों की जाँच करनी चाहिए।

धीरे-धीरे चलकर वे तीनों औरतें भी मंदिर की दीवार के पास आ पहुँची और एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगीं।

इंदुमति : **(कला से)** बहिन, अभी तक समझ में नहीं आया कि हम लोग किस तरह इस तिलिस्म के अन्दर आकर फँस गई।

कला : मेरी बुद्धि भी किसी बात पर नहीं जमती और न खयाल ही को आगे बढ़ने का मौका मिलता है। अगर कोई दुश्मन भी हमारी घाटी में आ पहुँचा होता तो समझते कि यह सब उसी की कार्रवाई है मगर..

विमला : भला यह कैसे कह सकते हैं कि कोई दुश्मन वहाँ नहीं आया? अगर नहीं आया तो यह मुसीबत किसके साथ आई? हाँ यह जरूर कहेंगे कि प्रकट में सिवाय प्रभाकर सिंह जी के और कोई आया हुआ मालूम नहीं हुआ और न इसी बात का पता लगा कि हमारी लौंडियों में से किसी की नीयत खराब हुई या नहीं।

इंदुमति : **(लंबी साँस लेकर)** हाय! इस बात का भी कुछ पता नहीं लगा कि उन पर **(प्रभाकर सिंह)** क्या बीती? एक तो लड़ाई में जख्मी होकर वे स्वयं कमजोर हो रहे थे, दूसरे यह नई आफत और आ पहुँची! ईश्वर ही कुशल करे!

विमला : हाँ बहिन, मुझे भी जीजाजी के विषय में बड़ी चिंता लगी हुई है परन्तु साथ ही इसके मेरे दिल में इस बात का भी बड़ा ही खटका लगा हुआ है कि उन्होंने बदन खोलकर अपने जख्म जो घोर संग्राम में लगे थे हम लोगों को क्यों नहीं देखने दिये! इसके अतिरिक्त हम लोगों के भोजन में बेहोशी की दवा देने वाला कौन था? इस बात को जब मैं विचारती हूँ...**(चौंककर)** इस चारदीवारी के अन्दर कौन है?

कला : अरे, यह तो जीजाजी मालूम पड़ते हैं!

बात करते-करते विमला की निगाह मंदिर की चारदीवारी के अन्दर जा पड़ी जहाँ प्रभाकर सिंह खड़े थे और नजदीक होने के कारण इन सभों की बातें सुन रहे थे। दीवार के जालीदार सूराख बहुत बड़े होने के कारण इनका चेहरा विमला को अच्छी तरह दिखाई दे गया था।

कला, विमला और इंदु लपक कर प्रभाकर सिंह के पास आ गईं। प्रभाकर सिंह भी अपने दिल का भाव छिपाकर इन लोगों से बातचीत करने लगे।

प्रभाकर सिंह : तुम तीनों यहाँ पर किस तरह आ पहुँचीं? मैं तुम लोगों की खोज में बहुत दिनों से बेतरह परेशान हो रहा हूँ। लड़ाई से लौटकर जब मैं तुम्हारी घाटी में गया तो उसे बिलकुल ही उजाड़ देखकर मैं हैरान रह गया।

इंदुमति : यही बात मैं आपसे पूछने वाली थी मगर..

विमला : ताज्जुब की बात है कि आप कहते हैं कि लड़ाई से लौटकर जब उस घाटी में आये तो उसे बिलकुल उजाड़ पाया। क्या लड़ाई से लौटने के बाद आप हम लोगों से नहीं मिले? और आपको घायल देखकर हम लोगों ने इलाज नहीं करना चाहा? या यह कहिए कि आपका जख्मी घोड़ा आपको लड़ाई में से बचाकर भागता हुआ क्या हमारी घाटी के बाहर तक नहीं आया था!

प्रभाकर सिंह : नमालूम तुम क्या कह रही हो? मैं लड़ाई से भाग कर नहीं आया बल्कि प्रसन्नता के साथ महाराज सुरेन्द्रसिंह से विदा होकर तुम्हारी तरफ आया था।

इंदुमति : **(ऊँची साँस लेकर)** हाय, बड़ा ही अनर्थ हुआ! हम लोग बेढ़ब धोखे में डाले गये? हाय, आपका जख्मों को छिपाना हमें खुटके में डाल चुका था, परन्तु प्रेम! तेरा बुरा हो! तूने ही मुझे सम्हलने नहीं दिया।

प्रभाकर सिंह : **(मन में)** मालूम होता है कि हरदेई का कहना ठीक है और कोई दूसरा गैर आदमी मेरी सूरत बन कर इन लोगों के पास जरूर आया था, परन्तु इंदु के भाव से यह नहीं जाना जाता कि इसने जान-बूझकर उसके साथ..अस्तु जो हो, संभव है कि यह अपने बचाव के लिए मुझे बनावटी भाव दिखा रही हो, हाँ यह निश्चय हो गया कि हरदेई एकदम झूठी नहीं है, कुछ-न-कुछ दाल में काला अवश्य है। **(प्रकट)** मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कर रही हो, खुलासा कहते तो मालूम हो और विचार किया जाय कि मामला क्या है? क्या तुम्हारे कहने का वास्तव में यही मतलब है कि मैं लड़ाई से लौटकर तुम लोगों से मिल चुका हूँ?

इंदुमति : बेशक्! आपका जख्मी घोड़ा आपके शरीर को बचाता हुआ वहाँ तक ले आया था और हम लोग आपको जबकि आप बिलकुल बेहोश थे उठा कर घाटी के अन्दर ले आए थे।

प्रभाकर सिंह : मगर ऐसा नहीं हुआ। हरदेई ने तुम लोगों का पर्दा खोलते समय यह भी कहा था कि कोई गैर आदमी प्रभाकर सिंह बन कर इस घाटी में आया था और बहुत दिनों तक इंदुमति ने उनके साथ..

इंदुमति : **(बात काट कर)** क्या यह बात हरदेई ने आपसे कही थी?

प्रभाकर सिंह : हाँ बेशक्! साथ ही इसके **(बिमला की तरफ देख के)** तुम लोगों के गुप्त प्रेम का हाल भी हरदेई ने मुझसे कह दिया था।

इंदुमति : हाय! अब मैं क्या करूँ? **(आसमान की तरफ देख के)** हे सर्वशक्तिमान जगदीश! तू ही मेरा न्याय करने वाला है!

इतना कहते-कहते इंदुमति की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी।

विमला : मालूम होता है कि हरदेई ने मेरे साथ दुश्मनी की।

प्रभाकर सिंह : बेशक्।

विमला : और उसी ने घाटी में आपसे मिल कर..

प्रभाकर सिंह : **(बात काट कर)** नहीं, वह मुझसे घाटी में नहीं मिली बल्कि तुम लोगों की सताई हुई हरदेई इसी तिलिस्म के अन्दर मुझसे मिली थी। बेशक् उसने तुम लोगों का भंडा फोड़ के, तुम लोगों के साथ बड़ी दुश्मनी की, मगर वह ऐसा क्यों न करती? तुम लोगों ने भी तो उसके साथ बड़ी बेदर्दी का बर्त्ताव किया था।

प्रभाकर सिंह के मुँह से इतना सुनते ही कला, विमला और इंदुमति ने अपना माथा ठोंका और इसके बाद इंदुमति ने एक लंबी साँस लेकर प्रभाकर सिंह से कहा। "अगर मुझमें सामर्थ्य होती तो मैं जरूर अपना कलेजा फाड़कर आपको दिखाती, हाँ जरूरी दिखाती, नहीं-नहीं दिखाऊँगी, मेरे में इतनी सामर्थ्य है, परन्तु अफसोस! हम लोगों के पास इस समय कोई हर्बा नहीं है, और आप ऐसी जगह खड़े हैं जहाँ..

विमला : अच्छा कोई चिंता नहीं जिसने धर्म को नहीं छोड़ा है ईश्वर आपका मददगार है! आप पहिले हम लोगों के पास आइए फिर जो कुछ होगा देखा जाएगा।

प्रभाकर सिंह : मैं भी यही चाहता हूँ परन्तु क्योंकर तुम लोगों के पास आ सकता हूँ, यह विचारने की बात है।

विमला : आप यदि उस सामने वाली पहाड़ी के ऊपर चढ़ते तो ऊपर-ही-ऊपर यहाँ तक आ जाते जहाँ मैं खड़ी हूँ और अब भी आप ऐसा कर सकते हैं, या आज्ञा कीजिए तो हम लोग स्वयं उस राह से घूमकर आपके पास..

विमला और कुछ कहना ही चाहती थी कि राक्षस की तरह की भयानक सूरत का एक आदमी हाथ में नंगी तलवार लिए हुए कला, विमला और इंदुमति की तरफ आता प्रभाकर सिंह को दिखाई पड़ा क्योंकि वह तीनों के पीछे की तरफ से आ रहा था जिधर प्रभाकर सिंह का सामना पड़ता था।

प्रभाकर सिंह : **(ताज्जुब के साथ)** विमला, क्या बता सकती हो कि वह आदमी कौन है जो तुम लोगों की तरफ आ रहा है?

विमला, कला और इंदुमति ने घबड़ाकर पीछे की तरफ देखा और तीनों एकदम चिल्ला उठीं। विमला ने चिल्लाते हुए आँसू गिराते हुए प्रभाकर सिंह से कहा। "बचाइए बचाइए, आप जल्दी यहाँ आकर हम लोगों की रक्षा कीजिए, यही दुष्ट हम लोगों के खून का प्यासा है।"

इतना कहकर वे वहाँ से भागने की चेष्टा करने लगीं परन्तु भागकर जा ही कहाँ सकती थीं। बात-की-बात में वह दुष्ट इन तीनों के पास आ पहुँचा और अपनी जलती हुई क्रोध से भरी आँखों से विमला की तरफ देख कर बोला : "क्यों कम्बख्त! अब बता कि तू मेरे हाथ से बचकर कहाँ जा सकती है? आज मैं तुम लोगों के खून से अपनी प्यासी तलवार को संतुष्ट करूँगा और..."

बस इससे ज्यादे उसने क्या कहा सो प्रभाकर सिंह सुन न सके और न सुनने के लिए वे वहाँ खड़े रह सके। इस पहाड़ी के नीचे उतरकर और सामने वाले पहाड़ पर चढ़कर ऊपर उन लोगों के पास पहुँचने की नीयत से प्रभाकर सिंह दौड़े और तेजी के साथ सीढ़ियाँ उतरने लगे।

प्रभाकर सिंह का मन इस समय बहुत ही व्यग्र हो रहा था और वे सोचते जाते थे कि क्या वहाँ पहुँचते-पहुँचते तक मैं उन तीनों को जीती पाऊँगा और क्या वे दुष्ट मेरा मुकाबला करने के लिए वहाँ मुझे तैयार मिलेगा!

4

अब देखना चाहिए कि नागर से विदा होकर भूतनाथ कहाँ गया और उसने क्या कार्रवाई की।

नागर के मकान से उतरकर भूतनाथ सीधे दक्खिन की तरफ रवाना हुआ और रात-भर बराबर चलता गया। सुबह होते-होते तक वह एक पहाड़ के दालान में पहुँचा जिसके पास एक सुन्दर तालाब था। उस तालाब पर भूतनाथ ठहर गया और कुछ देर आराम करने के बाद जरूरी कामों से निपटने के फेर में पड़ा। जब स्नान-संध्या इत्यादि से छुट्टी पा चुका तो बटुए में से मेवा निकाल कर खाया, जल पिया और इसके बाद पहाड़ पर चढ़ने लगा।

यहाँ से पहाड़ों का सिलसिला बराबर बहुत दूर तक चला गया। भूतनाथ पहाड़ के ऊपर चढ़कर दोपहर दिन चढ़े तक बराबर चलता गया। इसी बीच में उसने कई बड़े-बड़े और भयानक जंगल पार किये और अंत में वह एक गुफा के मुहाने पर पहुँचा जहाँ साखू और शीशम के बड़े-बड़े पेड़ों से अँधकार हो रहा था। भूतनाथ वहाँ एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और किसी का इंतजार करने लगा।

भूतनाथ को वहाँ बैठे हुए घंटे-भर से कुछ ज्यादे देर हुई होगी कि उसका एक शागिर्द वहाँ आ पहुँचा जो इस समय एक देहाती जमींदार की सूरत बना हुआ था। उसने भूतनाथ को, जो इस समय अपनी असली सूरत में था, देखते ही प्रणाम किया और बोला, "मैं श्यामदास हूँ, आपको खोजने के लिए काशी गया हुआ था।"

भूतनाथ सिंहः आओ हमारे पास बैठ जाओ और बोलो कि वहाँ तुमने क्या-क्या देखा और किन-किन बातों का पता लगाया।

श्यामदास : वहाँ बहुत कुछ टोह लेने पर मुझे मालूम हुआ कि प्रभाकर सिंह सही-सलामत लड़ाई पर से लौट आये और जब वे उस घाटी में गये तो जमना, सरस्वती और इंदुमति को न पाकर बहुत ही परेशान हुए। इसके बाद वे इन्द्रदेव के पास गये और अपने दोस्त गुलाबसिंह के साथ कई दिनों तक वहाँ मेहमान रहे।

भूतनाथ सिंहः ठीक है यह खबर मुझे भी वहाँ लगी थी, मैं इन्द्रदेव को देखने के लिए वहाँ गया था क्योंकि आजकल वे बीमार पड़े हुए हैं। अच्छा तब क्या हुआ?

श्यामदास : इसके बाद मैं जमानिया गया, वहाँ मालूम हुआ कि कुँअर गोपाल सिंह की शादी के बारे में तरह-तरह की खिचड़ी पक रही है जिसका खुलासा हाल मैं फिर किसी समय आपसे बयान करूँगा। इसके अतिरिक्त आज पन्द्रह दिन से भैया राजा **(गोपालसिंह के चाचा)** कहीं गायब हो गये हैं। बाबाजी **(दारोगा)** वगैरह उनकी खोज में लगे हुए हैं, बहुत-से जासूस भी चारों तरफ भेजे गये हैं, मगर अभी तक उनका पता नहीं लगा।

भूतनाथ : ऐसी अवस्था में कुँअर गोपालसिंह तो बहुत ही परेशान और दुखी हो रहे होंगे!

श्यामदास : होना तो ऐसा ही चाहिए था मगर उनके चेहरे पर उदासी और तरद्दुद की कोई निशानी मालूम नहीं पड़ती और इस बात से लोगों को बड़ा ही ताज्जुब हो रहा है। आज तीन-चार दिन हुए होंगे कि कुँअर गोपालसिंह इन्द्रदेव से मिलने के लिए 'कैलाश' गये थे, दोपहर तक रहकर वह पुनः जमानिया लौट गये। सुनते हैं कि इन्द्रदेव भी दो-चार दिन में जमानिया जाने वाले हैं।

भूतनाथ : इन्द्रदेव के बारे में जो कुछ सुना करो उसका निश्चय मत माना करो, वह बड़े विचित्र आदमी हैं और यद्यपि मुझे विश्वास है कि वह मेरे साथ कभी कोई बुराई न करेंगे मगर फिर भी मैं उनसे डरता हूँ। दूसरी बातों को जाने दो उनके चेहरे से इस बात का भी शक नहीं लगता कि आज वह खुश हैं या नाखुश।

श्यामदास : इन्द्रदेव जी चाहे आपके दोस्त हों मगर इस बात का शक जरूर है कि वे जमना और सरस्वती को मदद दे

रहे हैं।

भूतनाथ : शक क्या मुझे तो इस बात का यकीन-सा हो रहा है परन्तु हजार कोशिश करने पर भी इसका मुझे कोई पक्का सबूत नहीं मिला। अभी तक मैं इस विषय का भेद जानने के लिए बराबर कोशिश कर रहा हूँ।

श्यामदास : ठीक है परन्तु मैं इसी बात को एक बहुत बड़ा सबूत समझता हूँ कि जमना और सरस्वती उस अद्भुत घाटी में रहती हैं जो एक छोटा-सा तिलिस्म समझा जा सकता है, क्या इन्द्रदेव के अतिरिक्त किसी दूसरे आदमी ने उन्हें ऐसी सुन्दर घाटी दी होगी? मुझे तो ऐसा विश्वास नहीं होता।

भूतनाथ : जो हो, मगर फिर भी यह एक अनुमान है, प्रमाण नहीं। खैर इस विषय पर इस समय बहस करने की कोई जरूरत नहीं, मैं आज किसी दूसरे ही तरद्दुद में पड़ा हुआ हूँ जिसके सबब से मेरी तबीयत भी बेचैन हो रही है।

श्यामदास : वह क्या?

भूतनाथ : तुम जानते हो कि तुम्हारा भाई रामदास की मदद से मैं जमना, सरस्वती, इंदुमति तथा उनकी लौंडियों को घाटी में एक कुएँ के अन्दर ढकेल कर जहन्नुम में पहुँचा चुका हूँ।

श्यामदास : जी हाँ, उसी में मेरा भाई भी तो...

भूतनाथ : बेशक् मुझे रामदास के लिए बड़ी चिंता लगी हुई है मगर जिस अवस्था में मैं रामदास को देख कर लौटा हूँ उसे विचारने से खयाल होता है कि जमना, सरस्वती और इंदुमति जीती बच गई हों तो कोई ताज्जुब नहीं।

श्यामदास : संभव है कि ऐसा ही हुआ हो, परन्तु जीती बच जाने पर भी मैं समझता हूँ कि वे सब कुछ दिन बाद भूख और प्यास की तकलीफ से मर गई होंगी।

भूतनाथ : नहीं ऐसा नहीं हुआ, अभी कल ही मैंने काशी में सुना है कि वे तीनों प्रभाकर सिंह के साथ बरना नदी के किनारे घूमती-फिरती देखी गई हैं।

श्यामदास : **(चौंक कर)** हैं! अगर ऐसी बात है तो उन लोगों की तरह मेरा भाई भी बच कर निकल भागा होगा!!

भूतनाथ : होना तो ऐसा ही चाहिए था मगर रामदास अभी तक मुझसे नहीं मिला।

श्यामदास : तो आपको किसी जुबानी ऐसा सुना था?

इसके जवाब में भूतनाथ ने बाबू साहब, नागर तथा चन्द्रशेखर का कुछ हाल बयान किया और कहा

भूतनाथ : जमना, सरस्वती और इंदुमति के विषय में मेरा खयाल है कि रामलाल **(बाबू साहब)** भी कुछ जानता होगा, मगी उस समय डाँट-डपट बताने पर भी उसने मुझे कुछ नहीं कहा।

श्यामदास : अगर आप आज्ञा दें और बुरा न मानें क्योंकि वह आपका साला है तो मैं उसे अपने फँदे में फँसाकर असल भेद का पता लगा लूँ। मुझे विश्वास है कि अगर जमना और सरस्वती छूटकर आ गई हैं तो मेरा भाई भी उस आफत से जरूर बच गया होगा।

इतने में भूतनाथ की निगाह मैदान की तरफ जा पड़ी। एक आदमी को अपनी तरफ आते देखकर वह चौंका और बोला

भूतनाथ : देखो-देखो, वह कौन आ रहा है!!

श्यामदास : **(मैदान की तरफ देखकर)** हाँ कोई आ रहा है! ईश्वर करे मेरा भाई रामदास ही हो!

भूतनाथ : मेरे पक्षपाती के सिवाय दूसरा कोई यहाँ कब आ सकता है?

देखते-ही-देखते वह आदमी भूतनाथ के पास आ पहुँचा और झुककर सलाम करने के बाद बोला,"मेरा नाम रामदास है, पहिचान के लिए मैं 'चंचल' शब्द का परिचय देता हूँ। ईश्वर की कृपा से मेरी जान बच गई और मैं राजी-खुशी आप की खिदमत में हाजिर हो गया, खाली हाथ नहीं बल्कि अपने साथ एक ऐसी चीज लाया हूँ जिसे देखकर आप फड़क उठेंगे और बार-बार मेरी पीठ ठोकेंगे।"

भूतनाथ : **(प्रसन्न होकर)** वाह, वाह! तुम जो तारीफ काम करो वह थोड़ा है! तुम्हारे जैसा नेक, ईमानदार और धूर्त शागिर्द पाकर मैं दुनिया में अपने को धन्य मानता हूँ। आओ मेरे पास बैठ जाओ और कहो कि किस तरह तुम्हारी जान बची और मेरे लिए क्या तोहफा लाए हो?

रामदास परिचय लेने के बाद अपने भाई श्यामदास के गले मिला और भूतनाथ के पास बैठकर इस तरह बातचीत करने लगा

रामदास : मेरी जान ऐसी दिल्लगी के साथ और ऐसे ढंग से बची है कि उसे याद करके मैं बार-बार खुश हुआ करता हूँ।

श्यामदास : मैंने अभी-अभी ओस्ताद जी से यही बात कही थी कि अगर जमना, सरस्वती और इंदु बचकर निकल आई हैं तो मेरा भाई भी जरूर बचकर निकल आया होगा।

रामदास : **(ताज्जुब के ढंग पर)** सो क्या! जमना, सरस्वती और इंदुमति छूट कर कैसे निकल आई?

भूतनाथ : कैसे छूट कर निकल आई सो तो मैं नहीं जानता इतना सुना है कि तीनों प्रभाकर सिंह के साथ काशी में बरना नदी के किनारे टहलती हुई देखी गई!

रामदास : कब देखी गई हैं?

भूतनाथ : आज आठ-दस दिन हुए होंगे।

रामदास : और उन्हें देखा किसने?

भूतनाथ : मेरे साले रामलाल ने।

रामदास : झूठ, बिलकुल झूठ! अगर आपने स्वयं अपनी आँखों से देखा होता तब भी मैं न मानता।

भूतनाथ : सो क्यों?

रामदास : अभी चौबीस घंटे भी नहीं हुए होंगे कि मैं उन्हें तिलिस्म के अन्दर फँसी हुई छोड़कर आया हूँ।

भूतनाथः किस तिलिस्म में?

रामदास : उसी तिलिस्म में, जिस कुएँ में आपने उन तीनों को फेंक दिया था। वह उसी घाटी वाले तिलिस्म का एक रास्ता है। उसके अन्दर गया हुआ आदमी मरता नहीं बल्कि तिलिस्म के अन्दर फँस जाता है, यही सबब है कि उन लोगों के साथ ही मैं भी उस तिलिस्म में जा फँसा। कुछ दिन बाद प्रभाकर सिंह उन तीनों की खोज में उस तिलिस्म के अन्दर गये और वहाँ यकायक मुझसे मुलाकात हो गई। मुझे देखकर वे धोखे में पड़ गये क्योंकि ईश्वर की प्रेरणा से मैं

उस समय भी हरदेई की सूरत में था। प्रभाकर सिंह ने मुझसे कई तरह के सवाल किए और मैंने उन्हें खूब ही धोखे में डाला। उनके पास एक छोटी-सी किताब थी जिसमें उस तिलिस्म का हाल लिखा हुआ था। उसी किताब की मदद से वे तिलिस्म के अन्दर गए थे। मैंने धोखा देकर यह किताब उनकी जेब में से निकाल ली और उसी की मदद से मुझे छुटकारा मिला। तिलिस्म के निकलते ही मैं सीधा आपसे मिलने के लिए इस तरफ रवाना हुआ और उन सभी को तिलिस्म के अन्दर ही छोड़ दिया। **(बटुए में से किताब निकाल और भूतनाथ के हाथ में देकर)** देखिए यही वह तिलिस्मी किताब है, अब आप इसकी मदद से बखूबी उस तिलिस्म के अन्दर जा सकते हैं।

भूतनाथ : **(किताब देखकर और दो-चार पन्ने उलट-पुलट कर रामदास की पीठ ठोंकता हुआ)** शाबाश, तुमने वह काम किया जो आज मेरे किए भी कदाचित् नहीं हो सकता था! वाह वाह वाह! अब मेरे बराबर कौन हो सकता है? अच्छा अब तुम हमारे साथ इस खोह के अन्दर चलो और कुछ खा-पीकर निश्चिन्त होने के बाद मुझसे खुलासे-तौर पर कहो कि उस कुएँ में जाने के बाद क्या हुआ! निःसंदेह तुमने बड़ा काम किया, तुम्हारी जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है! अच्छा यह तो बताओ कि यह तिलिस्मी किताब प्रभाकर सिंह को कहाँ से मिली, क्या इस बात का भी कुछ पता लगा?

रामदास : इसके विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता।

भूतनाथ : खैर इसके जाँच करने की कुछ विशेष जरूरत भी नहीं है।

रामदास : मैं समझता हूँ कि आप उस तिलिस्म के अन्दर जरूर जाएँगे और जमना, सरस्वती तथा इंदुमति को अपने कब्जे में करेंगे।

भूतनाथ : जरूर, क्या इसमें भी कोई शक है। अभी घंटे-डेढ़-घंटे में हम और तुम यहाँ से रवाना हो जाएँगे और आधी रात बीतने के पहिले ही वहाँ जा पहुँचेंगे। अब तो हम लोग पास आ गये हैं सिर्फ तीन-चार घंटे का ही रास्ता है। आज के पहिले जमना और सरस्वती का इतना डर न था जितना अब है। अब उनके खयाल से मैं काँप उठता हूँ क्योंकि पहिले तो सिवाय दयाराम के मारने के और किसी तरह का इल्जाम वे मुझ पर नही लगा सकती थीं और उस बात का सबूत मिल भी नहीं सकता था क्योंकि मैंने ऐसा किया ही नहीं, परन्तु अब तो वे लोग कई तरह के इल्जाम मुझ पर लगा सकती हैं और बेशक् इधर मैंने उन सभी के साथ बड़ी-बड़ी बुराइयाँ भी की हैं, ऐसी अवस्था में उनका बच जाना मेरे लिए बड़ा ही अनर्थकारक होगा। अस्तु जिस तरह हो सकेगा मैं जमना, सरस्वती, इंदुमति, प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह को भी जान से मारकर बखेड़ा तै करूँगा। हाँ, गुलाबसिंह का पता है, वह कहाँ है और क्या कर रहा है? क्योंकि तुम्हारी जुबानी जो कुछ सुना है उससे मालूम होता है कि वह प्रभाकर सिंह के साथ तिलिस्म के अन्दर नहीं गया।

रामदास : हाँ ठीक है, पर गुलाबसिंह का हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं हुआ। अच्छा मैं एक बात आपसे पूछना चाहता हूँ।

भूतनाथ : वह क्या?

रामदास : आपने अभी जो अपना हाल बयान किया है उसमें चन्द्रशेखर का हाल सुनने से मुझे बड़ा ही ताज्जुब हो रहा है। कृपा कर यह बताइए कि वह चन्द्रशेखर कौन है और आप उससे इतना क्यों डरते हैं? क्या उसे अपने कब्जे में करने की सामर्थ्य आप में नहीं है?

भूतनाथ : **(उसकी याद से काँप कर)** इस दुनिया में मेरा सबसे बड़ा दुश्मन वही है, ताज्जुब नहीं एक दिन उसी की बदौलत जीते-जागते रहने पर भी मुझे यह दुनिया छोड़नी पड़े, वह बड़ा ही बेढब आदमी है, बड़ा ही भयानक आदमी है, तथा ऐयारी में वह कई दफे मुझे जक दे चुका है! आश्चर्य होता है कि उसके बदन पर कोई हर्बा असर नहीं करता! नमालूम उसने किसी तरह का कवच पहिर रखा है या ईश्वर ने उसका बदन ही ऐसा बनाया है! उसके बदन पर मेरी दो तलवारें टूट चुकी हैं। उसकी तो सूरत ही देखकर मैं बदहवास हो जाता हूँ।

रामदास : **(आश्चर्य के साथ)** आखिर वह है कौन?

भूतनाथ : **(कुछ सोच कर)** अच्छा फिर कभी उसका हाल तुमसे कहेंगे, इस समय जो कुछ बातें दिमाग में पैदा हो रही हैं उन्हें पूरा करना चाहिए अर्थात् जमना सरस्वती और इंदुमति के बखेड़े से तो छुट्टी पा लें फिर चन्द्रशेखर को भी देख लिया जाएगा, आखिर वह अमृत पीकर थोड़े ही आया होगा।

इतना कहकर भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और अपने दोनों शागिर्दों को साथ लिए हुए खोह के अन्दर चला गया। इस समय रात घंटे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी।

5

दूसरी पहाड़ी पर चढ़कर ऊपर-ही-ऊपर जमना, सरस्वती और इंदुमति के पास पहुँचने पर जल्दी करने पर भी प्रभाकर सिंह को आधे घंटे से ज्यादे देर लग गई। "क्या इतनी देर तक दुश्मन ठहर सकता है? क्या इतनी देर तक ये नाजुक औरतें ऐसे भयानक दुश्मन के हाथ से अपने को बचा सकती हैं? क्या इस निर्जन स्थान में कोई उन औरतों का मददगार पहुँच सकता है? नहीं, ऐसी बात तो नहीं हो सकती!" यही सब कुछ सोचते हुए प्रभाकर सिंह बड़ी तेजी के साथ रास्ता तै करके वहाँ पहुँचे जहाँ जमना, सरस्वती और इंदुमति को छोड़ गये थे। उन्हें यह आशा न थी कि उन तीनों से मुलाकात होगी, मगर नहीं, ईश्वर बड़ा की कारसाज है, उसने इस निर्जन स्थान में भी उन औरतों के लिए एक बहुत बड़ा मददगार भेज दिया जिसकी बदौलत प्रभाकर सिंह के पहुँचने तक वे तीनों दुश्मन के हाथ से बची रह गई।

प्रभाकर सिंह ने वहाँ पहुँचकर देखा कि जमना, सरस्वती और इंदुमति दुश्मन के खौफ से बदहवास होकर मैदान की तरफ भागी जा रही हैं और एक नौजवान बहादुर आदमी जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है तलवार से उस दुश्मन का मुकाबला कर रहा है जो उन तीनों औरतों को मारने के लिए वहाँ आया था। यह तमाशा देख प्रभाकर सिंह तरद्दुद में पड़ गये और सोचने लगे कि हम उन भागती हुई औरतों को ढाँढस देकर लौटा लावें या पहिले इस बहादुर की मदद करें जो इस समय हमारे दुश्मन का मुकाबला बड़ी बहादुर के साथ कर रहा है। उन दोनों बहादुरों की अद्भुत लड़ाई को देखकर प्रभाकर सिंह प्रसन्न हो गये। थोड़ी देर के लिए उनके दिल से तमाम कुलफत जाती रही, और वे एकटक उन दोनों की लड़ाई का तमाशा देखने लगे। शैतान जो जमना इत्यादि को मारने आया था यद्यपि बहादुर था और लड़ाई में अपनी तमाम कारीगरी खर्च कर रहा था। मगर उस नकाबपोश के मुकाबले वह बहुत दबा हुआ मालूम पड़ने लगा, यहाँ तक कि उसका दम फूलने लगा और नकाबपोश के मोढ़े पर बैठकर उसकी तलवार दो टुकड़े हो गई।

कुछ देर के लिए लड़ाई रुक गई और दोनों बहादुर हटकर खड़े हो गये। उस शैतान दुश्मन को जिसका नाम इस मौके के लिए हम बेताल रख देते हैं, विश्वास था कि तलवार टूट जाने पर नकाबपोश उस पर जरूर हमला करेगा, मगर नकाबपोश ने ऐसा न किया। वह हटकर खड़ा हो गया और बेताल से बोला, "कहो अब किस चीज से लड़ोगे? मैं उस आदमी पर हर्बा चलाना उचित नहीं समझता जिसका हाथ हथियार से खाली हो।"

इसका जवाब बेताल ने कुछ न दिया, उसी समय नकाबपोश में प्रभाकर सिंह की तरफ देखा और कहा, "मुझे तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नहीं है, तुम **(हाथ का इशारा करके)** उन औरतों को सम्हालो और ढाढ़स दो जो इस शैतान के डर से बदहवास होकर भागी जा रही हैं या दुश्मन का मुकाबला करो तो मैं उन्हें जाकर समझाऊँ और यहाँ लौटा न ले आऊँ।"

प्रभाकर सिंह के लिए में यह खयाल बिजली की तरह दौड़ गया कि मैं उन औरतों की तरफ जाता हूँ तो नकाबपोश मुझे नामर्द समझेगा और अगर स्वयं दुश्मन का मुकाबला करके नकाबपोश को औरतों की तरफ जाने के लिए कहता हूँ तो क्या जाने यह भी उन सभी का दुश्मन ही हो और उन औरतों के पास जाकर कोई बुराई का काम कर बैठे। इस खयाल से क्षणमात्र के लिए प्रभाकर सिंह को चुप कर दिया, इसके बाद प्रभाकर सिंह ने कहा, "जो तुम कहो वही करूँ।"

नकाबपोश :बेहतर होगा कि तुम उन्हीं औरतों की तरफ जाओ!

"बहुत अच्छा" कह प्रभाकर सिंह बड़ी तेजी के साथ उनकी तरफ लपक पड़े जो भागती हुई अब कुछ-कुछ आँखों की ओट हो चली थीं। वे भागती चली जाती थीं और पीछे की तरफ फिर-फिर कर देखती जाती थीं। दौड़ते-दौड़ते वे एक ऐसे स्थान पर पहुँचीं जिसके आगे एक दरवाजा बना हुआ था जो इस समय खुला था। इन औरतों को इतनी फुर्सत कहाँ कि दीवार की लंबाई-चौड़ाई की जाँच करतीं या दूसरी तरफ भागने की कोशिश करतीं? वे सीधी उस दरवाजे के अन्दर घुस गई, खास करके इस खयाल से भी कि अगर इसके अन्दर दरवाजा बंद कर लेंगे तो दुश्मन से बचाव हो जाएगा।

उसी समय प्रभाकर सिंह भी नजदीक पहुँच गये और इंदुमति की निगाह प्रभाकर सिंह के ऊपर जा पड़ी। प्रभाकर सिंह ने हाथ के इशारे से उसे रुक जाने के लिए कहा परन्तु उसी समय वह दरवाजा बंद हो गया जिसके अन्दर जमना, सरस्वती और इंदुमति घुस गई थी। प्रभाकर सिंह को यह चिंता उत्पन्न हुई कि यह दरवाजा खुद बंद हो गया या इंदुमति ने जान-बूझकर बंद कर दिया।

थोड़ी ही देर में प्रभाकर सिंह उस दरवाजे के पास पहुँचे और धक्का देकर उसे खोलना चाहा मगर दरवाजा न खुला। प्रभाकर सिंह ने चाहा कि आगे बढ़कर देखें कि यह दीवार कहाँ तक गई है परन्तु उसी समय सरस्वती की आवाज कान में पड़ने से वे रुक गए और ध्यान देकर सुनने लगे। यह आवाज उस दरवाजे के पास दीवार के अन्दर से आ रही थी मानो सरस्वती किसी दूसरे आदमी से बातचीत कर रही है, जैसा कि नीचे लिखा जाता है

सरस्वती : हाय, यहाँ भी दुष्टों से हम लोगों का पिंड न छूटेगा! ये लोग इस तिलिस्म के अन्दर आ क्योंकर गये यही ताज्जुब है!

जवाब : **(जो किसी जानकार आदमी के मुँह से निकली हुई आवाज मालूम पड़ती थी)** खैर अब तो आ ही गये, अब तुम लोगों के निकाले हम लोग नहीं निकल सकते और अब तुम लोग जान बचा ही कर क्या करोगी क्योंकि प्रभाकर सिंह की निगाह में तुम लोगों की कुछ भी इज्जत न रही, उन्हीं की नहीं बल्कि मुझे भी वह सब हाल मालूम हो गया। इस समय तुम लोग उसी पाप का फल भोग रहे हो! अफसोस, मुझे तुम लोगों से ऐसी आशा कदापि न थी! अगर मैं ऐसा जानता तो इस पवित्र घाटी को तुम लोगों के पापमय शरीर से कभी अपवित्र होने न देता।

प्रभाकर सिंह : **(ताज्जुब से मन में)** हैं? क्या यह आवाज इन्द्रदेव की है!

सरस्वती : मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कह रहे हो! क्या किसी दुष्ट ने हम लोगों को बदनाम किया है? क्या किसी कमीने ने हम लोगों पर कलंक का धब्बा लगाना चाहा है? नहीं कदापि नहीं, स्वप्न में भी ऐसा नहीं हो सकता! हम लोगों के पवित्र मनों को डावाँडोल करने वाला इस संसार में कोई भी नहीं है! मैं इसके लिए खुले दिल से कसम खा सकती हूँ।

जवाबः दुनिया में जितने बदकार आदमी होते हैं वे कसम खाने में बहुत तेज होते हैं! मुझसे तुम लोगों की यह चालाकी नहीं चल सकती। जो कुछ मैं इस समय कह रहा हूँ वह केवल किसी से सुनी-सुनाई बातों के कारण नहीं है बल्कि मुझे इस बात का बहुत ही पक्का सबूत मिल चुका है जिससे तुम कदापि इनकार नहीं कर सकती।

प्रभाकरसिंह : **(मन में)** बेशक् वह बात ठीक मालूम होती है जो हरदेई ने मुझ से कही थी।

सरस्वती : कैसा सबूत और कैसी बदनामी? भला मैं भी तो उसे सुनूँ।

जवाबः तुम तो जरूर ही सुनोगी, अभी नहीं तो और घंटे भर में सही। प्रभाकर सिंह के सामने ही मैं इस बात को खोलूँगा और इस कहावत को चरितार्थ करके दिखा दूँगा कि 'छिपत न दुष्कर पाप, कोटि जतन कीजे तऊ'।

सरस्वती : कोई चिंता नहीं, मैं भी अच्छी तरह उस आदमी का मुँह काला करूँगी जिसने हम लोगों को बदनाम किया है और अपने को अच्छी तरह निर्दोष साबित कर दिखाऊँगी।

आवाज : अगर तुम्हारे किये हो सकेगा तो जरूर ऐसा करना।

सरस्वती : हाँ-हाँ जरूर ही ऐसा करूँगी। मेरा दिल उसी समय खटका था जब प्रभाकर सिंह ने कुछ व्यंग्य के साथ बातें की थीं। मैं उस समय उनका मतलब कुछ नहीं समझ सकी थी मगर अब मालूम हो गया कि कोई महापुरुष हम लोगों को बदनाम करके अपना काम निकालना चाहते हैं।

जवाबः इस तरह की बातें तुम प्रभाकर सिंह को समझाना, मुझ पर इसका कुछ भी असर नहीं हो सकता, यदि मैं तुम्हारा नातेदार न होता तो मुझे इतना कहने की कुछ जरूरत भी न थी, मैं तुम लोगों का मुँह भी न देखता और अब भी ऐसा ही करूँगा। मैं नहीं चाहता कि अपना हाथ औरतों के खून से नापाक करूँ। तथापि एक दफे प्रभाकर सिंह के सामने इन बातों को साबित जरूर करूँगा जिसमें कोई यह न कहे कि जमना, सरस्वती और इंदुमति पर किसी ने व्यर्थ ही कलंक लगा! अच्छा अब मैं जाता हूँ, फिर मिलूँगा।

सरस्वती : अच्छा-अच्छा देखा जाएगा, इन चालबाजियों से काम नहीं चलेगा।

बस इसके बाद किसी तरह की आवाज न आई, अस्तु कुछ देर तक और कान लगा कर ध्यान देने के बाद प्रभाकर सिंह पुनः उस दीवार के अन्दर जाने का उद्योग करने लगे। इस खयाल से कि देखें यह दीवार कहाँ पर खतम हुई है वे दीवार के साथ-ही-साथ पूरब तरफ रवाना हुए। दीवार बहुत दूर तक नहीं गई थी, केवल चार या पाँच बिगहे के बाद मुड़ गई थी, अस्तु प्रभाकर सिंह भी घूमकर दूसरी तरफ चल पड़े। बीस-पच्चीस कदम आगे जाने के बाद उन्हें एक खुला दरवाजा मिला। प्रभाकर सिंह उस दरवाजे के अन्दर चले गए और दूर से जमना, सरस्वती और इंदुमति को एक पेड़ के नीचे बैठे देखा जो नीचे की तरफ सिर हुए आँखों से गरम-गरम आँसू गिरा रही थी। क्रोध में भरे हुए प्रभाकर सिंह उन तीनों के पास चले गये और सरस्वती की तरफ देखकर बोले, "वह कौन आदमी था जो अभी तुमसे बातें कर रहा था?"

सरस्वती : मुझे नहीं मालूम कि वह कौन था।

प्रभाकर सिंह : फिर तुमसे इस तरह की बात करने की उसे जरूरत ही क्या थी?

सरस्वती : सो भी मैं कुछ कह नहीं सकती।

प्रभाकर सिंह : हाँ ठीक है, मुझसे कहने की तुम्हें जरूरत ही क्या है! खैर जाने दो, मुझे भी विशेष सुनने की आवश्यकता नहीं है, तो मैं पहिले ही हरदेई की जुबानी तुम लोगों की बदकारियों का हाल सुनकर अपना दिल ठंडा कर चुका था, अब इस आदमी की बातें सुनकर और भी रहा-सहा शक जाता रहा, यद्यपि तुम लोग इस योग्य थीं कि इस दुनिया से उठा दी जातीं और यह पृथ्वी तुम्हारे असह्य बोझ से हल्की कर दी जाती, परन्तु नहीं, उस आदमी की तरह जो अभी तुमसे बातें कर रहा था मैं भी तुम लोगों के खून से अपना हाथ अपवित्र नहीं करना चाहता। खैर तुम दोनों बहिनों से तो मुझे कुछ विशेष कहता नहीं है, रही इंदुमति सो इसे मैं इस समय से सदैव के लिए त्याग करता हूँ। शास्त्र में लिखा हुआ है कि किसी का त्याग कर देना मार डालने के ही बराबर है।

इंदुमति : (रोती हुई हाथ जोड़कर) प्राणनाथ! क्या तुम दुश्मनों की जुबानी गढ़ी-गढ़ाई बातें सुन कर मुझे त्याग कर दोगे!!

प्रभाकर : हाँ त्याग कर दूँगा, क्योंकि जो कुछ बातें तुम्हारे विषय में मैंने सुनी हैं उन्हें यह दूसरा सबूत मिल जाने के कारण मैं सत्य मानता हूँ। केवल इतना ही नहीं, तुम्हारी ही जुबान से उन बातों की पुष्टि हो चुकी है। अब इसकी भी कोई जरूरत नहीं कि तुम लोगों को इस तिलिस्म के बाहर ले जाने का उद्योग करूँ, अस्तु अब मैं जाता हूँ। **(छाती पर हाथ रख कर)** मैं इस वज्र की चोट को इसी छाती पर सहन करूँगा और फिर जो कुछ ईश्वर दिखावेगा देखूँगा, मुझे विश्वास हो गया कि बस मेरे लिए दुनिया इतनी ही थी।

इतना कहकर प्रभाकर सिंह वहाँ से रवाना हो गए। इंदुमति रो-रोकर पुकारती ही रह गई मगर उन्होंने उसकी कुछ भी न सुनी। जिस खिड़की की राह वे इस दीवार के अन्दर गये थे उसी राह से वे बाहर चले आये और उस तरफ रवाना हुए जहाँ नकाबपोश और बैताल को लड़ते हुए छोड़ आये थे।

वहाँ पहुँचकर प्रभाकर सिंह ने दोनों में से एक को भी न पाया, न तो बैताल ही पर निगाह पड़ी और न नकाबपोश ही की सूरत दिखाई दी। ताज्जुब के साथ प्रभाकर सिंह चारों तरफ देखने और सोचने लगे कि कहीं मैं जगह तो नहीं भूल

गया या वे दोनों ही तो आपस में फैसला करके कहीं नहीं चले गये।

कुछ देर तक इधर-उधर ढूँढ़ने के बाद प्रभाकर सिंह एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गये और झुकी हुई गर्दन को हाथ का सहारा दे कर तरह-तरह की बातें सोचने लगे। इन्हें इंदुमति को त्याग देने का बहुत ही रंज था और वे अपनी जल्दबाजी पर कुछ देर के बाद पछताने लग गये थे। वे अपने दिल में कहने लगे कि अफसोस, मैंने इस काम में जल्दबाजी की। यद्यपि इंदुमति की बदकारी का हाल सुनकर मेरे सिर से पैर तक आग लग गई थी। मगर मुझे उसका कुछ सबूत भी तो ढूँढ़ लेना चाहिए था। संभव है कि हरदेई इन सभों की दुश्मन बन गई हो और उसने हम लोगों को रंज पहुँचाने के खयाल से ऐसी मनगढंत कहानी कहकर और इंदुमति पर इलजाम लगाकर अपना कलेजा ठंडा किया हो। अगर वास्तव में यही बात हो तो कोई ताज्जुब नहीं क्योंकि हरदेई का उन तीनों के साथ न रहकर अलग ही तिलिस्म के अन्दर दिखाई देना कोई मामूली बात नहीं है बल्कि इसका कोई खास सबब जरूर है। अच्छा तो वह दूसरा आदमी कौन हो सकता है जिसने उस दीवार के अन्दर सरस्वती से बातचीत की थी? संभव है कि बेताल की तरह वह भी इंदुमति, जमना और सरस्वती का दुश्मन हो और मुझे सुनाने और धोखे में डालने के लिए उसने यह ढंग रचा हो। हो सकता है, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। साथ ही इसके यह भी तो सोचना चाहिए कि अगर जमना, सरस्वती का ऐसा ही बुरा काम करना होता तो वे मुझे और इंदुमति को अपने घर क्यों लातीं और मेरे साथ ऐसा अच्छा सलूक क्यों करतीं? नहीं-नहीं, इंदुमति से मुझे ऐसी आशा नहीं हो सकती। वह इंदुमति जो लड़कपन से आज तक अपने विशुद्ध आचरण के कारण बराबर अच्छी और नेक गिनी गई है आज ऐसा कर्म करे यह कब संभव है? और हो भी तो क्या आश्चर्य है,आदमी के दिल को बदलते क्या देर लगती है? जो हो मगर मुझे ऐसी जल्दी न करनी चाहिए थी। और कुछ नहीं तो इंदुमति से हरदेई वाली बात खुलासे-तौर पर कहकर उसका जवाब भी तो सुन लेना उचित था। आह, मैंने जो कुछ किया वह कर्तव्य के विरुद्ध था। हरदेई ने जरूर मुझे धोखे में डाला, वह दगाबाज थी, अगर ऐसा न होता तो मेरे जेब से तिलिस्मी किताब चुराकर क्यों भाग जाती? परन्तु उसके भाग जाने का भी तो कोई सबूत नहीं है। उसका खून से भरा हुआ कपड़ा केलों के झुरमुट में मिला था जिसमें खयाल हो सकता है कि वह दुश्मनों के हाथ पड़ गई। लेकिन अगर ऐसा ही था और दुश्मन उसके सर पर आ गया था तो उसने चिल्लाकर मुझे जगा क्यों न दिया! संभव है कि वह खून से भरा हुआ कपड़ा हरदेई ही के हाथ का रखा हो।

इस तरह की बातें थोड़ी देर तक प्रभाकर सिंह सोचते और दिल में तरह-तरह की बातें पैदा होने से बेचैन होते रहे, परन्तु इस बात का ठीक निश्चय नहीं कर सकते थे कि उन्होंने जो कुछ बर्त्ताव इंदुमति के साथ किया वह उचित था या अनुचित।

इस तरह की चिंता करते-करते संध्या हो गई। सूर्य भगवान इस दुनिया को छोड़ किसी दूसरी दुनिया को अपनी चमक-दमक से प्रफुल्लित करने के लिए चले गये। यह बात औरों को चाहे बुरी मालूम हो परन्तु खुले दिल से मुँह दिखाने वालों से आसमान के सितारों को बहुत भली मालूम हुई। अस्तु वे दुनिया के विचित्र मामले को लापरवाही के साथ देखने के लिए निकल आये और औरों के साथ ही प्रभाकर सिंह की अवस्था पर अफसोस करने लगे। प्रभाकर सिंह अपने विचारों में ऐसे डूबे हुए थे कि उनको इस बात की कुछ खबर ही न थी।

जब रात कुछ ज्यादे बीत गई और सर्दी लगने लगी तब प्रभाकर सिंह चैतन्य हुए और आसमान की तरफ देखकर आश्चर्य करने लगे तथा अपने ही आप बोल उठे, "ओह बहुत देर हो गई। मैंने इस तरफ कुछ ध्यान ही नहीं दिया और न अपने लिए कुछ बंदोबस्त ही किया। अस्तु अब तो रात इसी जंगल मैदान में बिता देनी पड़ेगी।"

अपनी चिंता में निमग्न प्रभाकर सिंह को खाने-पीने की तथा और किसी जरूरी काम की फिक्र न रही वे पुनः उसी तरह सिर नीचा करके सोचने लग गये। ऐसी अवस्था में निद्रादेवी ने भी उनका साथ छोड़ दिया और उन्हें अपने खयाल में डूबे रहने दिया।

आधी रात बीत जाने के बाद अपनी बाईं तरफ कुछ उजाला देख प्रभाकर सिंह चौंक पड़े और उजाले की तरफ देखने लगे। यह रोशनी उसी दीवार के अन्दर से आ रही थी जिसके अन्दर जाकर प्रभाकर सिंह ने जमना, सरस्वती और

इंदुमति से मुलाकात की थी और अनुचित अवस्था में उनका तिरस्कार किया था।

यह रोशनी मामली नहीं थी बल्कि बहुत ज्यादे और दिल में खुटका पैदा करने वाली थी। मालूम होता था कि कई मन लकड़ियाँ बटोरकर उसमें किसी ने आग लगा दी हो। प्रभाकर सिंह का दिल धड़कने लगा और वे घबराहट के साथ उस पल-पल में बढ़ती हुई रोशनी को बड़े गौर से देखते हुए उठ खड़े हुए।

प्रभाकर सिंह के दिल की इस समय क्या अवस्था थी इसका कहना बड़ा ही कठिन है। यद्यपि वे उस दीवार के अन्दर जाकर उस रोशनी का कारण जानने के लिए उत्कंठित हो रहे थे परन्तु दिल की परेशानी और घबराहट ने मानो उनकी ताकत छीन ली थी और पैर उठाना भारी हो गया था। तथापि उन्होंने बड़ी कठिनता से अपने दिल को सम्हाला और धीरे-धीरे कदम उठाकर उसी दीवार की तरफ आने लगे। जब उस दीवार के पास पहुँचे तो उसी खिड़की की राह उसके अन्दर घुसे जिस राह से पहिले गये थे। इस समय वह रोशनी जो एक दफे बड़ी तेजी के साथ बढ़ चुकी थी धीरे-धीरे कम होने लगी थी।

जहाँ पर जमना, सरस्वती और इंदुमति से मुलाकात हुई थी वहाँ पहुँचकर प्रभाकर सिंह ने देखा कि एक बहुत बड़ी चिता सुलग रही है और बहुत ध्यान देने पर मालूम होता है कि उसके अन्दर कोई लाश भी जल रही है जो अब अन्तिम अवस्था को पहुँचकर भस्म हुआ ही चाहती है। धुएँ में बदबू होने से भी इस बात की पुष्टि होती थी।

प्रभाकर सिंह का दिल बड़ी तेजी के साथ उछल रहा था और वे बेचैनी और घबराहट के साथ उस चिता को देख रहे थे कि यकायक उनकी आँखें डबडबा आईं और गरम-गरम आँसू उनके गुलाबी गालों पर मोतियों की तरह लुढ़कने लगे। इससे भी उनके दिल की हालत न सम्हली और वे बड़े जोर से पुकार उठे, "हाय इन्दे! क्या यह धधकती हुई अग्नि के अन्दर तू ही तो नहीं है? इतना कहकर प्रभाकर सिंह जमीन पर बैठ गए और सिर पर हाथ रखकर अपने दिल को काबू में लाने की कोशिश करने लगे।

घंटे भर तक अपने को सम्हालने का उद्योग करने पर भी वे कृतकार्य न हुए और फिर उठ कर बड़ी बेदिली के साथ पुनः उसी चिता की तरफ देखने लगे जो अब लगभग निर्धूम हो रही थी परन्तु उसकी रोशनी दूर-दूर तक फैल रही थी।

यकायक प्रभाकर सिंह की निगाह किसी चीज पर पड़ी जो उस चिता से कुछ दूरी पर थी परन्तु आग की रोशनी के कारण अच्छी तरह दिखाई दे रही थी। प्रभाकर सिंह उसके पास चले गये और बिना कुछ सोचे-विचारे उसे उठाकर बड़े गौर से देखने लगे। यह कपड़े का एक टुकड़ा था जो हाथ भर से कुछ ज्यादे बड़ा था। प्रभाकर सिंह ने पहिचाना कि यह इंदुमति की उसी साड़ी में का टुकड़ा है जिसे पहिरे हुए उसे आज उन्होंने उस जगह पर देखा था। इस टुकड़े ने उनके लिद को चकनाचूर कर दिया और उस समय तो उनकी अजीब हालत हो गई जब उसे टुकड़े के एक कोने में कुछ बँधा हुआ उन्होंने देखा। खोलने पर मालूम हुआ कि वह एक चिट्ठी है जिसकी लिखावट ठीक इंदुमति के हाथ की लिखावट की-सी है, परन्तु अफसोस कि इस रोशनी में तो वह पढ़ी ही नहीं जाती और चिता की आँच अपने पास आने की इजाजत नहीं देती। अब उस चिता में इतनी रोशनी भी नहीं रह गई थी कि दूर ही से इस लिखावट को पढ़ सकें।

इस समय कोई दुश्मन भी प्रभाकर सिंह की बेचैनी को देखता तो कदाचित् उनके हाथ हमदर्दी का बर्त्ताव करता।

धीरे-धीरे चिता ठंडी हो गई मगर प्रभाकर सिंह ने उसका पीछा न छोड़ा, उस के पास ही बैठकर रात बिता दी। हाथ में वह कागज लिए हुए कई घंटे तक प्रभाकर सिंह सुबह की सुफेदी का इंतजार करते रहे और जब पत्र पढ़ने योग्य चाँदना हो गया तब उसे बड़ी बेचैनी के साथ पढ़ने लगे। यह लिखा हुआ था

"प्राणनाथ! बस हो चुका, दुनिया इतनी ही थी। मैं अब जाती हूँ और तुम्हें दयामय परमात्मा के सुपुर्द करती हूँ। मैं जब तक इस दुनिया में रही बहुत ही सुखी रही, तरह-तरह के दुःख भोगने पर भी मुझे विशेष कष्ट न हुआ क्योंकि तुम्हारे प्रेम का सहारा हरदम मेरे साथ था। इसे अतिरिक्त आशालता की हरियाली जिसका सब कुछ संबंध तुम्हारे ही शरीर के साथ था, मुझे सदैव प्रसन्न रखती थी, परन्तु अब इस दुनिया में मेरे लिए कुछ नहीं रहा और मेरी वह आशालता भी

बिलकुल ही सूख गई। तुम्हारे अतिरिक्त यदि और कुछ इस दुनिया में मुझे देना होता तो मैं अवश्य जीती रहती परन्तु नहीं, जब तुम्हीं ने मुझे त्याग दिया तो अब क्यों और किसके लिए जीऊँ? मैं इसी विचार से बहुत संतुष्ट हूँ कि तुम्हारे मेरे लिए दुःख न होगा क्योंकि किसी दुष्ट की कृपा से तुम मुझसे रुष्ट हो चुके हो इसलिए तुमने मुझे त्याग दिया और तुम्हें मेरे मरने का कुछ भी दुखी न होगा, परन्तु यदि कदाचित् किसी समय इस जालसाजी का भंडा फूट जाय और तुम्हारे विचार से मैं बेकसूर समझी जाऊँ तो यही प्रार्थना है कि तुम मेरे लिए कदापि दुखी न होना, बस...''

इस पत्र को पढ़कर प्रभाकर सिंह बहुत बेचैन हुए। मालूम होता था कि किसी ने अन्दर घुस और हाथ से पकड़ के उनका कलेजा ऐंठ दिया है। यद्यपि उन्होंने इंदुमति का तिरस्कार कर दिया था परन्तु इस समय उनके दिल ने गवाही दे दी कि 'हाय, तूने व्यर्थ इंदुमति को त्याग दिया! वह वास्तव में निर्दोष थी इसी कारण तेरे उन शब्दों को बर्दाश्त न कर सकी जो उसके सतीत्व में धब्बा लगाने के लिए तूने कहे थे! हाय इन्दे! अब मुझे मालूम हो गया कि तू वास्तव में निर्दोष थी, आज नहीं तो कल इस बात का पता लग ही जाएगा।' इतना कहकर प्रभाकर सिंह ने पुनः उस चिता की तरफ देखा और कुछ सोचने के बाद गरम-गरम आँसू बहाते हुए वहाँ से रवाना हुए मगर उनकी भृकुटी, उनके फड़कते हुए होंठ और उनकी लाल-लाल आँखों से जाना जाता है कि इस समय किसी से बदला लेने का ध्यान उनके दिल में जोश मार रहा था।

उस दीवार के बाहर हो जाने के बाद प्रभाकर सिंह को यकायक यह खयाल पैदा हुआ कि इंदुमति का हाल तो जो हुआ मालूम हो गया, परन्तु जमना और सरस्वती के विषय में कुछ मालूम न हुआ, संभव है कि वहाँ उन लोगों ने भी इसी तरह कुछ लिखकर रख दिया हो मुलाकात हो गई तो उनकी जुबानी इंदुमति की अन्तिम अवस्था का ठीक-ठाक हाल मालूम हो जाएगा। यह सोचकर प्रभाकर सिंह पुनः पलट पड़े और उस चिता के पास जाकर इधर-उधर देखने लगे परन्तु और किसी बात का पता न लगा, लाचार प्रभाकर सिंह लौटकर उस दीवार के बाहर निकल आये।

अब दिन घंटे-भर से ज्यादे चढ़ चुका था। दीवार के बाहर निकलकर प्रभाकर सिंह कुछ सोचने लगे और इधर-उधर देखने के बाद कुछ सोच कर एक पेड़ के ऊपर चढ़ गये और दूर तक निगाह दौड़ा कर देखने लगे। यकायक उनकी निगाह हरदेई के ऊपर पड़ी जो उसी दीवार की तरफ बढ़ी जा रही थी जिकसे अन्दर जमना, सरस्वती और इंदुमति को प्रभाकर सिंह ने छोड़ा था। हरदेई को देखते ही प्रभाकर सिंह पेड़ के नीचे उतरे और बड़ी तेजी के साथ उसी तरफ जाने लगे।

यह हरदेई वही नकली हरदेई थी जो एक दफे प्रभाकर सिंह को धोखे में डाल चुकी थी अर्थात् भूतनाथ का शागिर्द रामदास इस समय भी हरदेई की सूरत बना हुआ भूतनाथ के साथ ही इस तिलिस्म के अन्दर आया हुआ था और पुनः जमना, सरस्वती, इंदुमति और प्रभाकर सिंह को धोखे में डालकर अपना या अपने ओस्ताद का कुछ काम निकालना चाहता था, मगर इस समय उसे यह खबर न थी कि प्रभाकर सिंह मुझे देख रहे हैं और न प्रभाकर सिंह से मिला ही चाहता था।

रामदास ने जब आशा के विरुद्ध प्रभाकर सिंह को अपनी तरफ आते देखा तो ताज्जुब में आकर चौंक पड़ा तथा भाग जाना मुनासिब समझकर खड़ा हो गया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए।

प्रभाकर सिंह : **(नकली हरदेई के पास पहुँचकर)** हरदेई, तू यहाँ कैसे आई?

हरदेई : मेरी किस्मत मुझे यहाँ ले आई। मैं तो उसी समय अपनी जान से हाथ धो चुकी थी जिस समय आपसे अलग हुई थी, मगर मेरी किस्मत में अभी कुछ और जीना बदा था इसलिए एक महापुरुष की मदद से बच गई।

प्रभाकर सिंह : आखिर तुम पर क्या आफत आई थी सो तो सुनूँ?

हरदेई : आप जब थकावट मिटाने के लिए चबूतरे पर लेट गये तो उसी समय आपकी आँख लग गई, मैं बड़ी देर तक चुपचाप बैठी-बैठी घबड़ा गई थी इसलिए उठ कर इधर-उधर टहलने लगी। घूमती-फिरती मैं कुछ दूर निकल गई, उसी

समय यकायक पत्तों के झुरमुट में से एक आदमी निकल आया जो स्याह कपड़े और नकाब से अपने बदन और चेहरे को छिपाए हुए था। मैं उसे देखकर घबड़ा गई और दौड़ कर आपकी तरफ आने लगी मगर उसने झपटकर मुझे पकड़ लिया और एक मुक्का मेरी पीठ पर इस जोर से मारा कि मैं तिलमिला कर बैठ गई। उसने मुझे जबरदस्ती कोई दवा सूँघ दी जिससे मैं बेहोश हो गई और तनोबदन की सुधि जाती रही। दूसरे दिन जब मैं होश में आई तो अपने को मैदान और जंगल में पड़े हुए पाया, तब से मैं आपको बराबर खोज रही हूँ।

प्रभाकर सिंह : **(हरदेई की बेतुकी बातों को ताज्जुब से सुनकर)** आखिर उसने तुझे इस तरह सता कर क्या फायदा उठाया?

हरदेई : **(कुछ घबड़ानी सी होकर)** सो तो मैं कुछ भी नहीं जानती।

प्रभाकर सिंह : उसने छुरी या खंजर से तुझे जख्मी तो नहीं किया?

हरदेई : जी नहीं।

प्रभाकर सिंह : मैं जब सोकर उठा तो तुझे ढूँढ़ने लगा। एक जगह केले के झुरमुट में तेरे कपड़े का टुकड़ा खून से भरा हुआ देखा था जिससे मुझे खयाल हुआ कि हरदेई को किसी ने खंजर या छुरी से जखमी किया है।

हरदेई : जी नहीं, मुझे तो इस बात की कुछ भी खबर नहीं।

प्रभाकर सिंह : और वह महात्मा पुरुष कौन थे जिन्होंने तुझे बचाया? अभी-अभी तो तू कह चुकी है कि 'बेहोशी के बाद जब मैं होश में आई तो अपने को मैदान और जंगल में पड़े हुए पाया' अस्तु कैसे समझा जा कि किसी महापुरुष ने तुझे बचाया?

नकली हरदेई के चेहरे पर घबराहट की निशानी छा गई और वह इस भाव को छिपाने के लिए मुड़ कर पीछे की तरफ देखने लगी मगर प्रभाकर सिंह इस ढंग को अच्छी तरह समझ गए और जरा तीखी आवाज में बोले, "बस मुझे ज्यादे देर तक ठहरने की फुरसत नहीं है, मेरी बात का जवाब जल्दी-जल्दी देती जा!"

हरदेई : जी हाँ, जब मैं खुलासे-तौर पर अपना हाल कहूँगी तब आपको मालूम हो जाएगा कि वह महात्मा कौन था और अब कहाँ हैं जिसने मुझे बचाया था, मैंने संक्षेप में ही अपना हाल आपसे कहा था।

प्रभाकर सिंह : खैर तो वह खुलासा हाल कहने में देर क्या है! अच्छा जाने दे खुलासा हाल मैं भी सुन लूँगा, पहिले तेरी तलाशी लिया चाहता हूँ।

हरदेई : **(घबड़ाकर)** तलाशी कैसी और क्यों?

प्रभाकर सिंह : इसका जवाब मैं तलाशी लेने के बाद दूँगा।

हरदेई : आखिर मुझ पर आपको किस तरह का शक हुआ?

प्रभाकर सिंह : मुझे कई बातों का शक हुआ जो मैं अभी कहना नहीं चाहता। इतना कहते ही कहते प्रभाकर सिंह ने हरदेई का हाथ पकड़ लिया क्योंकि उसने रंग-ढंग से मालूम होता था कि वह भागना चाहती है। हरदेई ने पहिले तो चाहा कि झटका देकर अपने को प्रभाकर सिंह के कब्जे से छुड़ा ले मगर ऐसा न हो सका। प्रभाकर सिंह ने जब देखा कि यह धोखा देकर भाग जाने की फिक्र में है तब उन्हें बेहिसाब क्रोध चढ़ आया और एक मुक्का उसकी गरदन पर मार कर जबरदस्ती उन्होंने उसके ऊपर का कपड़े खैंच लिया।

रामदास यद्यपि ऐयार था मगर उसमें इतनी ताकत न थी कि वह प्रभाकर सिंह का मुकाबला कर सकता। प्रभाकर सिंह के हाथ का मुक्का खाकर वह बेचैन हो गया और उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया, और फिर उसकी हिम्मत न पड़ी कि वह भाग जाने के लिए उद्योग करे। प्रभाकर सिंह को भी विश्वास हो गया कि यह हरदेई नहीं बल्कि कोई ऐयार है। मामूली कपड़ा उतार लेने के साथ ही प्रभाकर सिंह का बना-बनाया शक भी जाता रहा, साथ ही इसके उन्होंने यह भी निश्चय कर लिया कि हमारी तिलिस्मी किताब जरूर इसी ऐयार ने चुराई है।

तिलिस्मी किताब पा जाने की उम्मीद में प्रभाकर सिंह ने जहाँ तक हो सका बड़ी होशियारी के साथ उसकी तलाशी ली और उसके ऐयारी के बटुए में भी, जिसे वह छिपाकर रखे हुए था, देखा मगर किताब हाथ न लगी। तलाशी में केवल ऐयारी का बटुआ, खंजर और एक कटार उसके पास से मिला जिसे प्रभाकर सिंह ने अपने कब्जे में कर लिया और पूछा,"बस अब तो तेरा भेद अच्छी तरह खुल गया। खैर यह बता कि तेरा क्या नाम है और मेरे साथ तूने इस तरह की दगाबाजी क्यों की?"

रामदास : क्या जो कुछ मैं बताऊँगा उस पर आप विश्वास कर लेंगे?

प्रभाकर : नहीं।

रामदास : फिर इसे पूछने से फायदा क्या?

प्रभाकर सिंह ने क्रोध-भरी आँखों से सिर से पैर तक उसे देखा और कहा, "बेशक् कोई फायदा नहीं मगर तूने मेरे साथ बड़ी दगाबाजी की और व्यर्थ ही बेचारी इंदुमति पर झूठा कलंक लगाकर उसे और साथ-ही-साथ इसके मुझे भी बर्बाद कर दिया।"

रामदास : बेशक् मैंने किया तो बहुत बुरा मगर मैं तो ऐयार हूँ, मालिक की भलाई के लिए उद्योग करना मेरा धर्म है। जो कुछ मुझसे बन पड़ा किया, अब आपके कब्जे में हूँ जो उचित और धर्म समझिए कीजिए।

प्रभाकरसिंह :**(क्रोध को दबाते हुए)** तू किसका ऐयार है?

रामदास : मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि मेरी बातों पर आपको विश्वास न होगा, फिर इन सब बातों को पूछने से फायदा क्या है?

प्रभाकर सिंह का दिल पहिले ही से जख्मी हो रहा था, अब जो मालूम हुआ कि हरदेई वास्तव में हरदेई नहीं है बल्कि कोई ऐयार है और इसने धोखा देकर अपना काम निकालने के लिए इंदुमति, जमना और सरस्वती को बदनाम किया था तो उनके दुःख और क्रोध की सीमा न रही, तिस पर रामदास की ढिठाई ने उसकी क्रोधाग्नि को और भड़का दिया, अस्तु वे उचित-अनुचित का कुछ भी विचार न कर सके। उन्होंने रामदास की कमर में एक लात ऐसी मारी कि वह सम्हल न सका और जमीन पर गिर पड़ा, इसके बाद लात और जूते ने उसकी ऐसी खातिरदारी की कि वह बेहोश हो गया और उसके मुँह से खून भी बहने लगा। इतने पर भी प्रभाकर सिंह का क्रोध शान्त न हुआ और उसे कुछ और सजा दिया चाहते थे कि सामने से आवाज आई, "हाँ, हाँ, बस जाने दो, हो चुका, बहुत हुआ।"

प्रभाकर सिंह ने आँख उठाकर सामने की तरफ देखा तो एक वृद्ध महात्मा पर उनकी निगाह पड़ी जो तेजी के साथ प्रभाकर सिंह की तरफ बढ़े आ रहे थे।

6

वृद्ध महात्मा का ठाठ कुछ अजब ही ढंग का था, सिर से पैर तक तमाम बदन में भस्म लगे रहने के कारण इनके रंग का बयान करना चाहे कठिन हो परन्तु फिर भी इतना जरूर कहेंगे कि लगभग सत्तर वर्ष की अवस्था हो जाने पर भी उनके खूबसूरत और सुडौल बदन में अभी तक कहीं झुर्री नहीं पड़ी थी और न उनके सीधेपन में कोई झुकाव आया था। बड़ी-बड़ी आँखों में अभी तक गुलाबी डोरियाँ दिखाई दे रही थीं और उनके कटाक्ष से जाना जाता था कि अभी तक उनकी रोशनी और ताकत में किसी तरह की कमी नहीं हुई है। रोआबदार चेहरा, चौड़ी छाती तथा मजबूत और गठीले हाथ-पैरों की तरफ ध्यान देने से यही कहने को जी चाहता है कि यह शरीर तो छत्र और मुकुट धारण करने योग्य है न कि जटा और कंबल की कफनी के योग्य।

महात्मा के सिर पर लंबी जटा भी जो खुली हुई पीठ की तरफ लहरा रही थी। मोटे और मुलायम कंबल का झगा बदन में और लोहे का एक डंडा हाथ में था, बस इसके अतिरिक्त उनके पास और कुछ भी दिखाई नहीं देता था।

महात्मा को देखते ही प्रभाकर सिंह ने झुक के प्रणाम किया, बाबाजी ने भी पास आकर आशीर्वाद दिया और कहा, "प्रभाकर सिंह, बस जाने दो, बहादुर लोग ऐयारों को जान से नहीं मारते और ऐयार भी जान से मारने योग्य नहीं होते बल्कि कैद करने के योग्य होते हैं। तुम इस समय यद्यपि इस योग्य नहीं हो कि इसे कैद करके कहीं रख सको तथापि यदि कहो तो हम इसका प्रबंध कर दें क्योंकि यह तिलिस्म के अन्दर हम इस बात को बखूबी कर सकते हैं।"

प्रभाकर सिंह : **(बात काटकर)** आपकी आज्ञा के विरुद्ध मैं कदापि न करूँगा। आप बड़े हैं, मेरा दिल गवाही देता है और कहता है कि यदि आप वास्तव में साधु न भी हों तो भी मेरे पूज्य और बड़े हैं। जो कुछ आज्ञा कीजिए मैं करने को तैयार हूँ, पर आपको कदाचित् यह न मालूम हुआ होगा कि इसने मुझे कैसी-कैसी तकलीफें दी हैं और किस तरह मेरा सर्वनाश किया है, और इस समय भी वह कैसी ढिठाई के साथ बातें कर रहा है, अपना नाम तक नहीं बताता।

बाबा : मैं सब कुछ जानता हूँ, तुमने स्वयं भूलकर अपने को इसके हाथ फँसा दिया है, अगर वह किताब जिसमें इस तिलिस्म का कुछ थोड़ा-सा हाल लिखा हुआ था और जो इन्द्रदेव ने तुमको दी थी, इसने तुम्हारी जेब से न निकाल ली होती तो यह कदापि यहाँ तक पहुँच सकता, मगर अफसोस, तुमने पूरा धोखा खाया और यह किताब की भी बखूबी हिफाजत न कर सके।

प्रभाकरसिंह : बेशक् ऐसा ही है, मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई। अभी तक मुझे इस बात का पता न लगा कि वास्तव में यह कौन है।

बाबा : हाँ तुम इसे नहीं जानते, हरदेई समझकर तुम इसके हाथ से बर्बाद हो गए, यह असल में गदाधरसिंह का शागिर्द रामदास है। इसी ने असली हरदेई को धोखा देकर गिरफ्तार कर लिया और स्वयं हरदेई की सूरत बन जमना और सरस्वती को धोखे में डाला, यह तिलिस्मी घाटी का रास्ता देख लिया और भूतनाथ को इस घाटी के अन्दर लाकर जमना, सरस्वती और इंदुमति को आफत में फँसा दिया। भूतनाथ ने अपने हिसाब से तो उन तीनों को मार डाला था परन्तु ईश्वर ने उन्हें बचा लिया, सुनो हम इसका खुलासा हाल तुमसे बयान करते हैं।

इतना कहकर बाबाजी ने भूतनाथ और रामदास का पूरा-पूरा हाल जो हम ऊपर के बयानों में लिख आए हैं कह सुनाया अर्थात् जिस तरह रामदास ने हरदेई को गिरफ्तार किया, स्वयं हरदेई की सूरत बनकर कई दिनों तक जमना, सरस्वती के साथ रहा, घाटी में आने-जाने का रास्ता देखकर भूतनाथ को बताया, प्रभाकर सिंह की सूरत बनकर जिस तरह भूतनाथ इस घाटी के अन्दर आया और जमना, सरस्वती, और इंदुमति तथा और लौंडियों को भी कुएँ के अन्दर फेंककर बखेड़ा तै किया और अन्त में रामदास स्वयं जिस तरह कुएँ के अन्दर जाकर खुद भी उसमें फँस गया आदि-आदि रत्ती-रत्ती हाल बयान किया, जिसे सुन कर प्रभाकर सिंह हैरान हो गये और ताज्जुब करने लगे।

प्रभाकरसिंह : **(आश्चर्य से)** यह सब हाल आपको कैसे मालूम हुआ?

बाबा : इसके पूछने की कोई जरूरत नहीं, जब हमको तुम पहिचान जाओगे तब स्वयं तुम्हें इसका सबब मालूम हो जाएगा। **(रामदास की तरफ देख के)** क्यों रामदास, जो कुछ हमने कहा वह सब सच है या नहीं?

रामदास : बेशक् आपने जो कुछ कहा सब सच है।

बाबा : **(रामदास से)** अब तो बताओ कि तुम्हारा गुरु भूतनाथ कहाँ है?

रामदास : मुझे नहीं मालूम।

बाबा : **(हँसकर)** अगर तुम्हें मालूम नहीं है तो मुझे जरूर मालूम है! **(प्रभाकर सिंह से)** अच्छा अब हम जाते हैं, जरूरत होगी तो फिर मुलाकात करेंगे। केवल इसीलिए तुम्हारे पास आए थे कि इस रामदास और भूतनाथ की चालबाजी से तुम्हें होशियार कर दें, जिसमें इन लोगों के बहकाने में पड़कर तुम जमना, सरस्वती और इंदुमति के साथ किसी तरह की बेमुरौवती न कर जाओ। मगर अफसोस हमारे पहुँचने के पहिले ही तुमने इन लोगों को धोखे में पड़ कर इंदुमति और साथ ही उसके जमना-सरस्वती का तिरस्कार कर दिया और उन लोगों के साथ ऐसा बर्ताव किया जो तुम्हारे ऐसे बुद्धिमान के योग्य न था।

प्रभाकर सिंह : **(डबडबाई हुई आँखों से और एक लंबी साँस लेकर)** बेशक् मैंने बहुत बुरा धोखा खाया, मेरी किस्मत ने मुझे डुबा दिया और कहीं का न रखा! **(आसमान की तरफ देखकर)** हे सर्वशक्तिमान जगदीश्वर! क्या मैं इसीलिए इस दुनिया में आया था कि तरह-तरह की तकलीफें उठाऊँ? जबसे मैंने होश संभाला तब से आज तक साल-भर सुख से बैठना नसीब न हुआ। किस-किस दुःख को रोऊँ और किस-किस को याद करूँ! हाय, माता-पिता की अवस्था पर ध्यान देता हूँ तो कलेजा मुँह को आता है, अपनी दुर्दशा पर विचार करता हूँ तो दुनिया अँधकारमय दिखाई पड़ती है। तो फिर क्या मैं ऐसा ही बदकिस्मत बनाया गया हूँ? क्या यह मेरे कर्मों का फल है! कदाचित् ऐसा भी हो तो फिर दुनिया में जितने आदमी हैं सभी तो अपने-अपने कर्म का फल भोग रहे हैं। फिर मुझमें और अन्य अभागों में भेद ही किस बात का ठहरा? और जब अपने ही कर्मों का फल भोगना ही ठहरा तो तुम्हारा भरोसा ही करके क्या किया? अगर यह कहो कि इस भरोसे का फल किसी और समय मिलेगा तो यह भी कोई बात न ठहरी, जब मेरे समय पर तुम्हारा भरोसा काम न आया तो खेत सूखे पर वर्षा वाली कहावत सिद्ध हुई।

बाबाजी : **(बात काटकर)** बेटा, घबराओ मत और परमेश्वर का भरोसा मत छोड़ो, वह तुम्हारे सभी दुखों को दूर करेगा। उसकी कृपा के आगे कोई बात कठिन नहीं है। यदि वह दयालु होगा तो तुम्हें तुम्हारे माता-पिता से भी मिला देगा और तुम्हारी स्त्री इंदुमति भी पुनः तुम्हारी सेवा में दिखाई दे जाएगी। बस अब मैं जाता हूँ, ईश्वर तुम्हारा भला करे।

प्रभाकर सिंह : **(बाबाजी को रोककर)** कृपा कर और भी मेरी दो-एक बातों का जवाब देते जाइए।

बाबाजी : पूछो क्या पूछना चाहते हो!

प्रभाकर सिंह :जिस मनुष्य के विषय में यह कहा जा सकता है कि वह पंच तत्व में मिल गया भला उससे पुनः क्योंकर मुलाकात हो सकती है!

बाबाजी : ईश्वर की माया बड़ी प्रबल है, मैं यह नहीं कह सकता कि ऐसा अवश्य ही होगा परन्तु यह जरूर कहूँगा कि ईश्वर पर भरोसा रखने वाले के लिए कोई भी बात असंभव नहीं। अच्छा पूछो और क्या पूछते हो।

प्रभाकर सिंह : मैं यह जानना चाहता हूँ कि आज के बाद मैं आपसे मिलना चाहूँ तो क्योंकर मिल सकता हूँ?

बाबाजी : तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे नहीं मिल सकते।

प्रभाकर सिंह : आपका परिचय जान सकता हूँ?

बाबाजी : नहीं।

इतना कहकर बाबाजी वहाँ से रवाना हो गये और देखते-देखते प्रभाकर सिंह की नजरों से गायब हो गये।

बाबाजी के चले जाने के बाद कुछ देर तक प्रभाकर सिंह खड़े कुछ सोचते रहे, इसके बाद क्रोध भरी आँखों से रामदास की तरफ देखा और कहा, "रामदास, यद्यपि लोग कहते हैं कि ऐयारों को मारना न चाहिए बल्कि कैद कर रखना चाहिए परन्तु यह काम ऐयारों का और राजा लोगों का है। मैं न तो ऐयार हूँ और न राजा ही हूँ, इसके अतिरिक्त मेरे पास कोई ऐसी जगह भी नहीं है जहाँ तुझे कैद करे रखूँ अतएव मैं तुझ पर किसी तरह का रहम नहीं कर सकता। **(रामदास का खंजर उसके आगे फेंक कर)** ले अपना खंजर उठा ले और मेरा मुकाबला कर क्योंकि मैं उस आदमी पर वार करना पसन्द नहीं करता जिसके हाथ में किसी तरह का हर्बा नहीं है, साथ ही तूने मुझ पर जो जुल्म किया है मैं किसी तरह भी माफी पाने लायक नहीं?

रामदास : **(खंजर उठाकर)** तो क्या मैं किसी तरह भी माफी पाने लायक नहीं?

प्रभाकर सिंह : नहीं, अगर इंदुमति इस दुनिया से उठ न गई होती तो कदाचित् मैं तेरा अपराध क्षमा कर सकता, मगर इंदुमति का वियोग, जो केवल तेरी ही दुष्टता के कारण हुआ, मैं सह नहीं सकता।

रामदास : अगर तुम्हारी इंदुमति को तुमसे मिला दूँ तो?

प्रभाकर सिंह : अरे दुष्ट! क्या अब भी तू मुझे धोखा दे सकेगा? जिसकी चिता मैं अपनी आँखों से देख चुका हूँ उसके विषय में तू इस तरह की बातें करता है मानों ब्रह्मा तू ही है।

रामदास : नहीं-नहीं, आपने मेरा मतलब नहीं समझा।

प्रभाकर सिंह : तेरा मतलब मैं खूब समझ चुका, अब समझाने की जरूरत नहीं है, बस अब सम्हल जा और अपनी हिफाजत कर।

इतना कहकर प्रभाकर सिंह ने म्यान से तलवार खींच ली और रामदास को ललकारा। रामदास ने जब देखा कि अब वह भाग कर भी अपने को प्रभाकर सिंह के हाथ से नहीं बचा सकता तब उसने खंजर सम्हाल कर प्रभाकर सिंह का मुकाबला किया। प्रभाकर सिंह ऐसे बहादुर आदमी से मुकाबला करना रामदास का काम न था, दो ही चार हाथ के लेने-देने के बाद प्रभाकर सिंह की तलवार से रामदास दो टुकड़े होकर जमीन पर गिर पड़ा और वहाँ की मिट्टी से अपनी तलवार साफ कर के प्रभाकर सिंह पुनः उसी दीवार की तरफ रवाना हुए जिसके अन्दर इंदुमति की सुलगती हुई चिता देख चुके थे।

तरह-तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकर सिंह धीरे-धीरे चलकर उसी चिता के पास पहुँचे जो अभी तक निर्धूम हो जाने पर भी बड़े अँगारों के कारण धधक् रही थी और जिसके बीच-बीच में हड्डियों के छोटे-छोटे टुकड़े दिखाई दे रहे थे।

7

यद्यपि सूर्य भगवान अभी उदय नहीं हुए थे तथापि उनके आने का समय निकट जान अँधकार ने पहिले ही से अपना दखल छोड़ना आरंभ कर दिया था और धीरे-धीरे भाग कर पहाड़ की कंदराओं और गुफाओं में अपने शरीर को सिकोड़ता या समेटता हुआ घुसा चला जा रहा था।

एक छोटे मैदान में जिसे चारों तरफ से ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों ने घेर रखा है हम एक विचित्र तमाशा देख रहे हैं। वह मैदान चार या पाँच बिगहे से ज्यादा न होगा जिसके बीचोंबीच में स्याह पत्थर का पुरले भर ऊँचा बहुत बड़ा और खूबसूरत चबूतरा बना हुआ था, जिसके ऊपर जाने के लिए चारों तरफ सीढ़ियाँ बनी थीं। चबूतरे के ऊपर चढ़ जाने पर देखा कि एक बहुत ही सुन्दर हौज बना हुआ है जिसमें बिल्लौर की तरह साफ-सुथरा जल भरा हुआ था और उतरने के लिए संगमरमर की छोटी-छोटी सीढ़ियाँ बनी हुई थीं।

हौज के चारों कोनों पर चार हंस इस कारीगरी से बनाए और बैठाए हुए थे कि जिन्हें देखकर कोई भी न कह सकेगा कि ये हंस असली नहीं बल्कि नकली हैं। देखने वाला जब तक उन्हें अच्छी तरह टटोल न लेगा तब तक उसके दिल से असली हंस होने का शक न मिटेगा। इसी तरह हौज के अन्दर उतरने वाली सीढ़ियों पर भी मोर और सारस इत्यादि कई जानवर दिखाई दे रहे थे और वे भी उन्हीं हंसों की तरह नकली, किसी धातु के बने हुए थे, मगर देखने में ठीक असली जान पड़ते थे। इनके अतिरिक्त उसी हौज के अन्दर संगमरमर की सीढ़ी पर एक निहायत हसीन और खूबसूरत औरत भी बेहोश पड़ी हुई दिखाई दे रही थी जिनके खुले हुए बाल सुफेद पत्थर की चट्टान पर बिखरे हुए थे बल्कि बालों का कुछ भाग जल की हलकी लहरों के कारण हिलता हुआ बहुत ही भला मालूम होता था। पहिले तो मेरे दिल में आया कि मैं और जानवरों की तरह इस औरत को भी नकली और बनावटी समझूँ मगर उसकी खूबसूरती और नजाकत को देखकर सहम गया। आह, क्या ही खूबसूरत चेहरा, बड़ी-बड़ी मगर इस समय पलकों से ढकी हुई आँखें, चौड़ी पेशानी में सिंदूर की केवल एक बिंदी कैसी अच्छी मालूम होती थी कि हजार रोकने पर भी मुँह से निकल ही पड़ा कि 'यह जरूर स्वर्ग की देवी है।' चाहे उसके हाथों में सिवाय दस-बारह पतली स्याह चूड़ियों के और कुछ भी न हो। किसी अंग में किसी तरह का कोई भी गहना दिखाई देता न हो, परन्तु उसकी खूबसूरती किसी गहने की मुहताज न थी।

मैं खड़ा यही सोच रहा था कि यह औरत असली है या बनावटी और यह इरादा भी हो चुका था कि जिस तरह ऊपर वाले हंस को टटोल कर देख चुका हूँ उसी तरह नीचे की सीढ़ियों पर बैठे हुए जानवरों के साथ-ही-साथ इस औरत को भी टटोल कर देखूँ और निश्चय करूँ कि असली है या नकली कि इतने ही में उस औरत के गर्दन हिलाई और अपना चेहरा जल की तरफ से घुमाकर सीढ़ी की तरफ कर दिया। बस फिर क्या था, मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा, मुझे विश्वास हो गया कि और जानवरों की तरह यह औरत बनावटी नहीं है। फिर मैं सोचने लगा कि इसे किसी तरह जागना चाहिए अस्तु मैंने जोर से कई तालियाँ बजाई मगर इसका असर कुछ भी न हुआ। उस समय मुझे पुनः उसकी सच्चाई पर शक हुआ और मैं यह जाँचने के लिए कि देखूँ इस औरत की साँस चलती है या नहीं उसके पेट की तरफ गौर से देखने लगा जिसके आधे भाग का कपड़ा खिसक जाने के कारण खुला हुआ था, मगर साँस चलने की आहट मालूम न हुई! इतने ही में हवा का एक बहुत बड़ा झपेटा आया, मैंने तो समझा कि इस झपेटे के लगते ही वह जाग जाएगी और उसके बदन का कपड़ा भी जो लापरवाही के साथ हर तरह से ढीला पड़ा हुआ है जरूर खिसक जाएगा और उसका सुन्दर तथा सुडौल बदन मुझे अच्छी तरह देखने का मौका मिलेगा मगर अफसोस, ऐसा न हुआ। न तो उसकी निद्रा ही भंग हुई और न उसके बदन पर से कपड़ा ही खिसका।

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और अंत में मैंने निश्चय कर लिया कि स्वयं हौज के अन्दर उतरकर उस औरत की निद्रा भंग करूँगा, क्योंकि उसकी खूबसूरती और उसके अंग की सुडौली मेरे दिल को बेतरह मसोस रही थी।

मैं दिल कड़ा करके हौज के अन्दर उतरने लगी। एक सीढ़ी उतरा, दूसरी सीढ़ी उतरा, तीसरी सीढ़ी पर पैर रखा ही था कि मैं डर कर चौंक उठा और मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। क्योंकि यकायक वे चारों हंस जो हौज के ऊपर खड़े थे और जिन्हें मैं अच्छी तरह देखभाल चुका था कि वे असली नहीं, बनावटी हैं, अपनी जगह छोड़ और गरदन ऊँची

कर इधर-उधर और बड़ी बेचैनी के साथ मेरी तरफ देखने लगे मानो मेरा हौज के अन्दर उतरना उन्हें बहुत बुरा मालूम हुआ। यह बात सिर्फ दस-बारह सायत तक रही, इसके बाद वे अपने बड़े-बड़े परों को फैलाकर बेतरह मुझ पर टूट पड़े जिसे देख मैं डर गया और अपना दाहिना हाथ **(जिसमें खंजर था)** आगे की तरफ बढ़ाए हुए पीछे हटकर चौथी सीढ़ी पर उतर गया।

हौज के अन्दर चौथी सीढ़ी पर उतर जाना तो मेरे लिए बड़ा ही भयानक हुआ। हौज के अन्दर सीढ़ियों पर जो बहत-से बनावटी जानवर **(परिन्दे)** थे, वे भी ऊपर वाले हंस की तरह अपनी क्रोध वाली अवस्था दिखाते हुए फैलाकर इस तरह मुझ पर झपट पड़े मानो ये सब बात-की-बात में मुझे नोच कर खा जाएँगे। केवल इतना ही नहीं वह औरत भी उठ कर बैठ गई और गरदन ऊँची करके क्रोध-भरी आँखों से मेरी तरफ देखने लगी।

वह दृश्य बड़ा ही भयंकर था, जानवरों की बेतरह झपट पड़ने से मैं कदापि न डरता यदि वह वास्तव में सच्चे होते और मैं उन्हें अपने खंजर से काट सकता परन्तु मैं तो अच्छी तरह जाँच कर समझ चुका था कि वे सब असली नहीं है फिर भी जब उन्होंने हमला किया तब मैंने अपने खंजर से उन्हें रोकना चाहा, परन्तु खंजर ने भी उनके बदन पर कुछ असर न किया मानो उनका बदन फौलाद का बना हुआ हो। ऐसी अवस्था में उन सभों का एक साथ मिलकर हमला करना मुझे जरूर नुकसान पहुँचा सकता था अस्तु आश्चर्य के साथ-ही-साथ भय ने भी मुझ पर अपना असर जमा लिया। इसके अतिरिक्त उस औरत का एक अजीब ढंग से मेरी तरफ देखना और भी घबराहट पैदा करने लगा।

पहिले तो मैंने चाहा कि जिस तरह हो सके इस बावली के बाहर निकल जाऊँ मगर ऐसा न हो सका, लाचार पीछे की तरफ हट मैं और भी दो सीढ़ी नीचे उतर गया मगर वहाँ भी ठहरने की हिम्मत न पड़ी क्योंकि उन जानवरों का हमला और भी तेज हो गया तथा वह औरत भी इतनी जोर से चिल्ला उठी कि मैं घबरा गया तथा और भी कई सीढ़ी नीचे उतरकर उस औरत के पास जा पहुँचा। बस उसी समय औरत ने मेरा पैर पकड़ लिया और एक ऐसा झटका दिया कि मैं जल के अन्दर जा पड़ा और बेहोश हो गया। इसके बाद क्या हुआ इसकी मुझे कुछ भी खबर नहीं है। छोटी-छोटी चार पहाड़ियों के अन्दर एक खुशनुमा बाग है। इसमें सुन्दर-सुन्दर बहुत-सी क्यारियाँ बनी हुई हैं, हर तरफ छोटी-छोटी नहरें जारी हैं और पेड़ों के ऊपर बैठकर बोलने वाली तरह-तरह की चिड़ियों की सुरीली आवाजों से वह सुबह का सुहावना समय और भी मजेदार मालूम हो रहा है।

इस बाग के पूरब तरफ बहुत बड़ी इमारत है जिसमें सैकड़ों आदमियों का खुशी से गुजारा हो सकता है, यह इमारत तिमंजिली है, नीचे के हिस्से में एक बहुत बड़ा दीवानखाना है और दीवानखाने के दोनों तरफ बारहदरियाँ हैं। ऊपर की मंजिलों में छोटे-बड़े बहुत-से खूबसूरत दरवाजे दिखाई दे रहे हैं, उसके अन्दर क्या है सो तो इस समय नहीं कह सकते मगर अंदाज में मालूम होता है कि ऊपर भी कई कमरे, कोठरियाँ, दालान, शहनशीन और बारहदरियाँ जरूर होंगी।

नीचे वाला दीवानाना मामूली नहीं बल्कि शाही ढंग का बना हुआ है। छः पहले चालीस खंभों पर इसकी छत कायम है। खंबे स्याह पत्थर के हैं और उन पर सोने से पच्चीकारी का काम किया हुआ है। बाहर के रुख पर बड़े-बड़े पाँच महराब हैं और उन महरावों पर भी निहायत खूबसूरत पच्चीकारी का काम किया हुआ है। अन्दर की तरफ अर्थात् पिछली दीवार पर भी जहाँ एक जड़ाऊ, सिंहासन रखा है जड़ाऊ तथा मीनाकारी का काम बना हुआ है जिसमें कारीगर ने जंगली सीन और शिकारगाह की तस्वीरों पर कुछ ऐसा मसाला चढ़ाया हुआ है जिससे मालूम होता है कि ये दोनों दीवारें बिल्लौरी शीशे की बनी हुई हैं। सिंहासन पिछली दीवार के साथ मध्य में रखा हुआ है और उस सिंहासन से चार हाथ ऊपर एक खूबसूरत दरीची **(खिड़की)** है जिसमें एक नफीस चिक पड़ी हुई है और उस चिक के अन्दर कदाचित् कोई औरत बैठी हुई है, और आवाज से यही जान पड़ता है कि बेशक् वह औरत ही है। सिंहासन के ऊपर एक खबसूरत और बहादुर नौजवान खड़ा चिक की तरफ गरदन ऊँची करके ऊपर लिखी बातें बयान कर रहा है अर्थात् जो कुछ हम इस बयान में ऊपर लिख आए हैं यह सब इसी नौजवान के ऊपर खिड़की की तरफ मुँह करके ऊपर लिखी बातें बयान कर रहा है अर्थात् जो कुछ हम इस बयान में ऊपर लिख आए हैं यह सब इसी नौजवान ने ऊपर खिड़की की तरफ मुँह करके बयान किया है। जब उस जवान ने यह कहा कि 'इसके बाद क्या हुआ इसकी मुझे कुछ भी खबर नहीं, तब उस चिक के अन्दर से यह बारीक आवाज आई "आखिर तुम यहाँ तक क्योंकर पहुँचे?"

नौजवान : जब मेरी आँखें खुली और मैं होश में आया तो अपने को इसी बाग में एक रविश के ऊपर पड़े हुए पाया। उस समय वहाँ कई औरतें मौजूद थीं जिन्होंने मुझसे तरह-तरह के सवाल किए और इसके बाद मुझे इस दीवानखाने में पहुँचाकर वह सब न-मालूम कहाँ चली गई।

चिक के अन्दर से : अच्छा अब तुम क्या चाहते हो सो बताओ?

नौजवान : पहिले तो मैं यहाँ के मालिक का परिचय लिया चाहता हूँ।

चिक के अन्दर से : समझ लो कि यहाँ की मालिक मैं ही हूँ!

नौजवान : मगर यह मालूम होना चाहिए कि आप कौन हैं?

चिक के अन्दर से : मैं एक स्वतंत्र औरत हूँ, यहाँ की रानी कह कर मुझे संबोधन करते हैं।

नौजवान : आपका कोई मालिक या अफसर भी यहाँ नहीं है?

चिक के अन्दर से : मैं एक राजा की लड़की हूँ, मेरा बाप मौजूद है और अपनी रियासत में है, मुझे उसमें इस तिलिस्म के अन्दर कैद कर रखा है मगर मैं अपने को यहाँ स्वतंत्र समझती हूँ और खुश हूँ, दुःख इतना ही है कि इस तिलिस्म के बाहर मैं नहीं जा सकती।

नौजवान : आपके पिता ने आपको कैद कर रखा है?

चिक के अंदर से : इसलिए कि मैं शादी करना मंजूर नहीं करती और इसमें वह अपनी बेइज्जती समझता है।

नौजवान : क्या आपका और आपके पिता का नाम मैं सुन सकता हूँ?

चिक के अन्दर से : नहीं, पहिले मैं आपका नाम सुनना चाहती हूँ।

नौजवान : मेरा नाम प्रभाकर सिंह है।

चिक के अन्दर से : है, क्या आप सच कहते हैं? मुझे विश्वास नहीं होता!!

प्रभाकरसिंह :बेशक् मैं सच कहता हूँ, झूठ बोलने की मुझे जरूरत ही क्या है?

चिक के अन्दर से : और आपके पिता का नाम क्या है?

प्रभाकरसिंह :दिवाकरसिंह जी।

चिक के अन्दर से : आह, क्या यह संभव है! फिर भी मैं कहती हूँ कि मुझे विश्वास नहीं होता!!

प्रभाकरसिंह :अगर आपको मेरी बातों पर विश्वास नहीं होता तो लाचारी है। मुझे कोई ऐसी तरकीब नहीं सूझती जिससे मैं आपको विश्वास दिला सकूँ।

चिक के अन्दर से : हाँ मुझे एक तरकीब याद आई है।

प्रभाकरसिंह :वह क्या!

चिक के अन्दर से : लड़कपन में गेंद खेलते समय आपको जो चोट लगी थी उसे मैं देखूँगी तो जरूर विश्वास कर लूँगी!

प्रभाकरसिंह :**(आश्चर्य से)** यह बात आपको कैसे मालूम हुई!

चिक के अन्दर से : सो मैं पीछे बताऊँगी।

इतना सुनते ही प्रभाकर सिंह ने अपना कपड़ा उतार दिया और दाहिने मोढ़े के नीचे पीठ पर एक बड़े जख्म का निशान चिक की तरफ दिखाकर कहा, "यही वह निशान है।"

इसके जवाब में चिक का परदा उठ गया और एक बहुत ही हसीन औरत उस खिड़की में बैठी हुई प्रभाकर सिंह को दिखाई दी, उसे देखने के साथ ही प्रभाकर सिंह बदहवास से हो गये और उनके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा।

8

अब हम थोड़ा हाल जमना, सरस्वती और इंदुमति का बयान करते हैं नकली हरदेई अर्थात् रामदास ने जमना, सरस्वती और इंदुमति की तरफ से प्रभाकर सिंह का दिल जिस तरह खट्टा कर दिया था उसे हमारे प्रेमी पाठक अच्छी तरह पढ़ ही चुके हैं, इसके बाद बाबाजी ने जब रामदास का असली भेद खोल कर सच्चा हाल प्रभाकर सिंह को बता दिया तब प्रभाकर सिंह चैतन्य हो गये और समझ गए कि जमना, सरस्वती और इंदुमति वास्तव में निर्दोष हैं और उनके बारे में जो कुछ हमने सोचा-समझा और किया वह सब अनुचित था अस्तु प्रभाकर सिंह को अपनी कार्रवाई पर बड़ा खेद हुआ। यह सब कुछ था परन्तु जमना, सरस्वती और इंदुमति के दिल पर जो गहरी चोट बैठ चुकी थी उसकी तकलीफ किसी तरह कम न हुई और न उन तीनों को इस बात का पता ही लगा कि किसी बाबाजी ने पहुँचकर हमारी तरफ से प्रभाकर सिंह का दिल साफ कर दिया।

अपने शागिर्द की मदद से प्रभाकर सिंह वाली तिलिस्मी किताब पाकर भूतनाथ वहाँ की बहुत-सी बातों से जानकार हो चुका था जो सिर्फ काम चलाने और जरूरी कार्रवाई करने के लिए इन्द्रदेव ने तैयार करके प्रभाकर सिंह को दे दी थी, परन्तु भूतनाथ ऐसे धूर्त और शैतान के लिए वही बहुत थी, उसी की मदद से भूतनाथ ने अपने कई शागिर्दों के साथ उस तिलिस्म के अन्दर पहुँचकर जमना, सरस्वती और इंदुमति को बेतरह सताया और दुःख दिया जिसका हाल हम खुलासे-तौर पर नीचे लिखते हैं।

ग्रहदशा की सताई हुई जमना, सरस्वती और इंदुमति को जब भूतनाथ ने तिलिस्मी कूप में ढकेल दिया तो वहाँ उन्हें एक मदद से वे तिलिस्म के अन्दर किसी कार्यवश स्वतंत्रता के साथ घूम रही थीं। वह मददगार कौन था और उस कुएँ के अन्दर ढकेल देने के बाद उन लोगों की जान क्योंकर बची इसका हाल फिर किसी मौके पर बयान किया जाएगा, इस समय हम वहाँ से उन तीनों का हाल बयान करते हैं जहाँ से तिलिस्म के अन्दर प्रभाकर सिंह ने उन तीनों को देखा था।

जमना, सरस्वती और इंदुमति का जो मददगार था वह बराबर अपने चेहरे पर नकाब डाले रहता था इससे उन तीनों ने उसकी सूरत नहीं देखी थी कि उसका मददगार किस सूरत का और कैसा आदमी है, यही सबब था कि जब भूतनाथ उस तिलिस्म के अन्दर गया तो उसने भी जमना और सरस्वती के मददगार को नहीं पहिचाना, हाँ पहिचानने के लिए उद्योग बराबर करता रहा।

एक दफे जमना ने मददगार से प्रार्थना भी की थी कि अपनी सूरत दिखा दे और अपना परिचय दे, परन्तु नकाबपोश ने उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की थी, हाँ इतना जरूर कह दिया था कि तुम लोग मुझे अपने बाप के बराबर समझो और जब कभी संबोधन करने की जरूरत पड़े तो नारायण के नाम से संबोधन किया करो अस्तु अब हम भी आगे चलकर मौका पड़ने पर उसे नारायण ही के नाम से संबोधन किया करेंगे।

जब मंदिर की जालीदार दीवार के अन्दर से प्रभाकर सिंह ने जमना, सरस्वती और इंदुमति को देखा था और कुछ रूखी-सूखी बातचीत भी की थी उस समय जो आदमी उन तीनों को मारने के लिए आया था और जिसे हम बैताल के नाम से संबोधन कर चुके हैं, वास्तव में भूतनाथ ही था। प्रभाकर सिंह को तो उसे हाथ से उन तीनों की रक्षा करने के लिए वहाँ तक पहुँचने में देर लगी परन्तु नारायण ने बहुत जल्द वहाँ पहुँचकर उस शैतान के हाथ से उन तीनों को बचा लिया। नारायण जानते थे कि वह वासत्व में भूतनाथ है और जमना, सरस्वती तथा इंदुमति को भी शक हो चुका था कि वह भूतनाथ है क्योंकि उससे घंटे ही भर पहिले वह तीनों से मिल चुका था और अपना विचित्र ढंग दिखलाकर अच्छी तरह धमका चुका था। मगर उस समय उसे काम करने का मौका नहीं मिला था। यही सबब था कि उसकी सूरत देखते ही वे तीनों चिल्ला उठीं और विमला **(जमना)** ने आँसू गिराते हुए चिल्लाकर प्रभाकर सिंह से कहा था "बचाइए, आप जल्दी यहाँ आकर हम लोगों की रक्षा कीजिए, यही दुष्ट हम लोगों के खून का प्यासा है!"

इसके बाद जब प्रभाकर सिंह दूसरी पहाड़ी पर चढ़कर ऊपर-ही-ऊपर वहाँ पहुँचे तो देखा कि बैताल अर्थात् भूतनाथ से

एक नकाबपोश मुकाबला कर रहा है। यही नकाबपोश नारायण था। नारायण ने वहाँ पहुँचकर उन तीनों औरतों को भाग जाने का इशारा करके भूतनाथ का मुकाबला किया और बड़ी खूबी के साथ लड़ा। जब प्रभाकर सिंह वहाँ पहुँचे और नारायण के कहे मुताबिक जमना, सरस्वती और इंदुमति के पीछे चले तब पुनः भूतनाथ और नारायण से लड़ाई होने लगी। भूतनाथ का कोई हर्बा नारायण के बदन पर कारगर नहीं होता था बल्कि नारायण के मोढ़े पर बैठकर भूतनाथ की तलवार टूट चुकी थी, अंत में नारायण के हाथ से जख्मी होकर भूतनाथ ने मुकाबले से मुँह फेर लिया। उसे विश्वास हो गया कि अगर थोड़ी दूर तक और मुकाबला करूँगा तो बेशक् मारा जाऊँगा, अस्तु वह धोखा देकर वहाँ से भाग खड़ा हुआ और नारायण ने भी उसका पीछा किया।

नारायण यद्यपि लड़ाई में भूतनाथ से ज्यादा ताकतवर और होशियार था मगर दौड़ने में उनका मुकाबला किसी तरह नहीं कर सकता था इसलिए भूतनाथ को पकड़ न सका और वह भाग कर नारायण की आँखों की ओट हो गया।

प्रभाकर सिंह ने जमना, सरस्वती और इंदुमति का पीछा किया। वे तीनों दीवार के दूसरी तरफ चली गई मगर दरवाजा बंद हो जाने कारण प्रभाकर सिंह उसके अन्दर न जा सके। उसी समय बाहर ही खड़े-खड़े सुना कि सरस्वती से और किसी गैर आदमी से बातचीत हो रही है। गैर आदमी जमना, सरस्वती और इंदुमति को बदकार साबित किया चाहता था और उसकी बातों में प्रभाकर सिंह के दिल की खटाई और भी बढ़ गई थी। मगर वास्तव में मामला दूसरा ही था। वह आदमी जो प्रभाकर सिंह को सुना-सुना कर सरस्वती से बातें कर रहा था असल में भूतनाथ का एक शागिर्द था और उसका मतलब यही था कि अपनी बातों से प्रभाकर सिंह का दिल जमना, सरस्वती और इंदुमति की तरफ से फेर दे, साथ ही इसके उस ऐयार ने यह भी चालाकी की थी कि अपनी असली सूरत में उन औरतों के पास न जाकर उसने एक जमींदार की सूरत बनाई थी और बातचीत करने के बाद बिना किसी तरह के तकलीफ दिए जमना, सरस्वती और इंदुमति के सामने से चला गया। इसके बाद प्रभाकर सिंह स्वयं जमना, सरस्वती और इंदुमति से जाकर मिले और जिस तरह से बातचीत करके इंदु का परित्याग किया आप लोग पढ़ ही चुके हैं, अब हमें इस जगह केवल उन औरतों ही का हाल लिखना है।

जब प्रभाकर सिंह इंदुमति का त्याग कर उन तीनों के सामने से चले गए तब इंदुमति बहुत ही उदास हुई और देर तक बिलख-बिलखकर रोती रही। अंत में उसने जमना से कहा, "बहिन, अब मेरे लिए जिंदगी अपार हो गई, जब पति ने ही मुझे त्याग दिया तब इस पापमय शरीर को लेकर इस दुनिया में रहना और चारों तरफ मारे-मारे फिरना मुझे पसन्द नहीं, अस्तु मैं इस शरीर को इसी जगह त्याग कर बखेड़ा तै करूँगी।"

जमना : नहीं बहिन, तुम इस काम में जल्दी मत करो और इस तरह यकायक हताश भी मत हो जाओ। मालूम होता है कि किसी दुश्मन ने उन्हें भड़का दिया है और इसी से उनका मिजाज बदल गया है। मगर यह बात बहुत दिनों तक कायम नहीं रह सकती,धर्म हमारी सहायता करेगा और एक-न-एक दिन असल भेद खुल जाने से वे अपने किए पर पश्चात्ताप करेंगे।

इंदुमति : मगर बहिन, मैं कब तक उस दिन का इंतजार करूँगी?

जमना : इन बातों का फैसला बहुत जल्द हो जाएगा, हम लोगों को ज्यादे इंतजार न करना पड़ेगा।

इंदुमति : खैर अगर तुम्हारी बात मान ली जाय तो भी उस दुश्मन के हाथ से बचे रहने की क्या तरकीब हो सकती है जो बार-बार हम लोगों का पीछा करके भी शान्त नहीं होता। अगर नारायण की मदद न होती तो वह..

इंदुमति इसके आगे कुछ कहने ही को थी कि उसके सामने से अपने मददगार नारायण को आते देखा। इस समय नारायण की पीठ पर एक गठरी थी जिसमें कोई आदमी बँधा था।

नारायण तेजी के साथ कदम बढ़ाता हुआ जमना, सरस्वती और इंदुमति के पास आया। गठरी जमीन पर रख कर तथा अपना परिचय देकर इंदुमति से बोला, "इंदु, मुझे मालूम हो गया कि तेरे दुश्मनों ने तुझे, बल्कि जमना-सरस्वती को भी

व्यर्थ बदनाम किया है और तुम लोगों की तरफ से प्रभाकर सिंह का दिल फेर दिया है। यह काम भूतनाथ के खास ऐयार का है जिसने हरदेई की सूरत बनकर तुमको और प्रभाकर सिंह को धोखा दिया। आजकल में जरूर उसकी खबर लूँगा इस समय में तुम्हारे जिस दुश्मन से लड़ रहा था वह वास्तव में ही भूतनाथ था।"

इंदुमति : **(ताज्जुब से बात काटकर)** क्या वह भूतनाथ है? मगर इस तिलिस्म के अन्दर वह क्योंकर आ पहुँचा?

नारायण : हाँ, वह भूतनाथ ही है। इन्द्रदेव ने प्रभाकर सिंह को हाथ की लिखी हुई एक छोटी-सी किताब दी थी, उसी किताब को पढ़कर प्रभाकर सिंह इस तिलिस्म के अन्दर आये थे, भूतनाथ के उसी ऐयार ने जो हरदेई बना हुआ था धोखा देकर वह किताब प्रभाकर सिंह की जेब से निकाली और अपने गुरु भूतनाथ को दे आया। उसी किताब की मदद से भूतनाथ इस तिलिस्म के अन्दर आ पहुँचा है और तुम तीनों को तथा प्रभाकर सिंह को मारने का उद्योग कर रहा है। खैर कोई चिंता नहीं जहाँ तक हो सकेगा मैं तुम लोगों की मदद करूँगा। अफसोस इसी बात का है कि इस समय मैं यहाँ अकेला हूँ मगर भूतनाथ अपने कई ऐयारों को साथ लेकर आया हुआ है और तुम लोगों की मदद करते हुए इस समय मुझे इतनी फुरसत नहीं है कि घर जाकर अपने आदमियों को ले आऊँ या इन्द्रदेव को ही इस मामले की खबर करूँ, अगर चार पहर की भी मोहलत मिल जाय तो मैं इन्द्रदेव को खबर पहुँचा सकता हूँ, वह अगर यहाँ आ जाएगा तो फिर किसी दुश्मन के लिए कुछ न हो सकेगा।

इंदुमति : तो हम लोगों को आप अपने साथ इन्द्रदेव के पास क्यों नहीं ले चलते?

नारायण : हाँ, तुम लोगों को मैं अपने साथ वहाँ ले जा सकता हूँ मगर प्रभाकर सिंह को मदद भी तो करनी है। अगर उन्हें इसी अवस्था में छोड़कर तुम लोगों को साथ लेकर चला जाऊँ तो भूतनाथ का ऐयार उन्हें जरूर मार डालेगा क्योंकि वह अभी तक हरदेई की सूरत में है और प्रभाकर सिंह उस पर विश्वास करते हैं।

जमना: तो उन्हें इस मामले की खबर कर देनी चाहिए।

नारायण : मैं इसी फिक्र में हूँ। तुम्हारे जिस दुश्मन से मैं लड़ रहा था वह अर्थात् भूतनाथ जख्मी होकर मेरे सामने से भाग गया, मैं उसी के पीछे दौड़ा हुआ चला गया था मगर उसे पकड़ न सका क्योंकि बीच में उसका एक शागिर्द पहुँच गया और उसने मेरा मुकाबला किया। अन्त में वह मेरे हाथ से मारा गया, मैं उसी को इस गठरी में बाँधकर उठा लाया हूँ। अब इसी जगह चिता बना कर इसे फूँक दूँगा, इसके बाद तुम लोगों को यहाँ से ले चलूँगा और किसी अच्छे ठिकाने बैठाकर प्रभाकर सिंह के पास जाऊँगा। अब ज्यादे देर तक बातचीत करना मैं मुनासिब नहीं समझता क्योंकि काम बहुत करना है और समय कम है, तुम लोग मेरी मदद करो और जल्दी से लकड़ी बटोर कर चिता बनाओ।

बात-की-बात में चिता तैयार हो गई और नारायण ने उस ऐयार की लाश को चिता पर रखकर आग लगा दी। थोड़ी देर तक इंदुमति खड़ी उस चिता की तरफ देखती और कुछ सोचती रही, इसके बाद नारायण से बोली, "आपके बगल में बटुआ लटक रहा है, इससे मालूम होता है कि आप भी कोई ऐयार हैं, अगर मेरा खयाल ठीक है तो आपके पास लिखने का सामान भी जरूर होगा!"

नारायण : हाँ-हाँ, मेरे पास लिखने का सामान है, क्या तुमको चाहिए?

इंदुमति : जी हाँ, कागज का एक टुकड़ा और कलम-दवात चाहिए।

नारायण ने अपने बटुए में से कागज का टुकड़ा और सयाही से भरी हुई एक सोने की जड़ाऊ कलम निकाल कर इंदु को दी, इंदु ने उस कागज पर कुछ लिखा और अपने आँचल में से कपड़े का टुकड़ा फाड़कर उसमें उसी कागजको बाँध कर एक तरफ फेंक दिया। यही वह चिट्ठी थी जो प्रभाकर सिंह को उस चिता के पास मिली थी।

इंदुमति ने उस पुर्जे में क्या लिखा है सो इस समय इसने किसी से न बताया और न किसी से उसने पूछा है, हाँ कुछ देर

बाद उसने यह भेद कला और विमला पर खोल दिया।

जमना, सरस्वती और इंदु को साथ लिए हुए नारायण वहाँ से रवाना हुए। वे उस तरफ नहीं गए जिस तरफ दीवार थी बल्कि उसके विपरीत दूसरी तरफ रवाना हुए। थोड़ी दूर जाने के बाद उन लोगों को जंगल मिला, वे लोग उस जंगल में चले गये। क्रमशः वह जंगल घना मिलता गया यहाँ तक कि लगभग दो कोस के जाते वे लोग एक ऐसी भयानक जगह में जा पहुँचे जहाँ बारीक-बारीक सैकड़ों पगडंडियाँ थीं और उनमें से अपने मतलब का रास्ता निकाल लेना बड़ा ही कठिन था मगर तीनों औरतों को लिए हुए नारायण अपने रास्ते पर इस तरह चले जाते थे मानो उन्हें सिवाय एक रास्ते या पगडंडी के कोई दूसरी पगडंडी दिखाई देती नहीं थी।

उस भयानक जंगल में थोड़ी दूर चले जाने के बाद उन्हें ढालवीं जमीन मिली और वे लोग पहाड़ी के नीचे उतरने लगे। जंगल पता होता गया और वे लोग क्रमशः मैदान की हवा खाते हुए नीचे की तरफ जाने लगे।

लगभग आधा घंटे और चले जाने के बाद वे लोग एक खूबसूरत मकान के पास पहुँचे और बड़ी ऊँची चारदीवारी से घिरा हुआ था और अन्दर जाने के लिए सिर्फ पूरब तरफ एक बहुत बड़ा लोहे का फाटक था।

वह मकान यद्यपि बाहर से देखने में खूबसूरत और शानदार मालूम होता था मगर उसके अन्दर एक सहन और दस-बारह कमरे तथा कोठरियों के सिवाय और कुछ भी न था। मकान क्या मानो कोई महाराजी धर्मशाला था।

मकान के चारों तरफ बाग था मगर इस समय उसकी अवस्था जंगल की- सी दिखाई दे रही थी। उसके चारों तरफ ऊँची चारदीवारी थी मगर वह भी कई जगह से मरम्मत के लायक हो रही थी।

तीनों औरतों को साथ लिए नारायण उस चारदीवारी के अन्दर घुसे और इधर-उधर देखते हुए उस इमारत के अन्दर चले गये जहाँ एक कमरे के अन्दर जाकर वे जमना से बोले, "देखो जमना, यह बाग के अन्दर जाने का दरवाजा है। इस मकान में जितने कमरे हैं उन सभी को कहीं-न-कहीं जाने का रास्ता समझना चाहिए। मैं तुम लोगों को जिस स्थान में ले जाना चाहता हूँ वहाँ का रास्ता यही है। मैं इस दरवाजे का भेद तुमको दिखा और समझा देना चाहता हूँ जिसमें यहाँ से जाने-आने के लिए तुम किसी की मुहताज न रहो। भूतनाथ जिस किताब को पाकर फूल रहा है और जिसकी मदद से वह इस तिलिस्म के अन्दर चला आया है उस किताब में इस इमारत का हाल कुछ भी नहीं लिखा है इसलिए समझ रखना कि भूतनाथ इसके अन्दर आकर तुम लोगों को सता नहीं सकता। **(सामने की दीवार की तरफ इशारा करके)** देखो दीवार में जो वह अलमारी दिखाई देती है वही यहाँ से जाने का रास्ता है। इसमें एक ही पल्ला है और खेंचने के लिए एक मुट्ठा लगा हुआ है, इसी मुट्ठे को चाभी समझना चाहिए। और देखो उस अलमारी के ऊपर क्या लिखा हुआ है?" इतना कह कर नारायण ठहर गए और जमना का मुँह देखने लगे जो उन हरूफों को बड़े गौर से देख रही थी। इंदुमति आगे बढ़ गई और उसने उन अक्षरों को पढ़कर नारायण को सुनाया। यह लिखा हुआ था

"दक्षिण श्रृषि वसु वाम, पुनरपि चन्द्रादित्य इमि
पुनि इमि गनहुँ सुजान, जौलों वेद न पूरहीं।"

नारायण : ठीक है, यही लिखा हुआ है, अच्छा बताओ इसका मतलब क्या है?

इंदुमति : मेरी समझ में तो कुछ नहीं आया, चाहे शब्दों का अर्थ कुछ निकाल सकूँ मगर यह लिखा क्या है सो आप जानिए।

नारायण : यह इस दरवाजे को खोलने के विषय में लिखा है। इसका मतलब यह है कि इस मुट्ठे को **(जो दरवाजे में लगा हुआ है)** सात दफे दाहिने, आठ दफे बायें, फिर एक दफे दाहिने और बारह दफे बाएँ घुमाओ, इस तरह चार दफे करो तो दरवाजा खुल जाएगा।

जमना: **(कुछ दूर तक उस लेख पर गौर करके)** ठीक है, इस लेख का यही मतलब है, मगर पढ़ने वाला यह कैसे जान सकेगा कि यह लेख इसी मुट्ठे को घुमाने के विषय में लिखा है?

नारायण : यह बात होशियार आदमी अपनी अकल से समझ सकता है, तिलिस्म बनाने वाले बिलकुल साफ-साफ तो लिखेंगे नहीं।

जमना : ठीक है।

नारायण : अच्छा तो अब आगे बढ़ो और अपने हाथ से दरवाजा खोलो।

नारायण की आज्ञानुसार जमना ने ऊपर लिखे ढंग से उस मुट्ठे को घुमाया। दरवाजा खुल गया और नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ दिखाई दीं। सामने एक आला था और उसमें एक छोटा-सा पीतल का सन्दूक रखा हुआ था जिसमें किसी तरह का ताला लगा हुआ न था। नारायण न वह सन्दूक खोल कर सभों को दिखाया कि इसमें रोशनी करने का काफी सामान मौजूद है अर्थात् कई मोमबत्तियाँ और चकमक पत्थर वगैरह उसमें मौजूद हैं।

एक मोमबत्ती जलाई गई और उसी की रोशनी के सहारे दरवाजा बंद करने के बाद सब कोई नीचे उतरे। जिस तरह दरवाजा खुलता था उसी ढंग से बंद भी होता था और यह बात दरवाजे के पिछली तरफ लिखी हुई थी।

कई सीढ़ियाँ नीचे उतर जाने के बाद एक सुरंग मिली। ये चारों आदमी सुरंग के अन्दर चले गये और जब सुरंग खत्म हुई तो सब कोई एक सरसब्ज मैदान में पहुँचे जहाँ दूर तक खुशनुमा पहाड़ी गुलबूटे लगे हुए थे और एक छोटा-सा सुन्दर मकान भी मौजूद था जिसके आगे छोटा-सा झरना बह रहा था और झरने के किनारे बहुत-से केले के दरख्त लगे हुए थे जिनमें कच्चे और पक्के सभी तरह के फल मौजूद थे।

नारायण ने जमना, सरस्वती और इंदुमति से कहा, "अब दो-तीन दिन तक तुम लोग इसी मकान में रहो तब तक मैं जाकर देखता हूँ कि नकली हरदेई और प्रभाकर सिंह में क्योंकर निपटी। नकली हरदेई की तरफ से उन्हें होशियार कर देना बहुत जरूरी है। **(एक छोटी-सी किताब जमना के हाथ में देकर)** लो इस किताब को तुम तीनों अच्छी तरह पढ़ जाओ और जहाँ तक हो सके खूब याद कर लो। इसमें उससे ज्यादे हाल लिखा है जो इन्द्रदेव ने तुम्हें बताया है या उस किताब में खिला हुआ है जो प्रभाकर सिंह के हाथ से निकल कर भूतनाथ के कब्जे में चली गई है।" इतना कहकर नारायण वहाँ से चले गए।

9

जमानिया में आधी रात के समय तिमिस्मी दारोगा[1] अपने मकान में बैठा किसी विषय पर विचार कर रहा है। उसके सामने कई तरह के कागज और चीट्ठियों के लिफाफे फैले हुए हैं, जिनमें से एक चिट्ठी को वह बार-बार उठाकर गौर से देखता और फिर जमीन पर रख कर कुछ सोचने लगता है। दारोगा के बगल में सटकर एक कमसिन खूबसूरत और हसीन औरत बैठी हुई है। उसके कपड़े और गहने के ढंग तथा भाव से मालूम होता है कि वह बाबाजी **(दारोगा)** की स्त्री या गृहस्थ औरत नहीं है बल्कि कोई वेश्या है जो कि तिलिस्मी दारोगा अर्थात् बाबाजी से कोई घना संबंध रखती है।

एक चिट्ठी पर कुछ देर तक विचार करने के बाद दारोगा ने उस औरत की तरफ देखा और कहा "बीबी मनोरमा, वास्तव में यह चिट्ठी गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई है। यह चिट्ठी को देखकर तुमने मुझ पर बड़ा अहसान किया, अब वह जरूर मेरे कब्जे में आ जाएगा। मैं उसे अपना साथी बनाने के लिए बहुत दिनों से उद्योग कर रहा हूँ पर वह मेरे कब्जे में नहीं आता था, मगर अब उसे भागने की जगह न रहेगी।

मनोरमा : **(मुसकुराती हुई)** ठीक है, मगर मैं अफसोस के साथ कहती हूँ कि इस चिट्ठी को जो गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई है बल्कि उसकी लिखी हुई और चीट्ठियों को भी जो आपके सामने पड़ी हुई हैं और जिन्हें मैं जबर्दस्ती नागर से ले आई हूँ आज ही वापस ले जाऊँगी क्योंकि नागर से तुरन्त ही वापस कर देने का वादा करके ये चीट्ठियाँ आपको दिखाने के लिए मैं ले आई थी।

दारोगा : **(कुछ उदास चेहरा बना के)** ऐसा करने से मेरा काम नहीं चलेगा।

मनोरमा : चाहेजोकुछ हो,आपनेभी तोतुरंत वापसकर देनेकावादाकिया था।

दारोगा : ठीक है, मगर अब जो मैं देखता हूँ तो इन चिट्ठियों की बदौलत मेरा बहुत काम निकलता दिखाई देता है।

मनोरमा : तो क्या आप चाहते हैं कि मैं नागर से झूठी बनूँ और वह मुझे दग़ाबाज कह के दुश्मनी की निगाह से देखे जिसे मैं अपनी बहिन से भी ज्यादा बढ़ कर मानती हूँ।

दारोगा : नहीं-नहीं, ऐसा क्यों होने लगा, जब तुम उसे बहिन से बढ़कर मानती हो और वह भी तुम्हें ऐसा ही मानती है तो क्या वह दो-तीन चीट्ठियाँ तुम्हारी खुशी के लिए नहीं दे सकती और तुम मेरी खुशी के लिए उन्हें मेरे पास नहीं छोड़ सकतीं?

मनोरमा : नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। गदाधरसिंह और नागर में बहुत गहरी मुहब्बत का बर्त्ताव है, क्या उसे आप मेरे ही हाथ से खराब कराना चाहते हैं?

दारोगा : नहीं नही, मैं ऐसा नहीं चाहता। अगर तुम और नागर चाहोगी तो गदाधरसिंह को इन चिट्ठियों के बारे में कुछ भी खबर न होने पावेगी और उन दोनों को मुहब्बत का सिलसिला ज्यों-का-त्यों कायम रहेगा।

मनोरमा : क्या खूब! आप भी कैसी भोली-भाली बातें करते हैं! इन्हीं चिट्ठियों को दिखाकर तो आप गदाधरसिंह को अपने कब्जे में किया चाहते हैं और फिर कहते हैं कि इन चिट्ठियों के बारे में गदाधरसिंह को कुछ भी खबर न होगी कि वे आपके कब्जे में आ गई है।

दारोगा : **(शर्मिन्दा होकर)** तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ और किस तरह तुम्हारे लिए जान तक देने को तैयार हूँ

मनोरमा : मैं खूब जानती हूँ और इसीलिए आपकी खातिर इन चिट्ठियों को थोड़ी देर के लिए नागर से माँग लाई हूँ नहीं

तो क्या गदाधरसिंह की शैतानी और उदंडता को नहीं जानती! वह बात-की-बात में बिगड़ खड़ा होगा और मुझको तथा नागर को जहन्नुम में मिला देगा, बल्कि मैं जहाँ तक समझती हूँ इन चिट्ठियों का भेद खुलने से वह आपका दुश्मन हो जाएगा।

दारोगा : नहीं, ऐसा नहीं है। इन चिट्ठियों का भेद खुलने से यद्यपि वह हम लोगों का दुश्मन हो जाएगा मगर वह हम लोगों को तब तक तकलीफ न दे सकेगा जब तक ये चिट्ठियाँ पुनः लौटकर उसके कब्जे में चली जाएँ। मगर ऐसा होना बिलकुल ही असंभव है। इन चिट्ठियों की नकल दिखाकर मैं उसे धमकाऊँगा सही मगर इन असल चिट्ठियों को ऐसी जगह रखूँगा कि उसके देवता को भी पता न लगने पावेगा।

मनोरमा : यह सब आपका खयाल है। आपने सुना नहीं कि जब बिल्ली मजबूर होती है तब कुत्ते के ऊपर हमला करती है! न-मालूम नागर के ऊपर गदाधरसिंह को कितना भरोसा है कि ये सब खबरें गदाधरसिंह ने नागर को लिखीं, नहीं तो भूतनाथ ऐसे होशियार आदमी को ऐसी भूल न करनी चाहिए थी। इन चिट्ठियों को पढ़ करके एक अदना आदमी भी समझ सकता है कि दयाराम का घातक गदाधरसिंह ही है और वही अब उनकी जमना, सरस्वती नाम की दोनों स्त्रियों को मारना चाहता है। क्या ऐसी चिट्ठी का प्रकट हो जाना गदाधरसिंह के लिए कोई साधारण बात है? और ऐसा होने पर क्या वह नागर को जीता छोड़ देगा? कदापि नहीं। इसके अतिरिक्त अभी तो चिट्ठियों का सिलसिला जारी ही है और वह जमना तथा सरस्वती को मारने के लिए तिलिस्म के अन्दर घुसा ही है, आगे चलकर देखिए कि कैसी-कैसी चिट्ठियाँ आती हैं और उनमें क्या-क्या खबरें वह लिखता है। सिर्फ इन्हीं दो-चार चिट्ठियों पर अभी आप क्यों इतना फूल रहे हैं?

दारोगा इसका जवाब कुछ दिया चाहता था कि दरवाजे की तरफ से घंटी बजने की आवाज आई। उसके जवाब में दारोगा ने भी एक घंटी बजाई जो उसके पास पहिले ही से रखी हुई थी। एक लड़का लपकता हुआ दारोगा के सामने आया और बोला, "गदाधरसिंह आए हैं, दरवाजे पर खड़े हैं।"

लड़के की बात सुनकर दारोगा ने मनोरमा की तरफ देखा और कहा, "आया तो है बड़े मौके पर!"

"मौके पर नहीं बल्कि बेमौके! इतना कहकर मनोरमा ने वे चिट्ठियाँ दारोगा के सामने से उठा लीं जो गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई थीं या जिनके बारे में बड़ी देर से बहस हो रही थी, और यह कहकर उठ खड़ी हुई कि 'मैं दूसरे कमरे में जाती हूँ, उसे बुलाइए मगर मेरे यहाँ रहने की उसे खबर न होने पावे।'

10

गदाधरसिंह को लेने के लिए दारोगा खुद दरवाजे तक गया और बड़े आवभगत के साथ अपनी बैठक में ले आया। मामूली बातचीत और कुशल-मंगल पूछने के बाद दोनों में इस तरह की बातचीत होने लगी

दारोगा : मैंने आपके घर आदमी भेजा था मगर वह मुलाकात न होने के कारण सूखा ही लौट आया और उसी की जुबानी मालूम हुआ कि आप कई दिनों से किसी कार्यवश बाहर गए हुए हैं।

गदाधरसिंह : ठीक है, मैं कई दिनों से अपने घर पर नहीं हूँ, मगर आपको आदमी भेजने की जरूरत क्यों पड़ी?

दारोगा : आप जानते हैं कि मैं जब किसी तरद्दुद में पड़ जाता हूँ तब सबसे पहिले आपको याद करता हूँ क्योंकि मेरे दोस्तों में सिवाय आपके कोई भी ऐसा लायक और हिम्मतवर नहीं हैं जो समय पड़ने पर मेरी मदद कर सके।

गदाधरसिंह : कहिए क्या काम है? आपके लिए हर वक्त तैयार रहता हूँ और आपसे भी बहुत उम्मीद रखता हूँ। मैं सच कहता हूँ कि आपकी दोस्ती का मुझे बहुत बड़ा घमंड है और यही सबब है कि मैं इस समय आपके पास आया हूँ क्योंकि इधर महीनों से मैं सख्त मुसीबत में गिरफ्तार हो रहा हूँ, अगर मेरी इस मुसीबत का शीघ्र अंत न होगा तो मुझे इस दुनिया से एकदम अंतर्ध्यान हो जाना पड़ेगा।

दारोगा : आपने तो बड़े ही तरद्दुद की बात सुनाई! कहिए तो सही क्या मामला है?

गदाधरसिंह : नहीं पहिले आप ही कहिए कि मुझे क्यों याद किया था?

दारोगा : अच्छा पहिले मेरी ही राम कहानी सुन लीजिए, आप जानते ही हैं कि शहर के आसपास ही में कोई कमेटी[1] है जिसके स्थान का और सभासदों का कुछ भी पता नहीं लगता।

गदाधर सिंह : हाँ मैं सुन चुका हूँ, **(मुसकराकर)** मगर मेरा तो खयाल है कि आप भी उस कमेटी के मेंम्बर हैं।

दारोगा : हरे-हरे, आप अच्छी दिल्लगी करते हैं, भला जिस राजा की बदौलत मैं इस दर्जे को पहुँच रहा हूँ और इतना सुख भोग रहा हूँ उसी के विपक्ष में हुई किसी कमेटी का मेंबर हो सकता हूँ? आज भी अगर मुझे उस कमेटी का पता लग जाए और सभासदों का नाम मालूम हो जाए तो मैं एक-एक को चुन कर कुत्ते की मौत मारूँ और कलेजा ठंडा करूँ!

गदाधरसिंह : **(मुसकराता हुआ)** कदाचित् ऐसा ही हो, मगर इस विषय पर आप मुझसे बहस न कीजिए, अपना हाल कहिए। मैं उस कमेटी का हाल अच्छी तरह जानता हूँ।

दारोगा : **(जिसका चेहरा गदाधरसिंह की बातों से कुछ फीका पड़ गया था)** आप ही की तरह हमारे महाराज के छोटे भाई शंकरसिंह जी को भी उस कमेटी के विषय में मुझ पर शक पड़ गया है। उनका भी यही कथन है कि मैं उस कमेटी का मेंम्बर हूँ।

गदाधरसिंह : ठीक है, शंकरसिंह जी बड़े ही होशियार और बुद्धिमान आदमी हैं, आपके महाराज की तरह बोदे और बेवकूफ नहीं हैं जिन्हें आप मदारी के अन्दर की तरह जिस तरह चाहते हैं नचाया करते हैं।

दारोगा : बेशक वे बहुत होशियार और तेज आदमी हैं मगर मुझे विश्वास हो गया है कि वे मेरी जड़ खोदने के लिए तैयार हैं। यद्यपि मैं अपने को चालाक और धूर्त लगाता हूँ मगर सच कहता हूँ कि शंकरसिंह जी का मुकाबला किसी तरह नहीं कर सकता। तिलिस्म के विषय में भी जितनी जानकारी उनको है उतनी हमारे महाराज को नहीं है। कुँवर

गोपालसिंह जी को भी वह हद से ज्यादे प्यार करते हैं। अभी थोड़े दिन का जिक्र है कि स्वयं मुझे लाल-लाल आँखें करके धमका चुके हैं और कह चुके हैं कि देख दारोगा, होशियार हो जा, अपने राजा के भरोसे पर भूला न रहियो। मैं बहुत जल्द साबित कर दूँगा कि तू उस कमेटी का मेंबर है और इसके बाद तुझे सूअर के गलीज में रखकर फुँकवा दूँगा। खबरदार, मेरे धमकाने का हाल भाई साहब से कदापि न कहियो नहीं तो दुर्दशा का दिन...'

गदाधरसिंह : इससे मालूम होता है कि आपकी उस गुप्त कमेटी का हाल उन्हें मुझसे ज्यादा मालूम हो चुका है, ऐसी अवस्था में आपको चाहिए कि उन्हें इस दुनिया से उठाकर हमेशा के लिए निश्चिन्त हो जाइए नहीं तो उनका जीते रहना आपके लिए सुखदाई न रहेगा।

दारोगा : **(कुछ देर तक आश्चर्य से भूतनाथ का मुँह देखकर)** क्या यह बात आप हमदर्दी के साथ कह रहे हैं?

गदाधरसिंह : बेशक, आपसे दिल्लगी नहीं करता।

दारोगा : अगर मैं ऐसा करने के लिए तैयार हो जाऊँ तो जरूरत पड़ने पर क्या आप मेरी मदद करेंगे?

गदाधरसिंह : जरूर मदद करूँगा मगर शर्त यह है कि आप अपना कोई भेद मुझसे छिपाया न करें।

दारोगा : मैं तो आपका कोई भेद आपसे नहीं छिपाता और भविष्य के लिए भी कहता हूँ कि न छिपाऊँगा।

गदाधरसिंह : बेशक् आप छिपाते हैं।

दारोगा : नमूने के तौर पर कोई बात कहिए?

गदाधरसिंह : पहिले तो इस कमेटी के विषय में ही देख लीजिए, आज तक आपने इस विषय में मुझसे कुछ कहा?

दारोगा : **(कुछ देर तक सिर नीचा करके और सोच के)** अच्छा मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूँ और कसम खाकर एकरार करता हूँ कि इस कमेटी का भेद और स्थान तुमको बता दूँगा।

गदाधरसिंह : मैं भी कसम खाकर एकरार करता हूँ कि हर एक काम में आपकी मदद तब तक बराबर करता रहूँगा जब तक आप मेरे साथ या मेरे दोस्त इन्द्रदेव के साथ किसी तरह की दगाबाजी न करेंगे।

दारोगा : मैं आपके इस एकरार से बहुत ही प्रसन्न हुआ, मगर आश्चर्य की बात है कि आपने अपने साथ-ही-साथ इन्द्रदेव को शरीक कर लिया! मैं खूब जानता हूँ कि आजकल इन्द्रदेव आपके साथ दोस्ती का बर्त्ताव नहीं करता। यद्यपि वह मेरा गुरुभाई है और मैं भी उसका भरोसा करता हूँ मगर बात तो वाजिब है वह कहने में आती है।

गदाधरसिंह : इन्द्रदेव की बातों को आप नहीं समझ सकते खास करके मेरे संबंध में, यों तो आपने जो कुछ देखा या सुना हो मगर मैं इन्द्रदेव पर भरोसा रखता हूँ। मेरी और उनकी दोस्ती का अंत सिवाय मौत के और कोई नहीं कर सकता।

दारोगा : खैर, इस बहस से कोई मतलब नहीं, आप जानिए और वह जाने, मैं तो पहिले ही कह चुका हूँ कि वह मेरा गुरुभाई है मैं उसका भरोसा रखता हूँ। ऐसी अवस्था में भला मैं उसके साथ क्या दुश्मनी कर सकता हूँ। अच्छा अब आप अपने तरद्दुद का हाल बयान करिए कि आजकल आप किस मुसीबम में फँसे हैं।

गदाधरसिंह : मेरी मुसीबत के बढ़ाने वाले भी आपके शंकरसिंह ही हैं और कुछ-कुछ इन्द्रदेव ने भी चांड़ लगा रखी है, मगर मैं इसके लिए इन्द्रदेव को बदनाम नहीं कर सकता क्योंकि जिनकी वे मदद कर रहे हैं वे उनके खास रिश्तेदार और आपस वाले लोग हैं।

दारोगा : अगर यह बात है तो आपको भी जरूर शंकरसिंह से दुश्मनी हो गई होगी?

गदाधरसिंह : निःसन्देह।

दारोगा : अच्छा खुलासा तो कहिए।

गदाधरसिंह :बात वही पुरानी है दयाराम वाली।

दारोगा : **(आश्चर्य से)** क्या यह बात प्रसिद्ध हो गई कि आप दयाराम के घातक हैं?

गदाधरसिंह : अगर प्रसिद्ध हो नहीं गई तो अब कुछ दिन बाद प्रसिद्ध हो जाने में कुछ सन्देह भी नहीं रहा, क्योंकि दयाराम की दोनों स्त्रियाँ जिन्हें तमाम जमाना मुर्दा समझे हुए था जीती-जागती पाई गई हैं और उन्हें इस बात का विश्वास है कि उनके पति को गदाधरसिंह ने मारा है यद्यपि यह बात बिलकुल निर्मूल है..

दारोगा : **(बात काट कर आश्चर्य से)** क्या वास्तव में दयाराम की दोनों स्त्रियाँ अभी तक जीती हैं? फिर उनके मरने की गप्प किसने और क्यों उड़ाई?

गदाधरसिंह : यह सब तिलिस्म इन्द्रदेव ही के बाँधे हुए हैं और अब उन दोनों की मदद भी इन्द्रदेव ही कुछ-कुछ कर रहे हैं, मगर बीच में शंकरसिंह का कूद पड़ना मेरे लिए बड़ा ही दुखदाई हो रहा है। इन्द्रदेव की मदद तो नाममात्र ही के लिए थी, मगर ये हजरत जी छोड़कर उन दोनों की मदद कर रहे हैं और मुझे जहन्नुम में मिलाने के लिए तैयार हैं। क्या करें, तिलिस्म के अन्दर की बात है नहीं तो मैं दिखा देता कि गदाधरसिंह के साथ दुश्मनी करने का नतीजा कैसा होता है।

दारोगा : यह तो बड़ा ही नाजुक मामला निकला..

इसके बाद कुछ कहता-कहता दारोगा रुक गया क्योंकि उसे यह बात याद आ गई कि मनोरमा इसी जगह दूसरी कोठरी में छिपी हुई हम लोगों की बातें सुन रही है। संभव है कि दारोगा इसके आगे की बातचीत मनोरमा से छिपाना चाहता हो, अस्तु धीरे-से गदाधरसिंह से कुछ कह आँख का इशारा करने के बाद वह उठ खड़ा हुआ और गदाधरसिंह का हाथ पकड़े हुए दूसरे कमरे में चला गया।

11

जमना, सरस्वती और इंदुमति तिलिस्म के अन्दर **(जहाँ नारायण उन्हें रख गये थे)** बैठी हुई आपस में कुछ बातें कर रही हैं। यद्यपि रात आधी से कुछ ज्यादे ढल चुकी है परन्तु चन्द्रमा की किरणों द्वारा फैली चाँदनी के कारण दूर-दूर तक की चीजें बखूबी दिखाई दे रही हैं और पहाड़ी छटा का एक अपूर्व आनन्द मिल रहा है। बातें करती हुई जमना की निगाह उस तरफ जा पड़ी जिधर से झरने का पानी बड़ी सफाई के साथ बहता हुआ जा रहा था और ऐसा मालूम होता था कि तिलिस्मी कारीगरी ने इस पानी के ऊपर भी चाँदी की कलई चढ़ा दी है। किसी आदमी की आहट पाकर जमना चौंकी और बोली, "बहिन, देखो तो सही वह क्या है? मैं तो समझती हूँ कि कोई आदमी है।"

इंदुमति मुझे भी ऐसा ही मालूम होता है।

सरस्वती : यद्यपि किसी आदमी का यहाँ तक आ पहुँचना असंभव है परन्तु मैं यह भी नहीं कह सकती कि यह आदमी नहीं कोई जानवर है।

जमनाः **(जोर देकर)** बेशक् आदमी है!!

इंदुमति : देखो इसी तरफ चला आ रहा है, कुछ उधर आ जाने से अब साफ मालूम होता है कि आदमी है, जरा रुक कर दबकता और आहट लेता हुआ आ रहा है, इससे मालूम होता है कि हमारा दोस्त नहीं बल्कि दुश्मन है। देखो यह मेरी दाहिनी आँख फड़की, ईश्वर ही कुशल करे। (रुककर) बहिन, वह देखो इसके पीछे और भी एक आदमी मालूम पड़ता है।

सरस्वती : (अच्छी तरह देखकर) हाँ ठीक तो है, दूसरा आदमी भी साफ मालूम पड़ता है, आश्चर्य नहीं कि कोई और भी दिखाई दे! बहिन, मुझे भी खुटका होता है और दिल गवाही देता ही है, अब इनके मुकाबले के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

जमना : बेशक् ऐसा ही है, अब इनके मुकाबले के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

इंदुमति : इनसे मुकाबला करना मुनासिब होगा या भाग कर अपने को छिपा लेना? लो अब तो वे लोग बहुत नजदीक आ गये और मालूम होता है कि उन्होंने हम लोगों को देख भी लिया।

जमनाः बेशक् उन लोगों ने हमें देख लिया, चलो हम लोग भाग कर मकान के अन्दर चलें और दरवाजा बंद कर लें, मुकाबला करना ठीक न होगा।

इतना कहकर जमना मकान की तरफ तेजी के साथ चल पड़ी। सरस्वती तथा इंदुमति ने भी उसका साथ दिया।

यह मकान देखने में यद्यपि बहुत छोटा था मगर इसके अन्दर गुंजाइश बहुत ज्यादे थी और बनिस्बत ऊपर से इसका बहुत बड़ा हिस्सा जमीन में अन्दर था। इसके रास्तों का पता लगाना अनजान आदमी के लिए कठिन ही नहीं बल्कि बिलकुल ही असंभव था। दो-चार आदमी तो क्या पचासों आदमी इसके अन्दर छिपकर रह सकते थे जिनका पता सिवाय जानकार के कोई दूसरा नहीं लगा सकता था। इस मकान के अन्दर कैसी-कैसी कोठरियाँ, कैसे-कैसे तहखाने और कैसी-कैसी सुरंगें या रास्ते थे इसे इस तिलिस्म से संबंध रखने वाला भी हर एक आदमी नहीं जान सकता था, परन्तु नारायण ने जो किताब जमना को दी थी उसमें वहाँ का कुल हाल अच्छी तरह लिखा हुआ था।

अब हम यह लिख सकते हैं कि वे दोनों आने वाले कौन थे जिन्हें देखकर जमना, सरस्वती और इंदुमति भागकर घर में चली गई थीं।

ये दोनों भूतनाथ और तिलिस्म दारोगा साहब थे। दारोगा भूतनाथ की मदद पर तैयार हो गया और उसने प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हें तिलिस्म के अन्दर ले चल कर जमना, सरस्वती और इंदुमति को गिरफ्तार करा दूँगा। इसी तरह भूतनाथ ने भी दारोगा से वादा किया था कि महाराज जमानिया के भाई शंकरसिंह के मारने में मैं तुम्हारी मदद करूँगा और यह कार्रवाई इस ढंग से की जाएगी कि किसी को इस बात का गुमान भी न होगा कि शंकरसिंह कब और कहाँ मारे गए या उन्हें किसने मारा इत्यादि। यही सबब था कि ये दोनों इस समय तिलिस्म के अन्दर दिखाई दिए। यहाँ का बहुत कुछ हाल दारोगा को मालूम था मगर शंकरसिंह को यह आशा न थी कि दारोगा उनके साथ यहाँ तक बुरा बर्ताव कर गुजरेगा, अस्तु वे दारोगा की तरफ से बिलकुल ही बेखबर थे।

दारोगा और भूतनाथ दोनों आदमी सूरत बदलने के अतिरिक्त चेहरे पर नकाब भी डाले हुए थे इसलिए उन्हें कोई पहिचान नहीं सकता था।

जिस समय ये तीनों औरतें भाग कर मकान के अन्दर चली गई उसके थोड़ी ही देर बाद भूतनाथ और दारोगा मकान के दरवाजे पर आ पहुँचे। उन्होंने तीनों को भाग कर मकान के अन्दर जाते हुए देख लिया था अस्तु तिलिस्मी ढंग से दरवाजा खोलने के लिए दारोगा साहब ने हाथ बढ़ाया ही था कि पीछे से किसी ने आवाज दी "कौन है?"

दारोगा और भूतनाथ को इस बात का निश्चय नहीं था कि जमना, सरस्वती और इंदुमति तिलिस्म के अन्दर किस ठिकाने पर हैं परन्तु भूतनाथ ने अपने कई शागिर्द इस तिलिस्म के अन्दर पहुँचा दिये थे जो कि नारायण की कार्रवाई पर बराबर ध्यान रखते थे। जब भूतनाथ और दारोगा तिलिस्म के अन्दर आए तब भूतनाथ का एक शागिर्द उन्हें मिला जिसके माथे पर अपना खास निशान देखकर भूतनाथ ने पहिचान लिया और उससे वहाँ का हाल पूछा। उस शागिर्द ने बता दिया कि जमना, सरस्वती और इंदुमति को नारायण ने फलाने मकान में रखा है, उसी के दिए निशान के अंदाजे पर भूतनाथ और दारोगा वहाँ आए थे और उन्होंने जमना, सरस्वती तथा इंदुमति को अपनी आँखों से मकान के अन्दर जाते देख लिया था। जब दारोगा ने मकान का दरवाजा खोलने के लिए हाथ बढ़ाया उसी समय पीछे से आवाज आई, "कौन है?" दारोगा ने अपना हाथ खेंच लिया और पीछे फिर कर देखा। एक आदमी पर निगाह पड़ी जिसने सिर से पैर तक अपने को स्याह लबादे से ढाँक रखा था। भूतनाथ हाथ में खंजर लिए हुए उस आदमी के पास चला गया और डपट कर बोला, "तू कौन है!"

उस आदमी ने भूतनाथ की बात का कुछ भी जवाब न दिया और पीछे की तरफ हटने लगा। भूतनाथ भी उसी के साथ उसकी तरफ आगे बढ़ता गया और उसने कई दफे डपटकर उस आदमी से तरह-तरह के सवाल किए और कटु वचन भी कहे परन्तु भूतनाथ कि किसी बात का भी उसने जवाब न दिया और बराबर पीछे की तरफ हटता चला गया। भूतनाथ भी उसके साथ-ही-साथ आगे बढ़ता गया, यहाँ तक कि एक झाड़ी के पास पहुँचकर वह आदमी रुक गया और उसने अपने दोनों हाथ लबादे के बाहर निकाले जिनमें से एक में ढाल और दूसरे में तलवार थी। यहाँ पर घनी झाड़ी होने के कारण चन्द्रमा की चाँदनी नहीं पहुँचती थी अस्तु अपने लिए उत्तम स्थान समझकर उस आदमी ने जबान खोली और भूतनाथ से कहा, "हाँ। अब तुझको बताना पड़ेगा कि तू कौन है और तिलिस्म के अन्दर क्योंकर आया?" पाठक, थोड़ी देर के लिए हम इस आदमी का नाम "भीम" रख देते हैं। भीम की बात सुनकर पहिले तो भूतनाथ चुप हो गया मगर फिर कुछ सोचकर बोला, "मैं तुम्हारी बात का जवाब क्योंकर दे सकता हूँ जबकि तुमने खुद मेरी बात का कुछ भी जवाब नहीं दिया?"

भीम : यद्यपि मैंने वहाँ पर तुम्हारी बातों का कुछ भी जवाब नहीं दिया परन्तु अब तुम्हारे हर एक बात का जवाब देने के लिए तैयार हूँ मगर शर्त यह है कि तुम ठीक-ठीक ईमानदारी के साथ अपना परिचय दो।

भूतनाथ : बेशक् मैं ईमानदारी के साथ अपना परिचय दूँगा, मेरा नाम रंगनाथ ऐयार है, मैं मिर्जापुर का रहने वाला हूँ।

भीम : **(खिलखिलाकर हँसने के बाद)** वाह-वाह! खूब ईमानदारी के साथ अपना परिचय दिया। रंगनाथ तो आजकल हमारे यहाँ मेहमान है, यह दूसरा रंगनाथ कहाँ से आया?

भूतनाथ : **(कुछ सकपकाना-सा होकर)** नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता अगर कोई आदमी रंगनाथ के नाम का तुम्हारे पास आया है तो बेशक् उसने तुमको धोखा दिया, असल रंगनाथ मैं ही हूँ और मैं प्रभाकरसिंह को इस कैद से छुड़ाने के लिए यहाँ आया हूँ!

भीम : अगर तुम्हारा कहना सच है और रंगनाथ के नाम से किसी दूसरे आदमी ने मेरे यहाँ आकर मुझे धोखा दिया है तो तुम उसे जरूर पहिचान सकते हो, उसकी तस्वीर मेरे पास है। तुम देखो और पहिचानो। उसका कथन है कि भूतनाथ इस तिलिस्म के अन्दर आया है और कई आदमियों को धोखा दिया चाहता है।

भूतनाथ : **(बड़ी चाह के साथ)** मैं जरूर उनकी तस्वीर देखूँगा और पहिचानूँगा।

भीम ने अपनी जेब से निकाल कर एक पीतल की डिबिया भूतनाथ के हाथ में दी और कहा; "देखो हिफाजत से खोलो, इसी के अन्दर उसकी तस्वीर है।"

भूतनाथ ने भीम के हाथ से डिबिया ले ली और दो कदम बढ़कर चन्द्रमा की चाँदनी में वह डिबिया खोलने लगा। डिबिया बड़ी मजबूती के साथ बंद थी और हल्के हाथों से उसका खुलना कठिन था अस्तु गर्दन झुकाकर और दोनों हाथों से जोर लगाकर भूतनाथ ने वह डिबिया खोली। उसके अन्दर बहुत हल्की और गर्द के समान बारीक बुकनी भरी हुई थी जो झटके के साथ डिबिया खुलने के कारण उसमें से उछली और उड़कर भूतनाथ की आँख और नाक में पड़ गई। वह बहुत ही तेज बेहोशी की बुकनी थी जिसने भूतनाथ को बात करने की भी मोहलत न दी, वह तुरन्त ही चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। भीम ने झपटकर अपनी डिबिया सम्हाली और भूतनाथ के हाथ से लेकर अपनी जेब में रख ली, इसके बाद अपने लबादे में भूतनाथ की गठरी बाँधी और उसे पीठ पर लाद कर एक तरफ का रास्ता लिया।

अब उधर का हाल सुनिए। भीम के साथ जाकर भूतनाथ तो बहुत दूर निकल गया मगर दारोगा अपनी जगह से न हिला। उसने मकान का दरवाजा खोला और जमना, सरस्वती तथा इंदुमति को गिरफ्तार करने का उद्योग करने लगा दरवाजा खोलता हुआ वह एक दालान में पहुँचा, जिसके दोनों तरफ दो कोठरियाँ थीं और उन सभी कोठरियों के दरवाजे किस तरह खुलते थे, इसका पता केवल देखने से नहीं लग सकता। किसी खास तरकीब से दारोगा ने बाईं तरफ वाली कोठरी का दरवाजा खोला और हाथ में नंगी तलवार लिए हुए उसके अन्दर घुसा। यह छोटी-सी सुरंग थी जिसमें दस-बारह हाथ चल कर दारोगा एक बारहदरी में पहुँचा जहाँ बिलकुल ही अंधकार था,सिर्फ दो-तीन जगह किसी सूराख की राह से चन्द्रमा की रोशनी पड़ रही थी मगर उससे वहाँ का अँधकार दूर न हो सकता था।

दारोगा को विश्वास था कि जमना, सरस्वती और इंदुमति जरूर इसी दालान में होंगी और उनके हाथ में किसी तरह का कोई हर्बा भी जरूर होगा, इसी खयाल से उसकी हिम्मत न पड़ी कि वह इस अँधकार में आगे की तरफ बढ़े अस्तु वह चुपचाप खड़ा रहकर वहाँ की आहट लेने लगा। कुछ ही देर बाद किसी के धीरे-धीरे बोलने की आवाज उनके कान में आई और उसके बाद मालूम हुआ कि कई आदमी आपस में धीरे-धीरे बात कर रहे हैं। आवाज हल्की और नाजुक थी इसलिए दारोगा समझ गया कि जरूर यह जमना, सरस्वती और इंदुमति हैं। दारोगा ऐयार का छोटा-सा बटुआ अपने कपड़ों के अन्दर छिपाए हुआ था जिसमें से उसने टटोल कर एक छोटी डिबिया निकाली, उस डिबिया में कई तरह के खटके और पुरजे लगे हुए थे, दारोगा ने खटका दबाया जिससे वह डिबिया चमकने लगी और उसकी रोशनी ने वहाँ के अँधकार को अच्छी तरह दूर कर दिया। अब दारोगा ने देख लिया कि उसके सामने दालान में तीन औरतें हाथ में खंजर लिए खड़ी हैं।

जमना, सरस्वती और इंदुमति को दारोगा अच्छी तरह पहिचानता न था मगर सुनी-सुनाई बातों से वह अनुमान जरूर कर सकता था। इस मौके पर तो उसे यह मालूम ही था कि यहाँ पर जमना, सरस्वती और इंदुमति विराज रही हैं और वे तीनों औरतें अपनी असल सूरत में भी थीं इसलिए दारोगा को विश्वास हो गया कि जमना, सरस्वती और इंदुमति ये ही हैं। दारोगा ने उसी जगह खड़े रहकर जमना की तरफ देखा और कहा, "तुम लोग मुझसे व्यर्थ ही डर कर भाग रही हो!

मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ और न तुम्हारे किसी दुश्मन का भेजा हुआ हूँ।''

जमना : फिर तुम कौन हो और हम लोगों का पीछा क्यों कर रहे हो?

दारोगा : मैं इस तिलिस्म का पहरेदार हूँ और प्रभाकर सिंह का भेजा हुआ तुम लोगों के पास आया हूँ। उनका हुक्म है कि तुम लोगों को अपने साथ ले जाकर उनके पास पहुँचा दूँ!

जमना : तुम्हारी बातों को हमें क्योंकर विश्वास हो? क्या उनके हाथ की कोई चिट्ठी भी लाए हो?

दारोगा : हाँ, मैं चिट्ठी लाया हूँ। उन्होंने खुद ही खयाल करके एक चिट्ठी भी अपने हाथ से लिख कर दी है।

जमना : अगर ऐसा है तो लाओ, वह चिट्ठी मुझे दो, मैं पहिले उसे पढ़ लूँ तब तुम्हारी बातों पर विचार करूँ।

दारोगा : हाँ लो मैं चिट्ठी देता हूँ, यह रोशनी जो मेरे हाथ में है ज्यादे देर तक ठहर नहीं सकती इसलिए पहिले मैं दूसरी रोशनी का इंतजार कर लूँ तब चिट्ठी तलाश कर लूँ।

इतना कहकर दारोगा ने वह डिबिया जमीन पर रख दी और उसी की रोशनी में उसने अपना बटुआ खोलकर एक खाकी रंग की मोमबत्ती निकाली और चकमक से आग पैदा करके उससे रोशनी करने के बाद वह डिबिया बंद करके अपने बटुए में रख ली। अब दालान भर में उसी मोमबत्ती की रोशनी फैली हुई थी। वह मोमबत्ती कुछ खास तरकीब और कई दवाईयों के योग से तैयार की गई थी। उसका रंग खाकी था और बलने पर उसमें से बेहोशी पैदा करने वाला बहुत ज्यादा धुआँ निकलता था। दारोगा ने यह सोचकर कि शायद आज की कार्रवाई में इस मोमबत्ती की जरूरत पड़े। पहिले से ही अपने बचाव का बंदोबस्त कर लिया था अर्थात् किसी तरह की दवा खा या सूँघ ली थी मगर जमना, सरस्वती और इंदुमति अपने को इस धुएँ से बचा नहीं सकती थीं और न इस बात का उन्हें गुमान ही हुआ कि बेहिसाब धुआँ पैदा करने वाली इस मोमबत्ती में कोई खास बात है।

दारोगा ने मोमबत्ती बाल कर जमीन पर जमा दी और उसकी रोशनी में प्रभाकर सिंह के हाथ की चिट्ठी खोजने के बहाने से अपना बटुआ टटोलने लगा।

कभी बटुए की तलाशी लेता, कभी अपने जेबों को टटोलता और कभी कमर में देखकर बनावटी ताज्जुब से हाथ पटकता और कहता कि 'न मालूम चिट्ठी कहाँ रख दी है! मेरे जैसा बेवकूफ भी कोई न होगा। भला ऐसी जरूरी चिट्ठी को इस तरह रखना चाहिए कि समय पर जल्दी मिल न सके'!

चिट्ठी की खोज और कपड़ों की तलाशी में दारोगा ने बहुत देर लगा दी और तब तक उस मोमबत्ती का धुआँ तमाम कमरे में फैल गया। बेचारी जमना, सरस्वती और इंदुमति चिट्ठी की चाह में बड़ी उत्कंठा से दारोगा की हरकतों को खड़ी-खड़ी देख रही थीं मगर उन लोगों को यह नहीं मालूम होता था कि इस धुएँ की बदौलत हम लोगों की हालत बदलती चली जा रही है। थोड़ी देर ही में वे तीनों बेचारी औरतें बेहोश होकर जमीन पर लेट गई और अब दारोगा ने बड़ी फतहमंदी और खुशी की निगाह से उन तीनों की तरफ देखा।

12

यह नहीं मालूम होता कि कृष्णपक्ष है या शुक्लपक्ष अथवा रात है या दिन क्योंकि हम जिस समय इस स्थान पर पहुँचते हैं वहाँ चिराग या इसी तरह की किसी रोशनी के सिवाय और किसी सच्चे उजाले या चाँदने का गुजर नहीं हो सकता। हम यह भी नहीं कह सकते कि यह कोई तहखाना है या सुरंग, अँधकारमय कोई कोठरी है या बालाखाना, सिर्फ इतना ही देख रहे हैं कि एक मामूली कोठरी में जिसमें सिवाय एक मद्धिम चिराग के और किसी तरह की रोशनी नहीं है, जमना, सरस्वती और इंदुमति बैठी हुई गर्म-गर्म आँसू गिरा रही है जिसका विशेष पता उन्हीं हिचकियों से लग रहा है। उन तीनों के पैर बँधे हुए हैं और किसी मोटी रस्सी के सहारे वे एक लकड़ी के खंभे के साथ भी बँधी हुई हैं जिसमें पैर से चलना तो असंभव ही है खिसककर भी दो कदम इधर-उधर न जा सकें। उन तीनों के सामने बैठे हुए तिलिस्मी दारोगा पर निगाह पड़ने ही से विश्वास होता है कि इन तीनों पर इतनी सख्ती होने का कारण यही बेईमान दारोगा है।

पहिले क्या-क्या हो चुका है सो हम कुछ नहीं कह सकते परन्तु इस समय हम देखते हैं कि वे तीनों अपनी बेबसी और मजबूरी पर जमीन की तरफ देखती हुई गर्म-गर्म आँसू गिरा रही हैं और इस अवस्था में कभी कोई सर उठा कर दारोगा की तरफ देख भी लेती है।

कुछ देर तक सन्नाटा रहने के बाद जमना ने एक लंबी साँस ली और सर उठा कर दारोगा की तरफ देख धीमी आवाज से कहा "बहुत देर तक सोचने के बाद अब मैं आपको पहिचान गई और जान गई कि आप जमानिया राजा के कर्ता-धर्ता दारोगा साहब हैं।"

दारोगा : बेशक् मैं वही हूँ। इस समय अपने-आप को छिपाना नहीं चाहता इसलिए असली सूरत में तुम लोगों के सामने बैठा हुआ हूँ।

जमनाः ठीक है, तो मैं समझती हूँ कि उस तिलिस्म के अन्दर हम लोगों को बेहोश करके यहाँ ले आने वाले भी आप ही हैं।

दारोगा : बेशक्!

जमनाः आखिर इसका कारण क्या है! हम लोगों ने आपका क्या बिगाड़ा है जो आप हमारे साथ इतनी सख्ती का बर्त्ताव कर रहे हैं?

दारोगा : मेरा तुम लोगों ने कुछ भी नहीं बिगाड़ा मगर मेरे दोस्त भूतनाथ को तुम लोग व्यर्थ सता रही हो इसलिए मुझे मजबूर होकर तुम लोगों के साथ ऐसा बर्त्ताव करना पड़ा।

जमना : **(क्रोध में आकर कुछ तेजी से)** क्या भूतनाथ को हम लोग सता रही हैं! क्या वह हम लोगों को मिट्टी में मिला कर अभी तक बाज नहीं आता और बराबर जख्म लगाए नहीं जा रहा है!!

दारोगा : कदाचित् ऐसा ही हो परन्तु उसका कहना तो सही है कि तुम लोग व्यर्थ ही उसे कलंकित करके दुनिया में रहने के अयोग्य बनाने की चेष्टा कर रही हो।

जमना : आह! बड़े अफसोस की बात है कि आप अपने मुँह से ऐसे शब्द निकाल रहे हैं और अपने को उन बातों से पूरा-पूरा अनजान साबित किया चाहते हैं?

दारोगा : सो क्या? मुझे इन बातों से मतलब?

जमना : अगर कुछ संबंध नहीं है तो हम लोगों को वहाँ से क्यों कैद कर लाए?

दारोगा : केवल अपने दोस्त की मदद कर रहा हूँ।

जमना : और आप इस बात को नहीं जानते कि हमारा पति इसी दुष्ट के हाथ से मारा गया है? और क्या आपकी मंडली में यह बात मशहूर नहीं है?

दारोगा : हाँ दो-चार आदमी ऐसा करते हैं, परन्तु भूतनाथ का कथन है कि इसका कारण तुम ही हो, अर्थात् केवल तुम ही लोगों ने यह बात व्यर्थ मशहूर कर रखी है। मुझे स्वयं इस विषय में कुछ भी नहीं मालूम है।

जमना : **(ताने के ढंग पर)** बहुत सच्चे! अगर यह बात आपको मालूम नहीं है तो भूतनाथ आपका दोस्त भी नहीं है।

दारोगा : भूतनाथ मेरा दोस्त जरूर है और वह मुझसे कोई बात छिपा नहीं रखता! खैर थोड़ी देर के लिए अगर यह भी मान लिया जाय कि तुम्हारा ही कहना ठीक है तो मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुम भूतनाथ को बदनाम करके क्या फायदा उठा सकती हो? भूतनाथ इस समय स्वतंत्र है किसी रियासत का ताबेदार नहीं जो उस पर नालिश कर सकोगी, फिर ऐसी अवस्था में उससे दुश्मनी करके तुम अपना ही नुकसान कर रही हो। इसके अतिरिक्त मैं खूब जानता हूँ कि भूतनाथ तुम्हारे पति का सच्चा और दिली दोस्त था और तुम्हारे पिता भी उसको ऐसा ही मानते थे, ऐसी अवस्था में यह कब संभव है कि स्वयं भूतनाथ अपने ही हाथों से तुम्हारे पति को मारे। ऐसा करके वह एक फायदा उठा सकता था? क्या तुमको विश्वास है कि भूतनाथ ने तुम्हारे पति को मारा? अच्छा तुम बताओ कि ऐसा करके उसने क्या फायदा उठाया?

जमना : हम लोगों ने एक तौर पर इस दुनिया ही को छोड़ा हुआ है और बिलकुल मर्दों की हालत में पहाड़ी खोह और कंदराओं में रहकर जिंदगी के दिन बिता रही हैं। इसलिए आजकल की दुनिया का हाल मालूम नहीं है अस्तु मैं नहीं कह सकती कि उसने मेरे पति को मार कर क्या फायदा उठाया, परन्तु इतना मैं जरूर जानती हूँ कि मेरे पति की मौत भूतनाथ के ही हाथ से हुई है।

दारोगा : यह बात तुमसे किसने कही?

जमना : सो मैं तुमसे नहीं कह सकती।

दारोगा : खैर न कहो तुम्हें अख्तियार है, मगर मैं फिर भी इतना जरूर कहूँगा कि तुम्हारा खयाल गलत है। भूतनाथ ने तुम्हारे पति को कदापि नहीं मारा और कदाचित् धोखे में ऐसा हो गया हो तो धोखे की बात पर सिवाय अफसोस करने के और कुछ भी उचित नहीं है। कई दफे ऐसा होता है कि धोखे में माँ का पैर बच्चे के ऊपर पड़ जाता है, तो क्या इसका बदला बच्चे को माँ से लेना चाहिए? कभी नहीं। तुम खुद जानती हो कि भूतनाथ से, जो वास्तव में गदाधरसिंह है, तुम्हारे पति की कैसी दोस्ती थी।

जमना : बेशक् मैं इस बात को जानती हूँ और यह भी मानती हूँ कि कदाचित् धोखे ही में भूतनाथ से वह काम हो गया हो, परन्तु आप ही बताइए कि क्या इस अधर्म को छिपाने क लिए भूतनाथ को हम लोगों का पीछा करना चाहिए?

दारोगा : हाँ, ये बेशक् उसकी भूल है, इसके लिए मैं उसे ताड़ना दूँगा परन्तु मैं तुम्हें सच्चे दिल और हमदर्दी के साथ राय देता हूँ कि तुम भूतनाथ के साथ दुश्मनी का खयाल छोड़ दो नहीं तो पछताओगी और तुम्हारा सख्त नुकसान होगा क्योंकि तुम भूतनाथ का मुकाबला नहीं कर सकती। तुम अबला और निर्बल ठहरीं और वह होशियार ऐयार। तिस पर उसके दोस्त भी बहुत गहरे लोग हैं।

जमना : मैं जानती हूँ कि उसके और हमारे बीच हाथी और चिऊंटी का-सा फर्क है और आप जैसे समर्थ लोग उसके दोस्त भी हैं, और इस बात को भी मानती हूँ कि मैं उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकती, परन्तु आप ही बताइए कि ऐसी अवस्था में वह हम अबलाओं से डरता ही क्यों है?

दारोगा : सिर्फ बदनामी के खयाल से डरता है, क्योंकि अगर यह झूठा कलंक उस पर लग जाएगा और वह दयाराम का घाती मशहूर हो जाएगा तो फिर वह दुनिया में किसी को मुँह न दिखा सकेगा; और अगर तुम उसे माफ कर दोगी तो वह खुशी से किसी रियासत में रहकर अपनी जिंदगी बिता सकेगा और जन्म-भर तुम्हारा मददगार भी बना रहेगा।

जमना : मुझे उसकी मदद की कोई जरूरत नहीं है और न मेरे दिल का बहुत बड़ा जख्म जो उसके हाथों से पहुँचा है आराम हो सकता है। समझ लीजिए कि अब चूहे और बिल्ली में दोस्ती कायम नहीं हो सकती।

दारोगा : यह समझना तुम्हारी नादानी है। मैं कह चुका हूँ कि ऐसा करने से तुम्हें सख्त तकलीफ पहुँचेगी।

जमना : बेशक् ऐसा ही है, तभी तो मैं कैद करके यहाँ लाई गई हूँ।

दारोगा : तुम खुद ही सोच लो कि यह कैसी बात है, अगर तुम मार ही डाली जाओगी तो फिर दुनिया में इसके लिए उससे बदला लेने वाला कौन रह जाएगा?

जमना : मेरे पीछे उसका पाप उससे बदला लेगा या इस बात के मशहूर हो जाने ही से वह दीन-दुनिया के लायक न रहेगा और यही उस बात का बदला समझा जाएगा। आपने उसकी मदद की है और इसलिए हम लोगों को यहाँ कैद कर लाए हैं तो बेशक् हम लोगों को मार कर अपने कलेजा ठंडा कर लीजिए, हम लोग तो खुद अपने को मुर्दा समझे हुए हैं, मगर इस बात को समझ रखिएगा कि हम लोगों के मारे जाने से उसकी बदनामी का झंडा जो बड़ी मजबूती के साथ गाड़ा जा चुका है गिर न पड़ेगा और उस झंडे के उड़ने वाले तथा उससे बदला लेने वाले कई जबर्दस्त आदमी कायम रह जाएँगे!

दारोगा : यह तुम्हारा खयाल-ही-खयाल है, जिस तरह तुम उसकी केवल इच्छा मात्र से गिरफ्तार कर ली गई हो उसी तरह उसके और दुश्मन भी बात-की-बात में गिरफ्तार हो जाएँगे।

जमना : इस बात को मैं नहीं मान सकती।

दारोगा : नहीं मानोगी तो मैं मना दूँगा। इसका काफी सबूत मेरे पास है।

जमना : हाँ, अगर मेरा दिल भर जाने के लायक कोई सबूत मिल जाएगा तो मैं जरूर मान जाऊँगी।

दारोगा : अच्छा-अच्छा, पहिले मैं तुमको इस बात का सबूत दे लूँगा तब तुमसे बात करूँगा।

इतना कहकर दारोगा अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और उस जगह गया जहाँ खंभे के साथ ये तीनों औरतें बँधी हुई थीं। उस खंभे में से जमना, सरस्वती और इंदुमति को खोला मगर उनकी हथकड़ी तथा बेड़ी नहीं उतारी, हाँ, बेड़ी की जंजीर जरा ढीली कर दी जिसमें वे धीरे-धीरे कुछ दूर तक चल सकें। इसके बाद उन तीनों को लिए सामने की दीवार के पास गया जहाँ एक छोटा-सा दरवाजा था और उसमें मजबूत ताला लगा हुआ था। दारोगा ने कमर में से ताली निकाल कर दरवाजा खोला और उन तीनों के लिए हुए उसके अन्दर घुसा। यह रास्ता सुरंग की तरह था जो कि दस-बारह कदम जाने के बाद खतम हो जाता था अस्तु उसी अँधकारमय रास्ते में उन तीनों को लिए हुए दारोगा चला गया। जब रास्ता खत्म हुआ तब उसने एक खिड़की खोली जो कि जमीन से छाती बराबर ऊँची थी। उस खिड़की के खुलने से उजाला हो गया और तब दारोगा ने उन औरतों को नीचे की तरफ झाँक कर देखने के लिए कहा।

उस समय जमना, सरस्वती और इंदुमति को मालूम हुआ कि वे तीनों जमीन के अन्दर किसी तहखाने में कैद नहीं हैं बल्कि उनका कैदखाना किसी मकान के ऊपरी हिस्से पर है।

खिड़की की राह से नीचे की तरफ झाँककर उन्होंने देखा कि एक छोटा-सा मामूली नजरबाग है जिसके चारों तरफ की दीवारें बहुत ऊँची-ऊँची हैं। उस बाग में एक टूटे पेड़ के साथ हथकड़ी-बेड़ी से मजबूर प्रभाकर सिंह बाँधे हुए हैं। उन्हें

देखते ही इंदुमति का कलेजा काँप गया और जमना तथा सरस्वती के रोंगटे खड़े हो गये। उस समय दारोगा ने जमना की तरफ देखकर कहा, "तुम लोगों ने अच्छी तरह देख लिया कि तुम्हारे प्यारे प्रभाकर सिंह, जो तुम लोगों के बाद भूतनाथ पर कलंक लगा सकते थे तुम लोगों के साथ ही गिरफ्तार कर लिए गए, बताओ अब तुम्हें किस पर भरोसा है?"

जमना : भरोसा तो हमें केवल ईश्वर पर ही है मगर फिर भी इतना जरूर कहूँगी, मेरे मददगार कोई और ही लोग हैं जिनका नाम तुम्हें किसी तरह भी मालूम नहीं हो सकता!

दारोगा : तुम्हारा यह कहना भी व्यर्थ है, मुझसे और भूतनाथ से कुछ भी छिपा नहीं है।

इतना कहकर दारोगा ने खिड़की बंद कर दी और वहाँ पुनः अँधकार हो गया। इसके बाद उन तीनों को लिए हुए उसी पहिले स्थान पर चला आया और उसी खंभे के साथ पुनः तीनों को बाँधकर पैर की जंजीर कस दी।

प्रभाकर सिंह को कैद की हालत में देखकर वे तीनों बहुत ही परेशान हुई और उनके दिल में तरह-तरह की बातें पैदा होने लगीं। दारोगा ने पुनः जमना की तरफ देखकर कहा, "मैं फिर कहता हूँ कि भूतनाथ से दुश्मनी रखकर तुम लोग इस दुनिया में सुखी नहीं रह सकतीं।"

जमना : **(ऊँची साँस लेकर)** अब मेरे लिए इस दुनिया में क्या रखा है! किस सुख के लिए मैं जीवन की लालसा कर सकती हूँ, दुनिया में अगर लालसा है तो केवल इस बात की कि भूतनाथ से बदला लूँ।

दारोगा : सो हो नहीं सकता और न भूतनाथ ने वास्तव में तुम्हारा कुछ बिगाड़ा ही है। तुम खुद सोच लो और समझ लो, मैं सच कहता हूँ कि भूतनाथ अब भी तुम्हारी खिदमत करने के लिए हाजिर है। अगर तुम उसे अपना ताबेदार मान लोगी तो तीन दिनों में वह उद्योग करके तुम्हारे पति के घातक को भी खोज निकालेगा, नहीं तो अब तुम लोग उसके पंजे में आ ही चुकी हो। तुम लोग मुफ्त में अपनी जान दोगी, और अपने साथ बेकसूर इंदुमति और प्रभाकर सिंह को भी बर्बाद करोगी क्योंकि इन दोनों की जान का संबंध भी तुम्हारी जान के साथ है। मैं तुमको दो घंटे की मोहलत देता हूँ तब तक तुम अपने भले-बुरे को अच्छी तरह सोच लो। दो घंटे के बाद जब मैं आऊँगा तो भूतनाथ भी मेरे साथ होगा, उस समय या तो तुम लोग भूतनाथ को अपना सच्चा दोस्त समझकर उसके निर्दोष होने का एक पत्र उसे लिख दोगी और या फिर दूसरी अवस्था में तुम तीनों ठंडे-ठंडे दूसरी दुनिया की तरफ रवाना हो जाओगी और प्रभाकर सिंह भी तुम तीनों के साथ-ही-साथ खबरदारी के लिए वहाँ रवाना कर दिये जाएँगे।

इतना कहकर दारोगा वहाँ से रवाना हो गया और जब वह बाहर हो गया तो पुनः उस जहन्नुमी कैदखाने का दरवाजा बंद हो गया और बाहर से भारी जंजीर की आवाज आई।